**ओं नमः परमात्मने , श्री महागणपतये नमः, श्री गुरुभ्यो नमः**

**ह॒रिः॒ ओं**

**1 कृष्ण यजुर्वेदीय तैत्तिरीय संहितायां प्रथमंकाण्डं**

**1.1 प्रथमकाण्डे प्रथम: प्रश्न: दर्शपूर्णमासौ**

**तै॰सं॰ 1.1.1.1**

**इ॒षे त्वो॒,-र्जे त्वा॑, वा॒यवः॑ स्थोपा॒यवः॑ स्थ, दे॒वो वः॑ सवि॒ता प्रार्प॑यतु॒**

**श्रेष्ठ॑तमाय॒ कर्म॑ण॒, आ प्या॑यद्ध्वमघ्निया देवभा॒ग-मूर्ज॑स्वतीः॒**

**पय॑स्वतीः प्र॒जाव॑ती-रनमी॒वा अ॑य॒क्ष्मा मा वः॑ स्ते॒न ई॑शत॒**

**माऽघश॑ꣳसो, रु॒द्रस्य॑ हे॒तिः परि॑ वो वृणक्तु, ध्रु॒वा अ॒स्मिन्**

**गोप॑तौ स्यात ब॒ह्वीर्, यज॑मानस्य प॒शून् पा॑हि ॥ 1**

**(इ॒षे-त्रिच॑त्वारिꣳशत् )(अ1)**

**तै॰सं॰ 1.1.2.1**

**य॒ज्ञस्य॑ घो॒षद॑सि॒, प्रत्यु॑ष्ट॒ꣳ रक्षः॒ प्रत्यु॑ष्टा॒ अरा॑तयः॒, प्रेयम॑गाद्धि॒षणा॑**

**ब॒र्.हिरच्छ॒ मनु॑ना कृ॒ता स्व॒धया॒ वित॑ष्टा॒ त आ व॑हन्ति क॒वयः॑**

**पु॒रस्ता᳚द् दे॒वेभ्यो॒ जुष्ट॑मि॒ह ब॒र्.हिरा॒सदे॑, दे॒वानां᳚ परिषू॒तम॑सि**

**प्रथमकाण्डे - प्रथम: प्रश्न:**

**20**

**व॒र्.षवृ॑द्धमसि॒, देव॑बर्.हि॒र्मा त्वा॒ऽन्वङ् मा ति॒र्यक्, पर्व॑ ते**

**राद्ध्यासमा,-च्छे॒त्ता ते॒ मा रि॑षं॒, देव॑बर्.हिः श॒तव॑ल्.शं॒ ꣲवि रो॑ह,**

**स॒हस्र॑वल्.शा॒ [ ] 2**

**तै॰सं॰ 1.1.2.2**

**वि व॒यꣳ रु॑हेम, पृथि॒व्याः सं॒पृचः॑ पाहि, सुसं॒भृता᳚ त्वा॒**

**संभ॑रा॒म्य,-दि॑त्यै॒ रास्ना॑ऽसी,-न्द्रा॒ण्यै स॒न्नह॑नं, पू॒षा ते᳚ ग्र॒न्थिं**

**ग्र॑थ्नातु॒, स ते॒ माऽऽस्था॒,-दिन्द्र॑स्य त्वा बा॒हुभ्या॒मुद्य॑च्छे॒, बृह॒स्पते᳚**

**र्मू॒र्द्ध्ना ह॑रा,-म्यु॒र्व॑न्तरि॑क्ष॒मन्वि॑हि, देवं ग॒मम॑सि ॥ 3**

**(स॒हस्र॑वल्शा-अ॒ष्टात्रि॑ꣳशच्च) (अ2)**

**तै॰सं॰ 1.1.3.1**

**शुन्ध॑द्ध्वं॒ दैव्या॑य॒ कर्म॑णे देवय॒ज्यायै॑, मात॒रिश्व॑नो घ॒र्मो॑ऽसि॒ द्यौर॑सि**

**पृथि॒व्य॑सि वि॒श्वधा॑या असि पर॒मेण॒ धाम्ना॒ दृꣳह॑स्व॒ मा ह्वा॒र्,-वसू॑नां**

**प॒वित्र॑मसि श॒तधा॑रं॒ ꣲवसू॑नां प॒वित्र॑मसि स॒हस्र॑धारꣳ, हु॒तः स्तो॒को**

**हु॒तो द्र॒फ्सो᳚ ऽग्नये॑ बृह॒ते नाका॑य॒ स्वाहा॒ द्यावा॑-पृथि॒वीभ्या॒ꣳ,**

**प्रथमकाण्डे - प्रथम: प्रश्न:**

**21**

**सा वि॒श्वायुः॒, सा वि॒श्वव्य॑चाः॒, सा वि॒श्वक॑र्मा॒, सं पृ॑च्यद्ध्व-मृतावरी**

**-रू॒र्मिणी॒-र्मधु॑मत्तमा म॒न्द्रा धन॑स्य सा॒तये॒, सोमे॑न॒ ( ) त्वा**

**ऽऽत॑न॒च्मीन्द्रा॑य॒ दधि॒, विष्णो॑ ह॒व्यꣳ र॑क्षस्व ॥ 4**

**(सोमे॑-ना॒ष्टौ च॑ ) (अ3)**

**तै॰सं॰ 1.1.4.1**

**कर्म॑णे वां दे॒वेभ्यः॑ शकेयं॒, ꣲवेषा॑य त्वा॒, प्रत्यु॑ष्ट॒ꣳ रक्षः॒ प्रत्यु॑ष्टा॒**

**अरा॑तयो॒, धूर॑सि॒ धूर्व॒ धूर्व॑न्तं॒ धूर्व॒ तं ꣲयो᳚ऽस्मान् धूर्व॑ति॒ तं धू᳚र्व॒यं**

**ꣲव॒यं धूर्वा॑म॒,-स्त्वं दे॒वाना॑मसि॒ सस्नि॑तमं॒ पप्रि॑तमं॒ जुष्ट॑तमं॒ ꣲवह्नि॑तमं**

**देव॒हूत॑म॒-मह्रु॑तमसि हवि॒र्द्धानं॒, दृꣳह॑स्व॒ मा ह्वा᳚र्, मि॒त्रस्य॑ त्वा॒**

**चक्षु॑षा॒ प्रेक्षे॒ मा भेर्मा सं ꣲवि॑क्था॒ मा त्वा॑ -[ ] 5**

**तै॰सं॰ 1.1.4.2**

**हिꣳसिष,-मु॒रु वाता॑य, दे॒वस्य॑ त्वा सवि॒तुः प्र॑स॒वे᳚ऽश्विनो᳚ र्बा॒हुभ्यां᳚,**

**पू॒ष्णो हस्ता᳚भ्या-म॒ग्नये॒ जुष्टं॒ निर्व॑पाम्य॒ग्नीषोमा᳚भ्या,-मि॒दं दे॒वाना॑,-**

**मि॒दमु॑ नः स॒ह, स्फा॒त्यै त्वा॒ नारा᳚त्यै॒, सुव॑र॒भि वि ख्ये॑षं, ꣲवैश्वान॒रं**

**प्रथमकाण्डे - प्रथम: प्रश्न:**

**22**

**ज्योति॒र्, दृꣳह॑न्तां॒ दुर्या॒ द्यावा॑पृथि॒व्यो,-रु॒र्व॑न्तरि॑क्ष॒ मन्वि॒,-**

**ह्यदि॑त्यास्त्वो॒पस्थे॑ सादया॒म्यग्ने॑ ह॒व्यꣳ र॑क्षस्व ॥ 6**

**(मा त्वा॒-षट्च॑त्वारिꣳशच्च) (अ4)**

**तै॰सं॰ 1.1.5.1**

**दे॒वो वः॑ सवि॒तोत् पु॑ना॒त्वच्छि॑द्रेण प॒वित्रे॑ण॒ वसोः॒ सूर्य॑स्य**

**र॒श्मिभि॒,-रापो॑ देवीरग्रेपुवो अग्रेगु॒वोऽग्र॑ इ॒मं ꣲय॒ज्ञं न॑य॒ताग्रे॑**

**य॒ज्ञप॑तिं धत्तयु॒ष्मानिन्द्रो॑ ऽवृणीत वृत्र॒तूर्ये॑, यू॒यमिन्द्र॑मवृणीद्ध्वं**

**ꣲवृत्र॒तूर्ये॒प्रोक्षि॑ताः स्था॒,-ग्नये॑ वो॒ जुष्टं॒ प्रोक्षा᳚म्य॒ग्नीषोमा᳚भ्या॒ꣳ**

**शुन्धद्॑ध्वं॒ दैव्या॑य॒ कर्म॑णे देवय॒ज्याया॒, अव॑धूत॒ꣳ रक्षोऽव॑धूता॒**

**अरा॑त॒यो,ऽदि॑त्या॒स्त्वग॑सि॒ प्रति॑ त्वा -[ ] 7**

**तै॰सं॰ 1.1.5.2**

**पृथि॒वी वे᳚त्त्व,-धि॒षव॑णमसि वानस्प॒त्यं प्रति॒ त्वा ऽदि॑त्या॒स्त्व,-**

**ग्वे᳚त्त्व॒ग्ने-स्त॒नूर॑सि वा॒चो वि॒सर्ज॑नं दे॒ववी॑तये त्वा गृह्णा॒,-म्यद्रि॑रसि**

**वानस्प॒त्यः स इ॒दं दे॒वेभ्यो॑ ह॒व्यꣳ सु॒शमि॑ शमि॒,-ष्वेष॒मा व॒दोर्ज॒मा**

**व॑द द्यु॒मद्व॑दत व॒यꣳ सङ्॑घा॒तं जे᳚ष्म, व॒र्.षवृ॑द्धमसि॒, प्रति॑ त्वा**

**प्रथमकाण्डे - प्रथम: प्रश्न:**

**23**

**व॒र्.षवृ॑द्धं ꣲवेत्तु॒, परा॑पूत॒ꣳ रक्षः॒ परा॑पूता॒ अरा॑तयो॒, रक्ष॑सां**

**भा॒गो॑ ( ) ऽसि, वा॒युर्वो॒ वि वि॑नक्तु, दे॒वो वः॑ सवि॒ता हिर॑ण्यपाणिः॒**

**प्रति॑ गृह्णातु ॥ 8**

**(त्वा॒ - भा॒ग - एका॑दश च) (अ5)**

**तै॰सं॰ 1.1.6.1**

**अव॑धूत॒ꣳ रक्षोऽव॑धूता॒ अरा॑त॒यो,ऽदि॑त्या॒स्त्वग॑सि॒ प्रति॑ त्वा पृथि॒वी**

**वे᳚त्तु, दि॒वः स्कं॑भ॒निर॑सि॒ प्रति॒ त्वाऽदि॑त्या॒स्त्वग्वे᳚त्तु, धि॒षणा॑ऽसि पर्व॒त्या**

**प्रति॑ त्वा दि॒वः स्कं॑भ॒निर्वे᳚त्तु, धि॒षणा॑ऽसि पार्वते॒यी प्रति॑ त्वा पर्व॒ति**

**र्वे᳚त्तु, दे॒वस्य॑ त्वा सवि॒तुः प्र॑स॒वे᳚-ऽश्विनो᳚-र्बा॒हुभ्यां᳚**

**पू॒ष्णोहस्ता᳚भ्या॒मधि॑ वपामि धा॒न्य॑मसि धिनु॒हि दे॒वान्, प्रा॒णाय॑ त्वा,**

**( ) ऽपा॒नाय॑ त्वा, व्या॒नाय॑ त्वा, दी॒र्घामनु॒ प्रसि॑ति॒मायु॑षे धां, दे॒वो वः॑**

**सवि॒ता हिर॑ण्यपाणिः॒ प्रति॑ गृह्णातु ॥ 9**

**(प्रा॒णाय॑ त्वा॒ - पञ्च॑दश च) (अ6)**

**प्रथमकाण्डे - प्रथम: प्रश्न:**

**24**

**तै॰सं॰ 1.1.7.1**

**धृष्टिर॑सि॒ ब्रह्म॑ य॒च्छा,-पा᳚ग्ने॒ ऽग्निमा॒मादं॑ जहि॒, निष्क्र॒व्याद॑ꣳ से॒धा,**

**ऽऽदे॑व॒यजं॑ ꣲवह॒, निर्द॑ग्ध॒ꣳ रक्षो॒ निर्द॑ग्धा॒ अरा॑तयो, ध्रु॒वम॑सि पृथि॒वीं**

**दृ॒ꣳहाऽऽ\*यु॑र्दृꣳह प्र॒जां दृ॑ꣳह सजा॒तान॒स्मै यज॑मानाय॒ पर्यू॑ह,**

**ध॒र्त्रम॑स्य॒न्तरि॑क्षं दृꣳह प्रा॒णं दृ॑ꣳहापा॒नं दृ॑ꣳह सजा॒तान॒स्मै**

**यज॑मानाय॒ पर्यू॑ह, ध॒रुण॑मसि॒ दिवं॑ दृꣳह॒ चक्षुः॑ -[ ] 10**

**तै॰सं॰ 1.1.7.2**

**दृꣳह॒ श्रोत्रं॑ दृꣳह सजा॒तान॒स्मै यज॑मानाय॒ पर्यू॑ह॒, धर्मा॑सि॒ दिशो॑**

**दृꣳह॒ योनिं॑ दृꣳह प्र॒जां दृ॑ꣳह सजा॒तान॒स्मै यज॑मानाय॒ पर्यू॑ह॒, चितः॑**

**स्थ प्र॒जाम॒स्मै र॒यिम॒स्मै स॑जा॒तान॒स्मै यज॑मानाय॒ पर्यू॑ह॒, भृगू॑णा॒**

**मङ्गि॑रसां॒ तप॑सा तप्यद्ध्वं॒, ꣲयानि॑ घ॒र्मे क॒पाला᳚न्युप-चि॒न्वन्ति॑**

**वे॒धसः॑ ।**

**पू॒ष्णस्तान्यपि॑ व्॒रत इ॑न्द्रवा॒यू वि मु॑ञ्चतां ॥ 11**

**(चक्षु॑ - र॒ष्टाच॑त्वारिꣳशच्च) (अ7)**

**प्रथमकाण्डे - प्रथम: प्रश्न:**

**25**

**तै॰सं॰ 1.1.8.1**

**सं ꣲव॑पामि॒, समापो॑ अ॒द्भिर॑ग्मत॒ समोष॑धयो॒ रसे॑न॒सꣳ रे॒वती॒**

**र्जग॑तीिभ॒ र्मधु॑मती॒ र्मधु॑मतीभिः सृज्यद्ध्व,-म॒द्भ्यः परि॒ प्रजा॑ताः**

**स्थ॒ सम॒द्भिः पृ॑च्यद्ध्वं॒, जन॑यत्यै त्वा॒ सं ꣲयौं᳚य॒,-ग्नये᳚**

**त्वा॒,ऽग्नीषोमा᳚भ्यां, म॒खस्य॒ शिरो॑ऽसि, घ॒र्मो॑ऽसि वि॒श्वायु॑,-रु॒रु**

**प्र॑थस्वो॒रु ते॑ य॒ज्ञप॑तिः प्रथतां॒, त्वचं॑ गृह्णी,-ष्वा॒न्तरि॑त॒ꣳ रक्षो॒ऽन्तरि॑ता॒**

**अरा॑तयो, दे॒वस्त्वा॑ सवि॒ता ( ) श्र॑पयतु॒ वर्.षि॑ष्ठे॒ अधि॒ नाके॒, ऽग्निस्ते॑**

**त॒नुवं॒ माऽति॑ धा॒गग्ने॑ ह॒व्यꣳ र॑क्षस्व,॒ सं ब्रह्म॑णा पृच्य,-स्वैक॒ताय॒**

**स्वाहा᳚, द्वि॒ताय॒ स्वाहा᳚, त्रि॒ताय॒ स्वाहा᳚ ॥ 12**

**(स॒वि॒ता-द्वावि॑ꣳशतिश्च) (अ8)**

**तै॰सं॰ 1.1.9.1**

**आ द॑द॒, इन्द्र॑स्य बा॒हुर॑सि॒ दक्षि॑णः स॒हस्र॑भृष्टिः श॒तते॑जावा॒युर॑सि**

**ति॒ग्मते॑जाः॒, पृथि॑वि देवयज॒-न्योष॑द्ध्यास्ते॒ मूलं॒ मा हि॑ꣳसिष॒,-**

**मप॑हतो॒ ऽररुः॑ पृथि॒व्यै, व्र॒जं ग॑च्छ गो॒स्थानं॒, ꣲवर्.ष॑तु ते॒ द्यौ,र्ब॑धा॒न**

**दे॑व सवितः पर॒मस्यां᳚ परा॒वति॑ श॒तेन॒ पाशै॒र्यो᳚ ऽस्मान् द्वेष्टि॒ यं च॑ व॒यं**

**प्रथमकाण्डे - प्रथम: प्रश्न:**

**26**

**द्वि॒ष्मस्तमतो॒ मा मौ॒,-गप॑हतो॒ऽररुः॑ पृथि॒व्यै**

**दे॑व॒यज॑न्यै, व्र॒जं -[ ] 13**

**तै॰सं॰ 1.1.9.2**

**ग॑च्छ गो॒स्थानं॒, ꣲवर्.ष॑तु ते॒ द्यौ, र्ब॑धा॒न दे॑व सवितः पर॒मस्यां᳚**

**परा॒वति॑ श॒तेन॒ पाशै॒र्यो᳚ऽस्मान् द्वेष्टि॒ यं च॑ व॒यं द्वि॒ष्मस्तमतो॒ मा मौ॒,-**

**गप॑हतो॒ऽररुः॑ पृथि॒व्या अदे॑वयजनो, व्र॒जं ग॑च्छ गो॒स्थानं॒, ꣲवर्.ष॑तु**

**ते॒ द्यौ, र्ब॑धा॒न दे॑व सवितः पर॒मस्यां᳚ परा॒वति॑ श॒तेन॒ पाशै॒र्यो᳚ ऽस्मान्**

**द्वेष्टि॒ यं च॑ व॒यं द्वि॒ष्मस्तमतो॒ मा -[ ] 14**

**तै॰सं॰ 1.1.9.3**

**मौ॑,-ग॒ररु॑स्ते॒ दिवं॒ मा स्का॒न्॒, वस॑वस्त्वा॒ परि॑ गृह्णन्तु गाय॒त्रेण॒**

**छन्द॑सा, रु॒द्रास्त्वा॒ परि॑ गृह्णन्तु॒ त्रैष्टु॑भेन॒ छन्द॑सा, ऽऽदि॒त्यास्त्वा॒ परि॑**

**गृह्णन्तु॒ जाग॑तेन॒ छन्द॑सा, दे॒वस्य॑ सवि॒तुः स॒वे कर्म॑ कृण्वन्ति वे॒धस॑,**

**ऋ॒तम॑,-स्यृत॒सद॑नम,-स्यृत॒श्रीर॑सि॒, धा अ॑सि स्व॒धा अ॑स्यु॒र्वी चासि॒**

**वस्वी॑ चासि पु॒रा क्रू॒रस्य॑ वि॒सृपो॑ विरफ्शिन्, ( ) नुदा॒दाय॑ पृथि॒वीं**

**प्रथमकाण्डे - प्रथम: प्रश्न:**

**27**

**जी॒रदा॑नु॒र्यामैर॑यं च॒न्द्रम॑सि स्व॒धाभि॒स्तां धीरा॑सो**

**अनु॒दृश्य॑ यजन्ते ॥ 15**

**(दे॒व॒यज॑न्यै व्र॒जं - तमतो॒ मा - वि॑रफ्शि॒न् - नेका॑दश च) (अ9)**

**तै॰सं॰ 1.1.10.1**

**प्रत्यु॑ष्ट॒ꣳ रक्षः॒ प्रत्यु॑ष्टा॒ अरा॑तयो॒, ऽग्नेर्व॒स्तेजि॑ष्ठेन॒ तेज॑सा॒ निष्ट॑पामि,**

**गो॒ष्ठं मा निर्मृ॑क्षं ꣲवा॒जिनं॑ त्वा सपत्नसा॒हꣳ सं मा᳚र्ज्मि॒, वाचं॑ प्रा॒णं,**

**चक्षुः॒ श्रोत्रं॑, प्र॒जां ꣲयोनिं॒ मा निर्मृ॑क्षं ꣲवा॒जिनीं᳚ त्वा सपत्नसा॒हीꣳ**

**सं मा᳚र्ज्म्या॒, शासा॑ना सौमन॒सं प्र॒जाꣳ सौभा᳚ग्यं त॒नूं ।**

**अ॒ग्नेरनु॑व्रता भू॒त्वा सं न॑ह्ये सुकृ॒ताय॒ कं ॥**

**सु॒प्र॒जस॑स्त्वा व॒यꣳ सु॒पत्नी॒रुप॑ -[ ] 16**

**तै॰सं॰ 1.1.10.2**

**सेदिम । अग्ने॑ सपत्न॒दंभ॑न॒मद॑ब्धासो॒ अदा᳚भ्यं ॥**

**इ॒मं ꣲवि ष्या॑मि॒ वरु॑णस्य॒ पाशं॒ ꣲयमब॑द्ध्नीत सवि॒ता सु॒केतः॑ ।**

**धा॒तुश्च॒ योनौ॑ सुकृ॒तस्य॑ लो॒के स्यो॒नं मे॑ स॒ह पत्या॑ करोमि ॥**

**समायु॑षा॒ सं प्र॒जया॒ सम॑ग्ने॒ वर्च॑सा॒ पुनः॑ ।**

**प्रथमकाण्डे - प्रथम: प्रश्न:**

**28**

**सं पत्नी॒ पत्या॒ऽहं ग॑च्छे॒ समा॒त्मा त॒नुवा॒ मम॑ ॥**

**म॒ही॒नां पयो॒ ऽस्योष॑धीना॒ꣳ रस॒स्तस्य॒ तेऽक्षी॑यमाणस्य॒ नि -[ ] 17**

**तै॰सं॰ 1.1.10.3**

**व॑पामि, मही॒नां पयो॒ ऽस्योष॑धीना॒ꣳ रसोऽद॑ब्धेन त्वा॒ चक्षु॒षाऽवे᳚क्षे**

**सुप्रजा॒स्त्वाय॒, तेजो॑ऽसि॒, तेजोऽनु॒ प्रे,-ह्य॒ग्निस्ते॒ तेजो॒ मा वि**

**नै॑,-द॒ग्नेर्जि॒ह्वाऽसि॑ सु॒भूर्दे॒वानां॒ धाम्ने॑धाम्ने दे॒वेभ्यो॒ यजु॑षेयजुषे भव,**

**शु॒क्रम॑सि॒, ज्योति॑रसि॒, तेजो॑ऽसि, दे॒वो वः॑ सवि॒तोत् पु॑ना॒त्वच्छि॑द्रेण**

**प॒वित्रे॑ण॒ वसोः॒ सूर्य॑स्य र॒श्मिभिः॑, शु॒क्रं ( ) त्वा॑ शु॒क्रायां॒ धाम्ने॑धाम्ने**

**दे॒वेभ्यो॒ यजु॑षेयजुषे गृह्णामि॒, ज्योति॑स्त्वा॒ ज्योति॑,-ष्य॒र्चिस्त्वा॒ऽर्चिषि॒**

**धाम्ने॑धाम्ने दे॒वेभ्यो॒ यजु॑षेयजुषे गृह्णामि ॥ 18**

**(उप॒ - नि - र॒श्मिभिः॑ शु॒क्रꣳ - षोड॑श च) (अ10)**

**तै॰सं॰ 1.1.11.1**

**कृष्णो᳚ ऽस्याखरे॒ष्ठो᳚ऽग्नये᳚ त्वा॒ स्वाहा॒, वेदि॑रसि ब॒र्॒.हिषे᳚ त्वा॒ स्वाहा॑,**

**ब॒र्.हिर॑सि स्रु॒ग्भ्यस्त्वा॒ स्वाहा॑, दि॒वे त्वा॒, ऽन्तरि॑क्षाय त्वा, पृथि॒व्यै**

**त्वा᳚, स्व॒धा पि॒तृभ्य॒ ऊर्ग्भ॑व बर्.हि॒षद्भ्य॑ ऊ॒र्जा पृ॑थि॒वीं**

**प्रथमकाण्डे - प्रथम: प्रश्न:**

**29**

**ग॑च्छत॒विष्णोः॒ स्तूपो॒ ऽस्यूर्णा᳚म्रदसं त्वा स्तृणामि स्वास॒स्थं दे॒वेभ्यो॑**

**गन्ध॒र्वो॑ऽसि वि॒श्वाव॑सु॒ र्विश्व॑स्मा॒दीष॑तो॒ यज॑मानस्य परि॒धिरि॒ड**

**ई॑डि॒तइन्द्र॑स्य बा॒हुर॑सि॒ -[ ] 19**

**तै॰सं॰ 1.1.11.2**

**दक्षि॑णो॒ यज॑मानस्य परि॒धिरि॒ड ई॑डि॒तो मि॒त्रावरु॑णौ त्वोत्तर॒तः परि॑**

**धत्तां ध्रु॒वेण॒ धर्म॑णा॒ यज॑मानस्य परि॒धिरि॒ड ई॑डि॒तः सूर्य॑स्त्वा**

**पु॒रस्ता᳚त् पातु॒ कस्या᳚श्चिद॒भिश॑स्त्यावी॒तिहो᳚त्रं त्वा कवे द्यु॒मन्त॒ꣳ**

**समि॑धीम॒ह्यग्ने॑ बृ॒हन्त॑मद्ध्व॒रेवि॒शो य॒न्त्रे स्थो॒ वसू॑नाꣳ**

**रु॒द्राणा॑मादि॒त्याना॒ꣳ सद॑सि सीद जु॒हूरु॑प॒भृद् ध्रु॒वाऽसि॑ घृ॒ताची॒**

**नाम्ना᳚ प्रि॒येण॒ नाम्ना᳚ प्रि॒ये सद॑सि ( ) सीदै॒ता अ॑सदन्थ् सुकृ॒तस्य॑**

**लो॒के ता वि॑ष्णो पाहि पा॒हि य॒ज्ञं पा॒हि य॒ज्ञप॑तिंपा॒हि**

**मां ꣲय॑ज्ञ॒नियं᳚ ॥ 20**

**(बा॒हुर॑सि - प्रि॒ये सद॑सि॒ - पञ्च॑दश च) (अ11)**

**प्रथमकाण्डे - प्रथम: प्रश्न:**

**30**

**तै॰सं॰ 1.1.12.1**

**भुव॑नमसि॒ वि प्र॑थ॒स्वाग्ने॒ यष्ट॑रि॒दं नमः॑ ।**

**जुह्वेह्य॒ग्निस्त्वा᳚ ह्वयति देवय॒ज्याया॒ उप॑भृ॒देहि॑ दे॒वस्त्वा॑ सवि॒ता**

**ह्व॑यति देवय॒ज्याया॒ अग्ना॑विष्णू॒ मा वा॒मव॑ क्रमिषं॒ ꣲवि जि॑हाथां॒ मा**

**मा॒ सं ता᳚प्तं ꣲलो॒कं मे॑ लोककृतौ कृणुतं॒ ꣲविष्णोः॒ स्थान॑मसी॒त**

**इन्द्रो॑ अकृणोद् वी॒र्या॑णि समा॒रभ्यो॒र्द्ध्वो अ॑द्ध्व॒रो दि॑वि॒स्पृश॒मह्रु॑तो**

**( ) य॒ज्ञो य॒ज्ञप॑ते॒- रिन्द्रा॑वा॒न्थ् स्वाहा॑ बृ॒हद्भाः पा॒हि मा᳚ऽग्ने॒**

**दुश्च॑रिता॒दा मा॒ सुच॑रिते भज म॒खस्य॒ शिरो॑ऽसि॒ सं ज्योति॑षा॒**

**ज्योति॑रङ्क्तां ॥ 21**

**(अह्रु॑त॒ - एक॑विꣳशतिश्च)(अ12)**

**तै॰सं॰ 1.1.13.1**

**वाज॑स्य मा प्रस॒वेनो᳚-द्ग्रा॒भेणो-द॑ग्रभीत् ।**

**अथा॑ स॒पत्ना॒ꣳ इन्द्रो॑ मे निग्रा॒भेणाध॑राꣳ अकः ॥**

**उ॒द्ग्रा॒भं च॑ निग्रा॒भं च॒ ब्रह्म॑ दे॒वा अ॑वीवृधन्न् ।**

**अथा॑ स॒पत्ना॑निन्द्रा॒ग्नी मे॑ विषू॒चीना॒न् व्य॑स्यतां ॥**

**प्रथमकाण्डे - प्रथम: प्रश्न:**

**31**

**वसु॑भ्यस्त्वा रु॒द्रेभ्य॑स्त्वाऽऽदि॒त्येभ्य॑स्त्वा॒ ऽक्तꣳ रिहा॑णा वि॒यन्तु॒ वयः॑ ॥**

**प्र॒जां ꣲयोनिं॒ मा निर्मृ॑क्ष॒मा प्या॑यन्ता॒माप॒ ओष॑धयो**

**म॒रुतां॒ पृष॑तयः स्थ॒ दिवं॑ -[ ] 22**

**तै॰सं॰ 1.1.13.2**

**गच्छ॒ ततो॑ नो॒ वृष्टि॒मेर॑य ।**

**आ॒यु॒ष्पा अ॑ग्ने॒ऽस्यायु॑र्मे पाहि चक्षु॒ष्पा अ॑ग्नेऽसि॒ चक्षु॑र्मे पाहि**

**ध्रु॒वाऽसि॒यं प॑रि॒धिं प॒र्यध॑त्था॒ अग्ने॑ देव प॒णिभि॑ र्वी॒यमा॑णः ।**

**तं त॑ ए॒तमनु॒ जोषं॑ भरामि॒ नेदे॒ष त्वद॑पचे॒तया॑तैय॒ज्ञस्य॒ पाथ॒**

**उप॒ समि॑तꣳ सᳪस्रा॒वभा॑गाः स्थे॒षा बृ॒हन्तः॑ प्रस्तरे॒ष्ठा**

**ब॑र्.हि॒षद॑श्च-[ ] 23**

**तै॰सं॰ 1.1.13.3**

**दे॒वा इ॒मां ꣲवाच॑म॒भि विश्वे॑ गृ॒णन्त॑ आ॒सद्या॒स्मिन् ब॒र्॒.हिषि॑**

**मादयद्ध्व-म॒ग्ने र्वा॒मप॑न्नगृहस्य॒ सद॑सि सादयामि सुं॒नाय॑ सुंनिनी**

**सुं॒ने मा॑ धत्तं धु॒रि धु॒र्यौ॑ पात॒मग्ने॑ ऽदब्धायो ऽशीततनो पा॒हि मा॒ऽद्य**

**दि॒वः पा॒हि प्रसि॑त्यै पा॒हि दुरि॑ष्ट्यै पा॒हि दु॑रद्म॒न्यै पा॒हि**

**प्रथमकाण्डे - प्रथम: प्रश्न:**

**32**

**दुश्च॑रिता॒दवि॑षं नः पि॒तुं कृ॑णु सु॒षदा॒ योनि॒ᳪ स्वाहा॒ देवा॑ गातुविदो**

**गा॒तुं ꣲवि॒त्त्वा गा॒तु ( ) मि॑त॒ मन॑सस्पत इ॒मं नो॑ देव दे॒वेषु॑ य॒ज्ञᳪ**

**स्वाहा॑ वा॒चि स्वाहा॒ वाते॑ धाः ॥ 24**

**(दिवं॑ - च - वि॒त्त्वा गा॒तुं - त्रयो॑दश च) (अ13)**

**तै॰सं॰ 1.1.14.1**

**उ॒भा वा॑मिन्द्राग्नी आहु॒वद्ध्या॑ उ॒भा राध॑सः स॒ह मा॑द॒यद्ध्यै᳚ ।**

**उ॒भा दा॒तारा॑वि॒षाꣳ र॑यी॒णामु॒भा वाज॑स्य सा॒तये॑ हुवे वां ॥**

**अश्र॑व॒ꣳ हि भू॑रि॒दाव॑त्तरा वां॒ ꣲविजा॑मातुरु॒त वा॑ घा स्या॒लात् ।**

**अथा॒ सोम॑स्य॒ प्रय॑ती यु॒वभ्या॒मिन्द्रा᳚ग्नी॒ स्तोमं॑ जनयामि॒ नव्यं᳚ ॥**

**इन्द्रा᳚ग्नी नव॒तिं पुरो॑ दा॒सप॑त्नीरधूनुतं । सा॒कमेके॑न॒ कर्म॑णा ॥**

**शुचिं॒ नु स्तोमं॒ नव॑जात-म॒द्येन्द्रा᳚ग्नी वृत्रहणा जु॒षेथां᳚ । 25**

**तै॰सं॰ 1.1.14.2**

**उ॒भा हि वा॑ꣳ सु॒हवा॒ जोह॑वीमि॒ ता वाज॑ꣳ स॒द्य उ॑श॒ते धेष्ठा᳚ ॥**

**व॒यमु॑ त्वा पथस्पते॒ रथं॒ न वाज॑सातये । धि॒ये पू॑षन्नयुज्महि ॥**

**प॒थस्प॑थः॒ परि॑पतिं ꣲवच॒स्या कामे॑न कृ॒तो अ॒भ्या॑नड॒र्कं ।**

**प्रथमकाण्डे - प्रथम: प्रश्न:**

**33**

**सनो॑ रासच्छु॒रुध॑श्च॒न्द्राग्रा॒ धियं॑धियꣳ सीषधाति॒ प्र पू॒षा ॥**

**क्षेत्र॑स्य॒ पति॑ना व॒यꣳ हि॒तेने॑व जयामसि ।**

**गामश्वं॑ पोषयि॒त्न्वा स नो॑ -[ ] 26**

**तै॰सं॰ 1.1.14.3**

**मृडाती॒दृशे᳚ ॥**

**क्षेत्र॑स्य पते॒ मधु॑मन्तमू॒र्मिं॑ धे॒नुरि॑व॒ पयो॑ अ॒स्मासु॑ धुक्ष्व ।**

**म॒धु॒श्चुतं॑ घृ॒तमि॑व॒ सुपू॑तमृ॒तस्य॑ नः॒ पत॑यो मृडयन्तु ॥**

**अग्ने॒ नय॑ सु॒पथा॑ रा॒ये अ॒स्मान् विश्वा॑नि देव व॒युना॑नि वि॒द्वान् ।**

**यु॒यो॒द्ध्य॑स्म-ज्जु॑हुरा॒णमेनो॒ भूयि॑ष्ठां ते॒ नम॑ उक्तिं ꣲविधेम ॥**

**आ दे॒वाना॒मपि॒ पन्था॑मगन्म॒ यच्छ॒क्नवा॑म॒ तदनु॒ प्रवो॑ढुं ।**

**अ॒ग्नि र्वि॒द्वान्थ्स य॑जा॒थ् - [ ] 27**

**तै॰सं॰ 1.1.14.4**

**सेदु॒ होता॒ सो अ॑द्ध्व॒रान्थ् स ऋ॒तून् क॑ल्पयाति ॥**

**यद्वाहि॑ष्ठं॒ तद॒ग्नये॑ बृ॒हद॑र्च विभावसो ।**

**महि॑षीव॒ त्वद्र॒यिस्त्वद्वाजा॒ उदी॑रते ॥**

**प्रथमकाण्डे - प्रथम: प्रश्न:**

**34**

**अग्ने॒ त्वं पा॑रया॒ नव्यो॑ अ॒स्मान्थ् स्व॒स्तिभि॒रति॑ दु॒र्गाणि॒ विश्वा᳚ ।**

**पूश्च॑ पृ॒थ्वी ब॑हु॒ला न॑ उ॒र्वी भवा॑ तो॒काय॒ तन॑याय॒ शं ꣲयोः ॥**

**त्वम॑ग्ने व्रत॒पा अ॑सि दे॒व आ ( ) मर्त्ये॒ष्वा । त्वं ꣲय॒ज्ञेष्वीड्यः॑ ॥**

**यद्वो॑ व॒यं प्र॑मि॒नाम॑ व्र॒तानि॑ वि॒दुषां᳚ देवा॒ अवि॑दुष्टरासः ।**

**अ॒ग्निष्टद् विश्व॒मा पृ॑णाति वि॒द्वान् येभि॑ र्दे॒वाꣳ ऋ॒तुभिः॑ क॒ल्पया॑ति ॥ 28**

**(जु॒षेथा॒मा - सा नो॑ - यजा॒ - दा - त्रयो॑विꣳशतिश्च) (अ14)**

**ठय्ग्ल्फ्ग् ऍब्य्श्ग्त् ष्त्ळ्ण् ल्ळ्ग्य्ळ्त्फ्ञ् ठग्छ्ग्प्ल् ब्झ् 1 ळ्ब् 14 अफ्व्श्ग्ग्ध्ग्प्ल् :-**

**( इ॒षे त्वा॑ - य॒ज्ञस्य॒ - शुन्ध॑ध्वं॒ - कर्म॑णे वां - दे॒वो -**

**ऽव॑धूतं॒ - धुष्टिः॒ - सं ꣲव॑पा॒- म्या द॑दे॒ - प्रत्यु॑ष्टं॒ - कृष्णो॑ऽसि॒ -**

**भुव॑नमसि॒ - वाज॑स्यो॒भा वां॒ - चतु॑र्दश ।)**

**ऍब्य्श्ग्त् ष्त्ळ्ण् ल्ळ्ग्य्ळ्त्फ्ञ् ठग्छ्ग्प्ल् ब्झ् 1, 11, 21 दज्य्त्ज्ल् ब्झ् ठग्फ्च्ण्ग्ग्ळ्त्ल् :-**

**(इ॒षे - दृ॑ꣳह॒ - भुव॑न - म॒ष्टावि॑ꣳशतिः ।)**

**ऊत्य्ल्ळ् ग्फ्छ् एग्ल्ळ् ठग्छ्ग्प् ब्झ् ऊत्य्ल्ळ् ठय्ग्ल्फ्ग्प् :-**

**( इ॒षे त्वा॑ - क॒ल्पया॑ति । )**

**प्रथमकाण्डे - प्रथम: प्रश्न:**

**35**

**॥ हरिः॑ ओं ॥**

**कृष्ण यजुर्वेदीय तैत्तिरीय संहितायां प्रथमकाण्डे प्रथमः प्रश्नः**

**समाप्तः**

**------------------------------------**

**प्रथमकाण्डे - द्वितीयः प्रश्न:**

**36**

**ओं नमः परमात्मने**

**, श्री महागणपतये नमः,**

**श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ह॒रिः॒ ओं**

**1.2 प्रथमकाण्डेद्वितीय: प्रश्न:अग्निष्टोमे क्रयः**

**तै॰सं॰ 1.2.1.1**

**आप॑ उन्दन्तु जी॒वसे॑ दीर्घायु॒त्वाय॒ वर्च॑स॒ ओष॑धे॒ त्राय॑स्वैन॒ᳪ स्वधि॑ते॒**

**मैन॑ꣳ हिꣳसी र्देव॒श्रूरे॒तानि॒ प्र व॑पे स्व॒स्त्युत्त॑राण्यशी॒याऽऽपो॑**

**अ॒स्मान् मा॒तरः॑ शुन्धन्तु घृ॒तेन॑ नो घृत॒पुवः॑ पुनन्तु॒ विश्व॑म॒स्मत् प्र**

**व॑हन्तु रि॒प्रमुदा᳚भ्यः॒ शुचि॒रा पू॒त ए॑मि॒ सोम॑स्य त॒नूर॑सि त॒नुवं॑ मे पाहि**

**मही॒नां पयो॑ऽसि वर्चो॒धा अ॑सि॒ वर्चो॒ - [ ] 1**

**तै॰सं॰ 1.2.1.2**

**मयि॑ धेहि वृ॒त्रस्य॑ क॒नीनि॑काऽसि चक्षु॒ष्पा अ॑सि॒ चक्षु॑र्मे पाहि**

**चि॒त्पति॑स्त्वा पुनातु वा॒क्पति॑स्त्वा पुनातु दे॒वस्त्वा॑ सवि॒ता**

**पु॑ना॒त्वच्छि॑द्रेण प॒वित्रे॑ण॒ वसोः॒ सूर्य॑स्य र॒श्मिभि॒स्तस्य॑ ते पवित्रपते**

**प॒वित्रे॑ण॒ यस्मै॒ कं पु॒ने तच्छ॑केय॒मा वो॑ देवास ईमहे॒ सत्य॑धर्माणो**

**अद्ध्व॒रे यद्वो॑ देवास आगु॒रे यज्ञि॑यासो॒ हवा॑मह॒ इन्द्रा᳚ग्नी॒ द्यावा॑**

**प्रथमकाण्डे - द्वितीयः प्रश्न:**

**37**

**पृथिवी॒ आप॑ ओषधी॒ ( ) स्त्वं दी॒क्षाणा॒-मधि॑पतिरसी॒ह**

**मा॒ सन्तं॑ पाहि ॥ 2**

**(वर्च॑ - ओषधीर॒ष्टौ च॑) (अ1)**

**तै॰सं॰ 1.2.2.1**

**आकू᳚त्यै प्र॒युजे॒ऽग्नये॒ स्वाहा॑ मे॒धायै॒ मन॑से॒ऽग्नये॒ स्वाहा॑ दी॒क्षायै॒**

**तप॑से॒ऽग्नये॒ स्वाहा॒ सर॑स्वत्यै पू॒ष्णे᳚ऽग्नये॒ स्वाहाऽऽपो॑ देवीर्बृहती**

**र्विश्वशंभुवो॒ द्यावा॑पृथि॒वी उ॒र्व॑न्तरि॑क्षं॒ बृह॒स्पति॑र्नो ह॒विषा॑ वृधातु॒**

**स्वाहा॒ विश्वे॑ दे॒वस्य॑ ने॒तुर्मर्तो॑ वृणीत स॒ख्यं ꣲविश्वे॑ रा॒य इ॑षुद्ध्यसि**

**द्यु॒म्नं ꣲवृ॑णीत पु॒ष्यसे॒ स्वाह॑र्ख्-सा॒मयोः॒ शिल्पे᳚ स्थ॒स्ते वा॒मा**

**र॑भे॒ ते मा॑ - [ ] 3**

**तै॰सं॰ 1.2.2.2**

**पात॒मास्य य॒ज्ञस्यो॒दृच॑ इ॒मां धिय॒ꣳ शिक्ष॑माणस्य देव॒ क्रतुं॒**

**दक्षं॑ ꣲवरुण॒ सꣳशि॑शाधि॒ ययाऽति॒ विश्वा॑ दुरि॒ता तरे॑म सु॒तर्मा॑ण॒मधि॒**

**नाव॑ꣳ रुहे॒मोर्ग॑स्याङ्गिर॒स्यूर्ण॑म्रदा॒ ऊर्जं॑ मे यच्छ पा॒हि मा॒ मा मा॑**

**प्रथमकाण्डे - द्वितीयः प्ा्रश्न:**

**38**

**हिꣳसी॒-र्विष्णोः॒ शर्मा॑सि॒ शर्म॒ यज॑मानस्य॒ शर्म॑ मे यच्छ॒**

**नक्ष॑त्राणां माऽतीका॒शात् पा॒हीन्द्र॑स्य॒ योनि॑रसि॒ - [ ] 4**

**तै॰सं॰ 1.2.2.3**

**मा मा॑ हिꣳसीः कृ॒ष्यै त्वा॑ सुस॒स्यायै॑ सुपिप्प॒लाभ्य॒-स्त्वौष॑धीभ्यः**

**सूप॒स्था दे॒वो वन॒स्पति॑रू॒र्द्ध्वो मा॑ पा॒ह्योदृचः॒ स्वाहा॑ य॒ज्ञं मन॑सा॒**

**स्वाहा॒ द्यावा॑पृथि॒वीभ्या॒ᳪ स्वाहो॒रो-र॒न्तरि॑क्षा॒थ् स्वाहा॑ य॒ज्ञं**

**ꣲवाता॒दा र॑भे ॥ 5**

**(मा॒ - योनि॑रसि - त्रि॒ꣳशच्च॑) (अ2)**

**तै॰सं॰ 1.2.3.1**

**दैवीं॒ धियं॑ मनामहे सुमृडी॒का-म॒भिष्ट॑ये वर्चो॒धां ꣲय॒ज्ञवा॑हसꣳ सुपा॒रा**

**नो॑ अस॒द् वशे᳚ । ये दे॒वा मनो॑जाता मनो॒युजः॑ सु॒दक्षा॒ दक्ष॑पितार॒स्ते**

**नः॑ पान्तु॒ ते नो॑ऽवन्तु॒ तेभ्यो॒ नम॒स्तेभ्यः॒ स्वाहाऽग्ने॒ त्वꣳ सु जा॑गृहि**

**व॒यꣳ सु म॑न्दिषीमहि गोपा॒य नः॑ स्व॒स्तये᳚ प्र॒बुधे॑ नः॒ पुन॑र्ददः ।**

**त्वम॑ग्ने व्रत॒पा अ॑सि दे॒व आ मर्त्ये॒ष्वा ।**

**त्वं - [ ] 6**

**प्रथमकाण्डे - द्वितीयः प्रश्न:**

**39**

**तै॰सं॰ 1.2.3.2**

**ꣲय॒ज्ञेष्वीड्यः॑ ॥**

**विश्वे॑ दे॒वा अ॒भि मामाऽव॑वृत्रन् पू॒षा स॒न्या सोमो॒ राध॑सा दे॒वः**

**स॑वि॒ता वसो᳚र्वसु॒दा वा॒ रास्वेय॑थ् सो॒मा ऽऽ\*भूयो॑ भर॒ मा पृ॒णन् पू॒र्त्या**

**वि रा॑धि॒ माऽहमायु॑षा च॒न्द्रम॑सि॒ मम॒ भोगा॑य भव॒ वस्त्र॑मसि॒ मम॒**

**भोगा॑य भवो॒स्राऽसि॒ मम॒ भोगा॑य भव॒ हयो॑ऽसि॒ मम॒**

**भोगा॑य भव॒-[ ] 7**

**तै॰सं॰ 1.2.3.3**

**छागो॑ऽसि॒ मम॒ भोगा॑य भव मे॒षो॑ऽसि॒ मम॒ भोगा॑य भव वा॒यवे᳚ त्वा॒**

**वरु॑णाय त्वा॒ निर्.ऋ॑त्यै त्वा रु॒द्राय॑ त्वा॒ देवी॑रापो अपां नपा॒द्य**

**ऊ॒र्मिर्.ह॑वि॒ष्य॑ इन्द्रि॒यावा᳚न्-म॒दिन्त॑म॒स्तं ꣲवो॒ माऽव॑ क्रमिष॒मच्छि॑न्नं॒**

**तन्तुं॑ पृथि॒व्या अनु॑ गेषं भ॒द्राद॒भि श्रेयः॒ प्रेहि॒ बृह॒स्पतिः॑ पुर ए॒ता ते॑**

**अ॒स्त्वथे॒मव॑ स्य॒ ( ) वर॒ आ पृ॑थि॒व्या आ॒रे शत्रू᳚न् कृणुहि॒ सर्व॑वीर॒**

**एदम॑गन्म देव॒यज॑नं पृथि॒व्या विश्वे॑ दे॒वा यदजु॑षन्त॒ पूर्व॑ ऋख्**

**प्रथमकाण्डे - द्वितीयः प्रश्न:**

**40**

**सा॒माभ्यां॒ ꣲयजु॑षा स॒न्तर॑न्तो रा॒यस्पोषे॑ण॒ समि॒षा म॑देम ॥ 8**

**(आ त्वꣳ-हयो॑ऽसि॒ मम॒ भोगा॑य भव-स्य॒-पञ्च॑विꣳशतिश्च) (अ3)**

**तै॰सं॰ 1.2.4.1**

**इ॒यं ते॑ शुक्र त॒नूरि॒दं ꣲवर्च॒स्तया॒ सं भ॑व॒ भ्राजं॑ गच्छ॒ जूर॑सि धृ॒ता**

**मन॑सा॒ जुष्टा॒ विष्ण॑वे॒ तस्या᳚स्ते स॒त्यस॑वसः प्रस॒वे वा॒चो य॒न्त्रम॑शीय॒**

**स्वाहा॑ शु॒क्रम॑स्य॒-मृत॑मसि वैश्वदे॒वꣳ ह॒विः सूर्य॑स्य॒ चक्षु॒राऽरु॑हम॒ग्ने**

**र॒क्ष्णः क॒नीनि॑कां॒ ꣲयदेत॑ शेभि॒रीय॑से॒ भ्राज॑मानो विप॒श्चिता॒ चिद॑सि**

**म॒नाऽसि॒ धीर॑सि॒ दक्षि॑णा - [ ] 9**

**तै॰सं॰ 1.2.4.2**

**ऽसि य॒ज्ञिया॑ऽसि क्ष॒त्रिया॒ ऽस्यदि॑ति-रस्युभ॒यतः॑ शीर्.ष्णी॒ सा नः॒**

**सुप्रा॑ची॒ सुप्र॑तीची॒ सं भ॑व मि॒त्रस्त्वा॑ प॒दि ब॑द्ध्नातु पू॒षाऽद्ध्व॑नः**

**पा॒त्विन्द्रा॒या-द्ध्य॑क्षा॒यानु॑ त्वा मा॒ता म॑न्यता॒मनु॑ पि॒ताऽनु॒ भ्राता॒**

**सग॒र्भ्योऽनु॒ सखा॒ सयू᳚थ्यः॒ सा दे॑वि दे॒वमच्छे॒हीन्द्रा॑य॒ सोम॑ꣳ**

**रु॒द्रस्त्वा ऽऽ\*व॑र्तयतु मि॒त्रस्य॑ प॒था स्व॒स्ति सोम॑ सखा॒ ( )**

**पुन॒रेहि॑ स॒ह र॒य्या ॥ 10 (दक्षि॑णा॒-सोम॑सखा॒-पञ्च॑ च ) (अ4)**

**प्रथमकाण्डे - द्वितीयः प्रश्न:**

**41**

**तै॰सं॰ 1.2.5.1**

**वस्व्य॑सि रु॒द्राऽस्यदि॑ति-रस्यादि॒त्याऽसि॑ शु॒क्राऽसि॑ च॒न्द्राऽसि॒**

**बृह॒स्पति॑स्त्वा सु॒म्ने र॑ण्वतु रु॒द्रो वसु॑भि॒रा चि॑केतु पृथि॒व्यास्त्वा॑**

**मू॒र्द्धन्ना जि॑घर्मि देव॒यज॑न॒ इडा॑याः प॒दे घृ॒तव॑ति॒ स्वाहा॒**

**परि॑लिखित॒ꣳ रक्षः॒ परि॑लिखिता॒ अरा॑तय इ॒दम॒हꣳ रक्ष॑सो ग्री॒वा अपि॑**

**कृन्तामि॒ यो᳚ऽस्मान् द्वेष्टि॒ यं च॑ व॒यं द्वि॒ष्म इ॒दम॑स्य ग्री॒वा - [ ] 11**

**तै॰सं॰ 1.2.5.2**

**अपि॑ कृन्ताम्य॒स्मे राय॒स्त्वे राय॒स्तोते॒ रायः॒ सं दे॑वि दे॒व्योर्वश्या॑**

**पश्यस्व॒ त्वष्टी॑मती ते सपेय सु॒रेता॒ रेतो॒ दधा॑ना वी॒रं ꣲवि॑देय॒ तव॑**

**सं॒दृशि॒माऽहꣳ रा॒यस्पोषे॑ण॒ वि यो॑षं ॥ 12**

**(अ॒स्य॒ ग्री॒वा-एका॒न्न त्रि॒ꣳशच्च॑) (अ5)**

**तै॰सं॰ 1.2.6.1**

**अ॒ꣳशुना॑ ते अ॒ꣳशुः पृ॑च्यतां॒ परु॑षा॒ परु॑र्ग॒न्धस्ते॒ काम॑मवतु॒ मदा॑य॒**

**रसो॒ अच्यु॑तो॒ ऽमात्यो॑ऽसि शु॒क्रस्ते॒ ग्रहो॒ऽभि त्यं दे॒वꣳ**

**स॑वि॒तार॑मू॒ण्योः᳚ क॒विक्र॑तु॒मर्चा॑मि स॒त्यस॑वसꣳ रत्न॒धाम॒भि प्रि॒यं**

**म॒तिमू॒र्द्ध्वा यस्या॒मति॒र्भा अदि॑द्युत॒थ् सवी॑मनि॒ हिर॑ण्य पाणिरमिमीत**

**प्रथमकाण्डे - द्वितीयः प्रश्न:**

**42**

**सु॒क्रतुः॑ कृ॒पा सुवः॑ । प्र॒जाभ्य॑स्त्वा प्रा॒णाय॑ त्वा व्या॒नाय॑ त्वा**

**प्र॒जास्त्वमनु॒ ( ) प्राणि॑हि प्र॒जास्त्वामनु॒ प्राण॑न्तु ॥ 13**

**(अनु॑ - स॒प्त च॑)(अ6)**

**तै॰सं॰ 1.2.7.1**

**सोमं॑ ते क्रीणा॒म्यूर्ज॑स्वन्तं॒ पय॑स्वन्तं ꣲवी॒र्या॑वन्तमभि माति॒षाह॑ꣳ**

**शु॒क्रं ते॑ शु॒क्रेण॑ क्रीणामि च॒न्द्रं च॒न्द्रेणा॒-मृत॑म॒मृते॑न स॒म्यत्ते॒**

**गोर॒स्मे च॒न्द्राणि॒ तप॑सस्त॒नूर॑सि प्र॒जाप॑ते॒ र्वर्ण॒स्तस्या᳚स्ते सहस्रपो॒षं**

**पुष्य॑न्त्याश्चर॒मेण॑ प॒शुना᳚ क्रीणाम्य॒स्मे ते॒ बन्धु॒र्मयि॑ ते॒ रायः॑**

**श्रयन्ताम॒स्मे ज्योतिः॑ सोमविक्र॒यिणि॒ तमो॑ मि॒त्रो न॒ एहि॒ सुमि॑त्रधा॒**

**इन्द्र॑स्यो॒रु ( ) मा वि॑श॒ दक्षि॑ण-मु॒शन्नु॒शन्त॑ᳪ स्यो॒नः स्यो॒नᳪ**

**स्वान॒ भ्राजाङ्घा॑रे॒ बंभा॑रे॒ हस्त॒ सुह॑स्त॒ कृशा॑नवे॒ते वः॑ सोम॒**

**क्रय॑णा॒स्तान् र॑क्षध्वं॒ मा वो॑ दभन्न् ॥ 14**

**(ऊ॒रुं-द्वावि॑ꣳशतिश्च) (अ7)**

**प्रथमकाण्डे - द्वितीयः प्रश्न:**

**43**

**तै॰सं॰ 1.2.8.1**

**उदायु॑षा स्वा॒युषोदोष॑धीना॒ꣳ रसे॒नोत् प॒र्जन्य॑स्य॒ शुष्मे॒णो**

**द॑स्थाम॒मृता॒ꣳ अनु॑ । उ॒र्व॑न्तरि॑क्ष॒मन्वि॒ह्यदि॑त्याः॒ सदो॒ऽस्यदि॑त्याः॒ सद॒**

**आ सी॒दास्त॑भ्ना॒द्-द्यामृ॑ष॒भो अ॒न्तरि॑क्ष॒ममि॑मीत वरि॒माणं॑ पृथि॒व्या**

**आऽसी॑द॒द् विश्वा॒ भुव॑नानि स॒म्राड् विश्वेत्तानि॒ वरु॑णस्य व्र॒तानि॒ वने॑षु॒**

**व्य॑न्तरि॑क्षं ततान॒ वाज॒मर्व॑थ्सु॒ पयो॑ अघ्नि॒यासु॑ हृ॒थ्सु - [ ] 15**

**तै॰सं॰ 1.2.8.2**

**क्रतुं॒ ꣲवरु॑णो वि॒क्ष्व॑ग्निं दि॒वि सूर्य॑मदधा॒थ् सोम॒मद्रा॒वुदु॒ त्यं जा॒तवे॑दसं**

**दे॒वं ꣲव॑हन्ति के॒तवः॑ । दृ॒शे विश्वा॑य॒ सूर्यं᳚ ॥ उस्रा॒वेतं॑ धूर्.षाहावन॒श्रू**

**अवी॑रहणौ ब्रह्म॒चोद॑नौ॒ वरु॑णस्य॒ स्कंभ॑नमसि॒ वरु॑णस्य**

**स्कंभ॒सर्ज॑नमसि॒ प्रत्य॑स्तो॒ वरु॑णस्य॒ पाशः॑ ॥ 16**

**(हृ॒थ्सु-पञ्च॑त्रिꣳशच्च) (अ8)**

**तै॰सं॰ 1.2.9.1**

**प्र च्य॑वस्व भुवस्पते॒ विश्वा᳚न्य॒भि धामा॑नि॒ मा त्वा॑ परिप॒री वि॑द॒न्मा त्वा॑**

**परिप॒न्थिनो॑ विद॒न्मा त्वा॒ वृका॑ अघा॒यवो॒ मा ग॑न्ध॒र्वो वि॒श्वाव॑सु॒रा**

**द॑घच्छ्ये॒नो भू॒त्वा परा॑ पत॒ यज॑मानस्य नो गृ॒हे दे॒वैः स॑ᳪस्कृ॒तं**

**प्रथमकाण्डे - द्वितीयः प्रश्न:**

**44**

**ꣲयज॑मानस्य स्व॒स्त्यय॑न्य॒स्यपि॒ पन्था॑मगस्महि स्वस्ति॒ गाम॑ने॒हसं॒ ꣲयेन॒**

**विश्वाः॒ परि॒ द्विषो॑ वृ॒णक्ति॑ वि॒न्दते॒ वसु॒ नमो॑ मि॒त्रस्य॒ ( ) वरु॑णस्य॒**

**चक्ष॑से म॒हो दे॒वाय॒ तदृ॒तꣳ स॑पर्यत दूरे॒दृशे॑ दे॒वजा॑ताय के॒तवे॑**

**दि॒वस्पु॒त्राय॒ सूर्या॑य शꣳसत॒ वरु॑णस्य॒ स्कंभ॑नमसि॒ वरु॑णस्य**

**स्कंभ॒सर्ज॑न-म॒स्युन्मु॑क्तो॒ वरु॑णस्य॒ पाशः॑ ॥ 17**

**(मि॒त्रस्य॒-त्रयो॑विꣳशतिश्च) (अ9)**

**तै॰सं॰ 1.2.10.1**

**अ॒ग्ने-रा॑ति॒थ्यम॑सि॒ विष्ण॑वे त्वा॒ सोम॑स्याऽऽ\*ति॒थ्यम॑सि॒ विष्ण॑वे॒ त्वाऽति॑थेराति॒थ्यम॑सि॒ विष्ण॑वे त्वा॒ऽग्नये᳚ त्वा रायस्पोष॒दाव्न्ने॒ विष्ण॑वे त्वा**

**श्ये॒नाय॑ त्वा सोम॒भृते॒ विष्ण॑वे त्वा॒ या ते॒ धामा॑नि ह॒विषा॒ यज॑न्ति॒ ता**

**ते॒ विश्वा॑ परि॒भूर॑स्तु य॒ज्ञं ग॑य॒स्फानः॑ प्र॒तर॑णः सु॒वीरोऽवी॑रहा॒ प्रच॑रा**

**सोम॒ दुर्या॒नदि॑त्याः॒ सदो॒ऽस्यदि॑त्याः॒ सद॒ आ - [ ] 18**

**तै॰सं॰ 1.2.10.2**

**सी॑द॒ वरु॑णोऽसि धृ॒तव्र॑तो वारु॒णम॑सि श॒म्ꣲयोर्दे॒वाना॑ꣳ स॒ख्यान्मा**

**दे॒वाना॑-म॒पस॑श्छिथ्स्म॒ह्याप॑तये त्वागृह्णामि॒ परि॑पतये त्वा गृह्णामि॒**

**प्रथमकाण्डे - द्वितीयः प्रश्न:**

**45**

**तनू॒नप्त्रे᳚ त्वागृह्णामि शाक्व॒राय॑ त्वा गृह्णामि॒ शक्म॒न्-नोजि॑ष्ठाय त्वा**

**गृह्णा॒म्य -ना॑धृष्टमस्य-नाधृ॒ष्यं दे॒वाना॒मोजो॑ऽभिशस्ति॒पा अ॑नभिशस्ते॒**

**ऽन्यमनु॑ मे दी॒क्षां दी॒क्षाप॑ति र्मन्यता॒मनु॒ तप॒स्तप॑स्पति॒रञ्ज॑सा स॒त्यमुप॑**

**गेषꣳ सुवि॒ते मा॑ ( ) धाः ॥ 19**

**(अमै-कं॑ च) (अ10)**

**तै॰सं॰ 1.2.11.1**

**अ॒ꣳशुर॑ꣳशुस्ते देव सो॒माऽऽ\*प्या॑यता॒-मिन्द्रा॑यैकधन॒विद॒ आ**

**तुभ्य॒मिन्द्रः॑ प्यायता॒मा त्वमिन्द्रा॑य प्याय॒स्वाऽऽ\*प्या॑यय॒ सखी᳚न्थ्**

**स॒न्या मे॒धया᳚ स्व॒स्ति ते॑ देव सोम सु॒त्याम॑शी॒येष्टा॒ रायः॒ प्रेषे**

**भगा॑य॒र्तमृ॑तवा॒दिभ्यो॒ नमो॑ दि॒वे नमः॑ पृथि॒व्या अग्ने᳚ व्रतपते॒ त्वं**

**ꣲव्र॒तानां᳚ व्र॒तप॑तिरसि॒ या मम॑ त॒नूरे॒षा सा त्वयि॒ - [ ] 20**

**तै॰सं॰ 1.2.11.2**

**या तव॑ त॒नूरि॒यꣳ सा मयि॑ स॒ह नौ᳚ व्रतपते व्र॒तिनो᳚र्व्र॒तानि॒**

**या ते॑ अग्ने॒ रुद्रि॑या त॒नूस्तया॑ नः पाहि॒ तस्या᳚स्ते॒ स्वाहा॒**

**प्रथमकाण्डे - द्वितीयः प्रश्न:**

**46**

**या ते॑ अग्नेऽयाश॒या र॑जाश॒या ह॑राश॒या त॒नूर्वर्.षि॑ष्ठा गह्वरे॒ष्ठोऽग्रं**

**ꣲवचो॒ अपा॑वधीं त्वे॒षं ꣲवचो॒ अपा॑वधी॒ᳪ स्वाहा᳚ ॥ 21**

**(त्वयि॑-चत्वारि॒ꣳशच्च॑) (अ11)**

**तै॰सं॰ 1.2.12.1**

**वि॒त्ताय॑नी मेऽसि ति॒क्ताय॑नी मे॒ऽस्यव॑तान्मा नाथि॒तमव॑तान्मा व्यथि॒तं**

**ꣲवि॒देर॒ग्निर्नभो॒ नामाग्ने॑ अङ्गिरो॒ यो᳚ऽस्यां पृ॑थि॒व्यामस्यायु॑षा॒ नाम्नेहि॒**

**यत्तेऽना॑धृष्टं॒ नाम॑ य॒ज्ञियं॒ तेन॒ त्वाऽऽ\*द॒धेऽग्ने॑ अङ्गिरो॒ यो द्वि॒तीय॑स्यां**

**तृ॒तीय॑स्यां पृथि॒व्या-मस्यायु॑षा॒ नाम्नेहि॒ यत्तेऽना॑धृष्टं॒ नाम॑ - [ ] 22**

**तै॰सं॰ 1.2.12.2**

**य॒ज्ञियं॒ तेन॒ त्वाऽऽ\*द॑धे सि॒ꣳहीर॑सि महि॒षीर॑स्यु॒रु प्र॑थस्वो॒रु**

**ते॑ य॒ज्ञप॑तिः प्रथतां ध्रु॒वाऽसि॑ दे॒वेभ्यः॑ शुन्धस्व दे॒वेभ्यः॑**

**शुंभस्वेन्द्रघो॒षस्त्वा॒ वसु॑भिः पु॒रस्ता᳚त् पातु॒ मनो॑जवास्त्वा पि॒तृभि॑**

**र्दक्षिण॒तः पा॑तु॒ प्रचे॑तास्त्वा रु॒द्रैः प॒श्चात् पा॑तु वि॒श्वक॑र्मा**

**त्वाऽऽदि॒त्यैरु॑त्तर॒तः पा॑तु॒ सि॒ꣳहीर॑सि सपत्नसा॒ही स्वाहा॑**

**सि॒ꣳहीर॑सि सुप्रजा॒वनिः॒ स्वाहा॑ सि॒ꣳही - [ ] 23**

**प्रथमकाण्डे - द्वितीयः प्रश्न:**

**47**

**तै॰सं॰ 1.2.12.3**

**र॑सि रायस्पोष॒वनिः॒ स्वाहा॑ सि॒ꣳहीर॑स्या-दित्य॒वनिः॒ स्वाहा॑**

**सि॒ꣳहीर॒स्या व॑ह दे॒वान्दे॑वय॒ते यज॑मानाय॒ स्वाहा॑ भू॒तेभ्य॑स्त्वा**

**वि॒श्वायु॑रसि पृथि॒वीं दृ॑ꣳह ध्रुव॒क्षिद॑स्य॒न्तरि॑क्षं दृꣳहाच्युत॒क्षिद॑सि॒**

**दिवं॑ दृꣳहा॒ग्ने र्भस्मा᳚स्य॒ग्नेः पुरी॑षमसि ॥ 24**

**(नाम॑-सुप्रजा॒वनिः॒ स्वाहा॑ सि॒ꣳहिः-पञ्च॑त्रिꣳशच्च)(अ12)**

**तै॰सं॰ 1.2.13.1**

**यु॒ञ्जते॒ मन॑ उ॒त यु॑ञ्जते॒ धियो॒ विप्रा॒ विप्र॑स्य बृह॒तो वि॑प॒श्चितः॑ ।**

**वि होत्रा॑ दधे वयुना॒ विदेक॒ इन्म॒ही दे॒वस्य॑ सवि॒तुः परि॑ष्टुतिः ॥**

**सु॒वाग्दे॑व॒ दुर्या॒ꣳ आ व॑द देव॒श्रुतौ॑ दे॒वेष्वा घो॑षेथा॒मा नो॑**

**वी॒रो जा॑यतां कर्म॒ण्यो॑ यꣳ सर्वे॑ऽनु॒ जीवा॑म॒ यो ब॑हू॒नामस॑द्व॒शी ।**

**इ॒दं ꣲविष्णु॒ र्विच॑क्रमे त्रे॒धा नि द॑धे प॒दं ।**

**स मू॑ढमस्य - [ ] 25**

**तै॰सं॰ 1.2.13.2**

**पाꣳसु॒र इरा॑वती धेनु॒मती॒ हि भू॒तꣳ सू॑यव॒सिनी॒ मन॑वे**

**यश॒स्ये᳚ । व्य॑स्कभ्ना॒द्रोद॑सी॒ विष्णु॑रे॒ते दा॒धार॑ पृथि॒वीम॒भितो॑ म॒यूखैः᳚ ॥**

**प्रथमकाण्डे - द्वितीयः प्रश्न:**

**48**

**प्राची॒ प्रेत॑मद्ध्व॒रं क॒ल्पय॑न्ती ऊ॒र्द्ध्वं ꣲय॒ज्ञं न॑यतं॒ मा जी᳚ह्वरत॒मत्र॑**

**रमेथां॒ ꣲवर्.ष्म॑न् पृथि॒व्या दि॒वो वा॑ विष्णवु॒त वा॑ पृथि॒व्या म॒हो वा॑**

**विष्णवु॒त वा॒ऽन्तरि॑क्षा॒द्धस्तौ॑ पृणस्व ब॒हुभि॑र्वस॒व्यै॑रा**

**प्र य॑च्छ॒ - [ ] 26**

**तै॰सं॰ 1.2.13.3**

**दक्षि॑णा॒दोत स॒व्यात् ।**

**विष्णो॒र्नुकं॑ ꣲवी॒र्या॑णि॒ प्र वो॑चं॒ ꣲयः पार्थि॑वानि विम॒मे रजा॑ꣳसि॒ यो**

**अस्क॑भाय॒दुत्त॑रꣳ स॒धस्थं॑ ꣲविचक्रमा॒ण स्त्रे॒धोरु॑गा॒यो**

**विष्णो॑ र॒राट॑मसि॒ विष्णोः᳚ पृ॒ष्ठम॑सि॒ विष्णोः॒ श्नप्त्रे᳚ स्थो॒**

**विष्णोः॒ स्यूर॑सि॒ विष्णो᳚ र्ध्रु॒वम॑सि वैष्ण॒वम॑सि॒ विष्ण॑वे त्वा ॥ 27**

**(अ॒स्य॒-य॒च्छै-का॒न्न च॑त्वारि॒ꣳशच्च॑) (अ13)**

**तै॰सं॰ 1.2.14.1**

**कृ॒णु॒ष्व पाजः॒ प्रसि॑ति॒न्न पृ॒थ्वीं ंꣲया॒हि राजे॒ वाम॑वा॒ꣳ इभे॑ न ।**

**तृ॒ष्वीमनु॒ प्रसि॑तिं-द्रूणा॒नोऽस्ता॑ऽसि॒ विद्ध्य॑ र॒क्षस॒ स्तपि॑ष्ठैः ॥**

**तव॑ भ्र॒मास॑ आशु॒या प॑तं॒त्यनु॑ स्पृश-धृष॒ता शोशु॑चानः ।**

**प्रथमकाण्डे - द्वितीयः प्रश्न:**

**49**

**तपू॑ᳪष्यग्ने जु॒ह्वा॑ पत॒ङ्गानस॑न्दितो॒ विसृ॑ज॒ विष्व॑ गु॒ल्काः ॥**

**प्रति॒स्पशो॒ विसृ॑ज॒-तूर्णि॑तमो॒ भवा॑ पा॒युर्वि॒शो अ॒स्या अद॑ब्धः ।**

**यो नो॑ दू॒रे अ॒घश॑ꣳसो॒ - [ ] 28**

**तै॰सं॰ 1.2.14.2**

**यो अन्त्यग्ने॒ माकि॑ष्टे॒ व्यथि॒रा द॑धर्.षीत् ॥**

**उद॑ग्ने तिष्ठ॒ प्रत्या \*ऽऽत॑नुष्व॒ न्य॑मित्रा॑ꣳ ओषतात् तिग्महेते ।**

**यो नो॒ अरा॑तिꣳ समिधान च॒क्रे नी॒चा तं ध॑क्ष्यत॒सं न शुष्कं᳚ ॥**

**ऊ॒र्द्ध्वो भ॑व॒ प्रति॑वि॒द्ध्या-ऽद्ध्य॒स्मदा॒ विष्कृ॑णुष्व॒ दैव्या᳚न्यग्ने ।**

**अव॑स्थि॒रा त॑नुहि यातु॒ जूनां᳚ जा॒मिमजा॑मिं॒ प्रमृ॑णीहि॒ शत्रून्॑ ॥**

**स ते॑ - [ ] 29**

**तै॰सं॰ 1.2.14.3**

**जानाति सुम॒तिं ꣲय॑विष्ठ॒य ईव॑ते॒ ब्रह्म॑णे गा॒तुमैर॑त् ।**

**विश्वा᳚न्यस्मै सु॒दिना॑नि रा॒यो द्यु॒म्नान्य॒र्यो विदुरो॑ अ॒भि द्यौ᳚त् ॥**

**सेद॑ग्ने अस्तु सु॒भगः॑ सु॒दानु॒-र्यस्त्वा॒ नित्ये॑न ह॒विषा॒य उ॒क्थैः ।**

**प्रथमकाण्डे - द्वितीयः प्रश्न:**

**50**

**पिप्री॑षति॒ स्व आयु॑षि दुरो॒णे विश्वेद॑स्मै सु॒दिना॒ साऽस॑दि॒ष्टिः ॥**

**अर्चा॑मि ते सुम॒तिं घोष्य॒र्वाख्-सन्ते॑ वा॒ वा ता॑ जरता - [ ] 30**

**तै॰सं॰ 1.2.14.4**

**मि॒यंगीः । स्वश्वा᳚स्त्वा सु॒रथा॑ मर्जये-मा॒स्मे क्ष॒त्राणि॑ धारये॒रनु॒ द्यून् ॥**

**इ॒ह त्वा॒ भूर्या च॑रे॒ दुप॒त्मन्-दोषा॑वस्त र्दीदि॒वाꣳस॒मनु॒ द्यून् ।**

**क्रीड॑न्तस्त्वा सु॒मन॑सः सपेमा॒भि द्यु॒म्ना त॑स्थि॒वाꣳ सो॒ जना॑नां ॥**

**यस्त्वा॒-स्वश्वः॑ सुहिर॒ण्यो अ॑ग्न उप॒याति॒ वसु॑मता॒ रथे॑न ।**

**तस्य॑ त्रा॒ता-भ॑वसि॒ तस्य॒ सखा॒ यस्त॑ आति॒थ्य मा॑नु॒षग् जुजो॑षत् ॥**

**म॒हो रु॑जामि - [ ] 31**

**तै॰सं॰ 1.2.14.5**

**ब॒न्धुता॒ वचो॑भि॒स्तन्मा॑ पि॒तुर्गोत॑मा॒द-न्वि॑याय ।**

**त्वन्नो॑ अ॒स्य वच॑स-श्चिकिद्धि॒ होत॑र्यविष्ठ सुक्रतो॒ दमू॑नाः ॥**

**अस्व॑प्नज स्त॒रण॑यः सु॒शेवा॒ अत॑न्द्रा सोऽवृ॒का अश्र॑मिष्ठाः ।**

**ते पा॒यवः॑ स॒द्ध्रिय॑ञ्चो नि॒षद्याऽग्ने॒ तव॑नः पान्त्वमूर ॥**

**प्रथमकाण्डे - द्वितीयः प्रश्न:**

**51**

**ये पा॒यवो॑ मामते॒यंते॑ अग्ने॒ पश्य॑न्तो अ॒न्धं दु॑रि॒ताद र॑क्षन्न् ।**

**र॒रक्ष॒तान्थ् सु॒कृतो॑ वि॒श्ववे॑दा॒ दिफ्स॑न्त॒ इद्रि॒पवो॒ ना ह॑ - [ ] 32**

**तै॰सं॰ 1.2.14.6**

**देभुः ॥**

**त्वया॑ व॒यꣳ स॑ध॒न्य॑-स्त्वोता॒-स्तव॒ प्रणी᳚त्य श्याम॒ वाजान्॑ ।**

**उ॒भा शꣳसा॑ सूदय सत्यताते-ऽनुष्ठु॒या कृ॑णुह्य-ह्रयाण ॥**

**अ॒या ते॑ अग्ने स॒मिधा॑ विधेम॒ प्रति॒स्तोम॑ꣳ श॒स्यमा॑नं गृभाय ।**

**दहा॒शसो॑ र॒क्षसः॑ पा॒ह्य॑स्मान् द्रु॒हो नि॒दो मि॑त्रमहो अव॒द्यात् ॥**

**र॒क्षो॒हणं॑ ꣲवा॒जिन॒माजि॑ घर्मि मि॒त्रं प्रथि॑ष्ठ॒-मुप॑यामि॒ शर्म॑ ।**

**शिशा॑नो अ॒ग्निः क्रतु॑भिः॒-समि॑द्धः॒-सनो॒ दिवा॒ - [ ] 33**

**तै॰सं॰ 1.2.14.7**

**सरि॒षः पा॑तु॒नक्तं᳚ ॥**

**विज्योति॑षा बृह॒ता भा᳚त्य॒ग्निरा॒वि-र्विश्वा॑नि कृणुतेमहि॒त्वा ।**

**प्रादे॑वी-र्मा॒याः स॑हते-दु॒रेवाः॒ शिशी॑ते॒ शृङ्गे॒ रक्ष॑से वि॒निक्षे᳚ ॥**

**प्रथमकाण्डे - द्वितीयः प्रश्न:**

**52**

**उ॒त स्वा॒नासो॑ दि॒विष॑न्त्व॒ग्ने स्ति॒ग्मायु॑धा॒ रक्ष॑से॒ हन्त॒ वा उ॑ ।**

**मदे॑ चिदस्य॒ प्ररु॑जन्ति॒ भामा॒ न व॑रन्ते परि॒बाधो॒ अदे॑वीः ॥ 34**

**(अ॒घश॑ꣳसः॒-स ते॑-जरताꣳ-रुजामि-ह॒ - दिवैक॑चत्वारिꣳशच्च)(अ14)**

**ठय्ग्ल्फ्ग् ऍब्य्श्ग्त् ष्त्ळ्ण् ल्ळ्ग्य्ळ्त्फ्ञ् ठग्छ्ग्प्ल्ब्झ् 1 ळ्ब् 14 अफ्व्श्ग्ग्ध्ग्प्ल् :-**

**(उन्द॒न्त्वा-कू᳚त्यै॒-दैवी॑-मि॒यन्ते॒-वस्व्य॑स्य॒-ꣳशुना॑ते॒-**

**सोम॑न्त॒-उदायु॑षा॒ प्र च्य॑वस्वा॒-ऽग्नेरा॑ति॒थ्य-म॒ꣳशुर॑ꣳ शुर्-वि॒त्ताय॑नी**

**मेऽसि - यु॒ञ्चते॑ - कृणु॒ष्व पाज॒-श्चतु॑र्दश ।)**

**ऍब्य्श्ग्त् ष्त्ळ्ण् ल्ळ्ग्य्ळ्त्फ्ञ् ठग्छ्ग्प्ल् ब्झ् 1, 11, 21 दज्य्त्ज्ल् ब्झ् ठग्फ्च्ण्ग्ग्ळ्त्ल् :- (आपो॒**

**-वस्व्य॑सि॒ या तवे॒-यङ्गी-श्चतु॑स्त्रिꣳशत् ।)**

**प्रथमकाण्डे - द्वितीयः प्रश्न:**

**53**

**ऊत्य्ल्ळ् ग्फ्छ् एग्ल्ळ् ठग्छ्ग्प् ब्झ् दज्च्ब्फ्छ् ठय्ग्ल्फ्ग्प् :-**

**(आप॑ उन्द॒न्-त्वदे॑वीः ।)**

**॥ हरिः॑ ओं ॥**

**॥ कृष्ण यजुर्वेदीय तैत्तिरीय संहितायां प्रथमकाण्डे**

**द्वितीयः प्रश्नः समाप्तः ॥**

**प्रथमकाण्डे-तृतीयः प्रश्न:**

**54**

**ओं नमः परमात्मने**

**, श्री महागणपतये नमः,**

**श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ह॒रिः॒ ओं**

**1.3 प्रथमकाण्डे तृतीय: प्रश्न: अग्निष्टोमे पशुः**

**तै॰सं॰ 1.3.1.1**

**दे॒वस्य॑ त्वा सवि॒तुः प्र॑स॒वे᳚ऽश्विनो᳚ र्बा॒हुभ्यां᳚ पू॒ष्णो हस्ता᳚भ्या॒मा**

**द॒देऽभ्रि॑रसि॒ नारि॑रसि॒ परि॑लिखित॒ꣳ रक्षः॒ परि॑लिखिता॒ अरा॑तय**

**इ॒दम॒हꣳ रक्ष॑सो ग्री॒वा अपि॑ कृन्तामि॒ यो᳚ऽस्मान् द्वेष्टि॒ यं च॑ व॒यं द्वि॒ष्म**

**इ॒दम॑स्य ग्री॒वा अपि॑ कृन्तामि दि॒वे त्वा॒ऽन्तरि॑क्षाय त्वा पृथि॒व्यै त्वा॒**

**शुन्ध॑तां ꣲलो॒कः पि॑तृ॒षद॑नो॒ यवो॑ऽसि य॒वया॒स्मद्द्वेषो॑ - [ ] 1**

**तै॰सं॰ 1.3.1.2**

**य॒वयारा॑तीः पितृ॒णाꣳ सद॑नम॒स्युद्दिव॑ᳪ स्तभा॒नाऽन्तरि॑क्षं पृण पृथि॒वीं**

**दृ॑ꣳह द्युता॒नस्त्वा॑ मारु॒तो मि॑नोतु मि॒त्रावरु॑णयो र्ध्रु॒वेण॒ धर्म॑णा**

**ब्रह्म॒वनिं॑ त्वा क्षत्र॒वनि॑ꣳ सुप्रजा॒वनि॑ꣳ रायस्योष॒वनिं॒ पर्यू॑हामि॒ ब्रह्म॑**

**दृꣳह क्ष॒त्रं दृ॑ꣳह प्र॒जां दृ॑ꣳह रा॒यस्पोषं॑ दृꣳह घृ॒तेन॑ द्यावापृथिवी॒**

**आ पृ॑णेथा॒मिन्द्र॑स्य॒ सदो॑ऽसि विश्वज॒नस्य॑ छा॒या परि॑ त्वा गिर्वणो॒ गिर॑**

**प्रथमकाण्डे-तृतीयः प्रश्न:**

**55**

**इ॒मा ( ) भव॑न्तु वि॒श्वतो॑ वृ॒द्धायु॒मनु॒ वृद्ध॑यो॒ जुष्टा॑ भवन्तु॒ जुष्ट॑य॒**

**इन्द्र॑स्य॒ स्यूर॒सीन्द्र॑स्य ध्रु॒वम॑स्यै॒न्द्रम॒सीन्द्रा॑य त्वा ॥ 2**

**(द्वेष॑ - इ॒मा - अ॒ष्टाद॑श च) (अ1)**

**तै॰सं॰ 1.3.2.1**

**र॒क्षो॒हणो॑ वलग॒हनो॑ वैष्ण॒वान् ख॑नामी॒दम॒हं तं ꣲव॑ल॒गमुद्व॑पामि॒**

**यं नः॑ समा॒नो यमस॑मानो निच॒खाने॒दमे॑न॒मध॑रं करोमि॒ यो नः॑ समा॒नो**

**योऽस॑मानोऽराती॒यति॑ गाय॒त्रेण॒ छन्द॒साऽव॑बाढो वल॒गः किम॑त्र भ॒द्रं**

**तन्नौ॑ स॒ह वि॒राड॑सि सपत्न॒हा स॒म्राड॑सि भ्रातृव्य॒हा**

**स्व॒राड॑स्यभिमाति॒हा वि॑श्वा॒राड॑सि॒ विश्वा॑सां ना॒ष्ट्राणा॑ꣳ ह॒न्ता - [ ] 3**

**तै॰सं॰ 1.3.2.2**

**र॑क्षो॒हणो॑ वलग॒हनः॒ प्रोक्षा॑मि वैष्ण॒वान् र॑क्षो॒हणो॑ वलग॒हनोऽव॑ नयामि**

**वैष्ण॒वान् यवो॑ऽसि य॒वया॒स्मद्द्वेषो॑ य॒वयारा॑ती रक्षो॒हणो॑ वलग॒हनोऽव॑**

**स्तृणामि वैष्ण॒वान् र॑क्षो॒हणो॑ वलग॒हनो॒ऽभि जु॑होमि वैष्ण॒वान् र॑क्षो॒हणौ॑**

**वलग॒हना॒वुप॑ दधामि वैष्ण॒वी र॑क्षो॒हणौ॑ वलग॒हनौ॒ पर्यू॑हामि वैष्ण॒वी**

**प्रथमकाण्डे-तृतीयः प्रश्न:**

**56**

**र॑क्षो॒हणौ॑ वलग॒हनौ॒ परि॑ स्तृणामि वैष्ण॒वी र॑क्षो॒हणौ॑ वलग॒हनौ॑**

**वैष्ण॒वी बृ॒हन्न॑सि बृ॒हद्ग्रा॑वा बृह॒तीमिन्द्रा॑य॒ ( ) वाचं॑ ꣲवद ॥ 4**

**(ह॒न्ते-न्द्रा॑य॒ द्वे च॑) (अ2)**

**तै॰सं॰ 1.3.3.1**

**वि॒भूर॑सि प्र॒वाह॑णो॒ वह्नि॑रसि हव्य॒वाह॑नः श्वा॒त्रो॑ऽसि॒ प्रचे॑तास्तु॒थो॑ऽसि**

**वि॒श्ववे॑दा उ॒शिग॑सि क॒विरङ्घा॑रिरसि॒ बंभा॑रिरव॒स्युर॑सि॒**

**दुव॑स्वाञ्छु॒न्ध्यूर॑सि मार्जा॒लीयः॑ सं॒राड॑सि कृ॒शानुः॑ परि॒षद्यो॑ऽसि॒**

**पव॑मानः प्र॒तक्वा॑ऽसि॒ नभ॑स्वा॒नसं॑मृष्टोऽसि हव्य॒सूद॑ ऋ॒तधा॑माऽसि॒**

**सुव॑र्ज्योति॒ ब्रह्म॑ज्योतिरसि॒ सुव॑र्द्धामा॒ऽजो᳚ऽस्येक॑पा॒दहि॑रसि बु॒द्ध्नियो॒**

**रौद्रे॒णानी॑केन ( ) पा॒हि मा᳚ऽग्ने पिपृ॒हि मा॒ मा मा॑ हिꣳसीः ॥ 5**

**(अनी॑केना॒-ष्टौ च॑) (अ3)**

**तै॰सं॰ 1.3.4.1**

**त्वꣳ सो॑म तनू॒कृद्भ्यो॒ द्वेषो᳚भ्यो॒ऽन्यकृ॑तेभ्य उ॒रु य॒न्ताऽसि॒ वरू॑थ॒ᳪ**

**स्वाहा॑ जुषा॒णो अ॒प्तुराज्य॑स्य वेतु॒ स्वाहा॒ऽयन्नो॑ अ॒ग्निर्विर॑वः कृणोत्व॒यं**

**मृधः॑ पु॒र ए॑तु प्रभि॒न्दन्न् ।**

**प्रथमकाण्डे-तृतीयः प्रश्न:**

**57**

**अ॒यꣳ शत्रू᳚ञ्जयतु॒ जर्.हृ॑षाणो॒ऽ यं ꣲवाजं॑ जयतु॒ वाज॑सातौ ॥**

**उ॒रु वि॑ष्णो॒ वि क्र॑मस्वो॒रु क्षया॑य नः कृधि ॥**

**घृ॒तं घृ॑तयोने पिब॒ प्रप्र॑ य॒ज्ञप॑तिं तिर ॥**

**सोमो॑ जिगाति गातु॒वि - [ ] 6**

**तै॰सं॰ 1.3.4.2**

**द्दे॒वाना॑मेति निष्कृ॒तमृ॒तस्य॒ योनि॑मा॒सद॒मदि॑त्याः॒ सदो॒ऽस्यदि॑त्याः॒ सद॒**

**आ सी॑दै॒ष वो॑ देव सवितः॒ सोम॒स्तꣳ र॑क्षद्ध्वं॒ मा वो॑ दभ दे॒तत्त्वꣳ**

**सो॑म दे॒वो दे॒वानुपा॑गा इ॒दम॒हं म॑नु॒ष्यो॑ मनु॒ष्या᳚न्थ् स॒ह प्र॒जया॑ स॒ह**

**रा॒यस्पोषे॑ण॒ नमो॑ दे॒वेभ्यः॑ स्व॒धा पि॒तृभ्य॑ इ॒दम॒हं निर्वरु॑णस्य॒ पाशा॒थ्**

**सुव॑र॒भि-[ ] 7**

**तै॰सं॰ 1.3.4.3**

**वि ख्ये॑षं ꣲवैश्वान॒रं ज्योति॒रग्ने᳚ व्रतपते॒ त्वं ꣲव्र॒तानां᳚ ꣲव्र॒तप॑तिरसि॒या मम॑**

**त॒नूस्त्वय्यभू॑दि॒यꣳ सा मयि॒ या तव॑ त॒नू र्मय्यभू॑दे॒षा सा त्वयि॑यथाय॒थं**

**नौ᳚ व्रतपते व्र॒तिनो᳚ र्व्र॒तानि॑ ॥ 8**

**(गा॒तु॒विद॒-भ्ये-क॑त्रिꣳशच्च) (अ4)**

**प्रथमकाण्डे-तृतीयः प्रश्न:**

**58**

**तै॰सं॰ 1.3.5.1**

**अत्य॒न्यानगां॒ नान्यानुपा॑ गाम॒र्वाक्त्वा॒ परै॑रविदं प॒रोऽव॑रै॒स्तं त्वा॑ जुषे**

**वैष्ण॒वं दे॑वय॒ज्यायै॑ दे॒वस्त्वा॑ सवि॒ता मद्ध्वा॑ऽन॒क्त्वोष॑धे॒ त्राय॑स्वैन॒ᳪ**

**स्वधि॑ते॒ मैन॑ꣳ हिꣳसी॒ र्दिव॒मग्रे॑ण॒ मा ले॑खीर॒न्तरि॑क्षं॒ मद्ध्ये॑न॒ मा**

**हि॑ꣳसीः पृथि॒व्या सं भ॑व॒ वन॑स्पते श॒तव॑ल्.शो॒ वि रो॑ह**

**स॒हस्र॑वल्.शा॒ वि व॒यꣳ रु॑हेम॒ यं ( ) त्वा॒ ऽयᳪ स्वधि॑ति॒स्तेति॑जानः**

**प्रणि॒नाय॑ मह॒ते सौभ॑गा॒याच्छि॑न्नो॒ रायः॑ सु॒वीरः॑ ॥ 9**

**(यं-दश॑ च) (अ5)**

**तै॰सं॰ 1.3.6.1**

**पृ॒थि॒व्यै त्वा॒न्तरि॑क्षाय त्वा दि॒वे त्वा॒ शुन्ध॑तां ꣲलो॒कः पि॑तृ॒षद॑नो॒**

**यवो॑ऽसि य॒वया॒स्मद्द्वेषो॑ य॒वयारा॑तीः पितृ॒णाꣳ सद॑नमसि**

**स्वावे॒शो᳚ऽस्यग्रे॒गा ने॑तृ॒णां ꣲवन॒स्पति॒रधि॑ त्वा स्थास्यति॒ तस्य॑**

**वित्ताद्दे॒वस्त्वा॑ सवि॒ता मद्ध्वा॑ऽनक्तु सुपिप्प॒लाभ्य॒स्त्वौष॑धीभ्य॒**

**उद्दिव॑ᳪ स्तभा॒नाऽन्तरि॑क्षं पृण पृथि॒वीमुप॑रेण दृꣳह॒ ते ते॒**

**धामा᳚न्युश्मसि - [ ] 10**

**प्रथमकाण्डे-तृतीयः प्रश्न:**

**59**

**तै॰सं॰ 1.3.6.2**

**ग॒मद्ध्ये॒ गावो॒ यत्र॒ भूरि॑शृङ्गा अ॒यासः॑ ॥**

**अत्राह॒ तदु॑रुगा॒यस्य॒ विष्णोः᳚ प॒रमं प॒दमव॑ भाति॒ भूरेः᳚ ॥**

**विष्णोः॒ कर्मा॑णि पश्यत॒ यतो᳚ व्र॒तानि॑ पस्प॒शे ॥**

**इन्द्र॑स्य॒ युज्यः॒ सखा᳚ ॥**

**तद्-विष्णोः᳚ पर॒मं प॒दꣳ सदा॑ पश्यन्ति सू॒रयः॑ ।**

**दि॒वीव॒ चक्षु॒रात॑तं ॥**

**ब्र॒ह्म॒वनिं॑ त्वा क्षत्र॒वनि॑ꣳ सुप्रजा॒वनि॑ꣳ रायस्पोष॒वनिं॒ पर्यू॑हामि॒**

**ब्रह्म॑ दृꣳह क्ष॒त्रं दृ॑ꣳह प्र॒जां दृ॑ꣳह रा॒यस्पोषं॑ ( ) दृꣳह परि॒वीर॑सि॒**

**परि॑ त्वा॒ दैवी॒र्विशो᳚ व्ययन्तां॒ परी॒मꣳ रा॒यस्पोषो॒ यज॑मानं मनु॒ष्या॑**

**अ॒न्तरि॑क्षस्य त्वा॒ साना॒वव॑ गूहामि ॥ 11**

**(उ॒श्म॒सी॒-पोष॒मे-का॒न्न वि॑ꣳश॒तिश्च॑) (अ6)**

**तै॰सं॰ 1.3.7.1**

**इ॒षे त्वो॑प॒वीर॒स्युपो॑ दे॒वान् दैवी॒र्विशः॒ प्रागु॒ र्वह्नी॑रु॒शिजो॒ बृह॑स्पते**

**धा॒रया॒ वसू॑नि ह॒व्या ते᳚ स्वदन्तां॒ देव॑ त्वष्ट॒र्वसु॑ रण्व॒ रेव॑ती॒ रम॑द्ध्व-**

**प्रथमकाण्डे-तृतीयः प्रश्न:**

**60**

**म॒ग्ने र्ज॒नित्र॑मसि॒ वृष॑णौ स्थ उ॒र्वश्य॑स्या॒युर॑सि पुरू॒रवा॑ घृ॒तेना॒क्ते**

**वृष॑णं दधाथां गाय॒त्रं छन्दोऽनु॒ प्र जा॑यस्व॒ त्रैष्टु॑भं॒ जाग॑तं॒ छन्दोऽनु॒**

**प्र जा॑यस्व॒ भव॑तं- [ ] 12**

**तै॰सं॰ 1.3.7.2**

**नः॒ सम॑नसौ॒ समो॑कसावरे॒पसौ᳚ ।**

**मा य॒ज्ञꣳ हि॑ꣳसिष्टं॒ मा य॒ज्ञप॑तिं जातवेदसौ शि॒वौ भ॑वतम॒द्य नः॑ ॥**

**अ॒ग्नाव॒ग्निश्च॑रति॒ प्रवि॑ष्ट॒ ऋषी॑णां पु॒त्रो अ॑धिरा॒ज ए॒षः ।**

**स्वा॒हा॒कृत्य॒ ब्रह्म॑णा ते जुहोमि॒ मा दे॒वानां᳚ मिथु॒या क॑र्भाग॒धेयं᳚ ॥ 13**

**(भव॑त॒-मेक॑त्रिꣳशच्च) (अ7)**

**तै॰सं॰ 1.3.8.1**

**आ द॑द ऋ॒तस्य॑ त्वा देवहविः॒ पाशे॒नाऽऽर॑भे॒ धर्.षा॒**

**मानु॑षान॒द्भ्यस्त्वौष॑धीभ्यः॒ प्रोक्षा᳚म्य॒पां पे॒रुर॑सि स्वा॒त्तं चि॒थ् सदे॑वꣳ**

**ह॒व्यमापो॑ देवीः॒ स्वद॑तैन॒ꣳ सं ते᳚ प्रा॒णो वा॒युना॑ गच्छता॒ꣳ सं**

**ꣲयज॑त्रै॒रङ्गा॑नि॒ सं ꣲय॒ज्ञप॑तिरा॒शिषा॑ घृ॒तेना॒क्तौ प॒शुं त्रा॑येथा॒ꣳ**

**रेव॑तीर्य॒ज्ञप॑तिं प्रिय॒धाऽऽ\* वि॑श॒तोरो॑ अन्तरिक्ष स॒जूर्दे॒वेन॒ - [ ] 14**

**प्रथमकाण्डे-तृतीयः प्रश्न:**

**61**

**तै॰सं॰ 1.3.8.2**

**वाते॑ना॒स्य ह॒विष॒स्त्मना॑ यज॒ सम॑स्य त॒नुवा॑ भव॒ वर्.षी॑यो॒ वर्.षी॑यसि**

**य॒ज्ञे य॒ज्ञपतिं॑ धाः पृथि॒व्याः सं॒पृचः॑ पाहि॒ नम॑स्त आतानाऽन॒र्वा प्रेहि॑**

**घृ॒तस्य॑ कु॒ल्यामनु॑ स॒ह प्र॒जया॑ स॒ह रा॒यस्पोषे॒णाऽऽपो॑ देवीः शुद्धायुवः**

**शु॒द्धा यू॒यं दे॒वाꣳ ऊ᳚ढ्वꣳ शु॒द्धा व॒यं परि॑विष्टाः परिवे॒ष्टारो॑ वो**

**भूयास्म ॥ 15**

**(दे॒वन॒-चतु॑श्चत्वारिꣳशच्च) (अ8)**

**तै॰सं॰ 1.3.9.1**

**वाक्त॒ आ प्या॑यतां प्रा॒णस्त॒ आ प्या॑यतां॒ चक्षु॑स्त॒ आ प्या॑यता॒ᳪ श्रोत्रं॑**

**त॒ आ प्या॑यतां॒ ꣲयाते᳚ प्रा॒णाञ्छुग्ज॒गाम॒ या चक्षु॒र्या श्रोत्रं॒ ꣲयत्ते᳚ क्रू॒रं**

**ꣲयदास्थि॑तं॒ तत्त॒ आ प्या॑यतां॒ तत्त॑ ए॒तेन॑ शुन्धतां॒ नाभि॑स्त॒ आ प्या॑यतां**

**पा॒युस्त॒ आ प्या॑यताꣳ शु॒द्धाश्च॒रित्राः॒ शम॒द्भ्यः - [ ] 16**

**तै॰सं॰ 1.3.9.2**

**शमोष॑धीभ्यः॒ शं पृ॑थि॒व्यै शमहो᳚भ्या॒-मोष॑धे॒ त्राय॑स्वैन॒ᳪ स्वधि॑ते॒**

**मैन॑ꣳ हिꣳसी॒ रक्ष॑सां भा॒गो॑ऽसी॒दम॒हꣳ रक्षो॑ऽध॒मं तमो॑ नयामि॒**

**यो᳚ऽस्मान् द्वेष्टि॒ यं च॑ व॒यं द्वि॒ष्म इ॒दमे॑नमध॒मं तमो॑ नयामी॒षे त्वा॑ घृ॒तेन॑**

**प्रथमकाण्डे-तृतीयः प्रश्न:**

**62**

**द्यावापृथिवी॒ प्रोर्ण्वा॑था॒-मच्छि॑न्नो॒ रायः॑ सु॒वीर॑ उ॒र्व॑न्तरि॑क्ष॒मन्वि॑हि॒**

**वायो॒ वीहि॑ ( ) स्तो॒काना॒ᳪ स्वाहो॒र्द्ध्वन॑भसं मारु॒तं ग॑च्छतं ॥ 17**

**(अ॒द्भ्यो-वीहि॒-पञ्च॑ च) (अ9)**

**तै॰सं॰ 1.3.10.1**

**सं ते॒ मन॑सा॒ मनः॒ सं प्रा॒णेन॑ प्रा॒णो जुष्टं॑ दे॒वेभ्यो॑ ह॒व्यं**

**घृ॒तव॒थ् स्वाहै॒न्द्रः प्रा॒णो अङ्गे॑अङ्गे॒ नि दे᳚द्ध्यदै॒न्द्रो॑ ऽपा॒नो अङ्गे॑अङ्गे॒**

**वि बो॑भुव॒द्देव॑ त्वष्ट॒र्भूरि॑ ते॒ सꣳस॑मेतु॒ विषु॑रूपा॒ यथ् सल॑क्ष्माणो॒**

**भव॑थ देव॒त्रा यन्त॒मव॑से॒ सखा॒योऽनु॑ त्वा मा॒ता पि॒तरो॑ मदन्तु॒**

**श्रीर॑स्य॒ग्निस्त्वा᳚ श्रीणा॒त्वापः॒ सम॑रिण॒न् वात॑स्य - [ ] 18**

**तै॰सं॰ 1.3.10.2**

**त्वा॒ ध्रज्यै॑ पू॒ष्णो रᳪह्या॑ अ॒पामोष॑धीना॒ꣳ रोहि॑ष्यै घृ॒तं घृ॑तपावानः**

**पिबत॒ वसां᳚ ꣲवसापावानः पिबता॒-ऽन्तरि॑क्षस्य ह॒विर॑सि॒ स्वाहा᳚**

**त्वा॒ऽन्तरि॑क्षाय॒ दिशः॑ प्र॒दिश॑ आ॒दिशो॑ वि॒दिश॑ उ॒द्दिश॒ः स्वाहा॑ दि॒ग्भ्यो**

**नमो॑ दि॒ग्भ्यः ॥ 19**

**(वा॑तस्या॒-ष्टावि॑ꣳशतिश्च) (अ10)**

**प्रथमकाण्डे-तृतीयः प्रश्न:**

**63**

**तै॰सं॰ 1.3.11.1**

**स॒मु॒द्रं ग॑च्छ॒ स्वाहा॒ऽन्तरि॑क्षं गच्छ॒ स्वाहा॑ दे॒वꣳ स॑वि॒तारं॑ गच्छ॒ स्वाहा॑**

**ऽहोरा॒त्रे ग॑च्छ॒ स्वाहा॑ मि॒त्रावरु॑णौ गच्छ॒ स्वाहा॒ सोमं॑ गच्छ॒ स्वाहा॑**

**य॒ज्ञं ग॑च्छ॒ स्वाहा॒ छन्दा॑ꣳसि गच्छ॒ स्वाहा॒ द्यावा॑पृथि॒वी ग॑च्छ॒ स्वाहा॒**

**नभो॑ दि॒व्यं ग॑च्छ॒ स्वाहा॒ऽग्निं ꣲवै᳚श्वान॒रं ग॑च्छ॒ स्वाहा॒**

**ऽद्भ्यस्त्वौष॑धीभ्यो॒ मनो॑ मे॒ हार्दि॑ यच्छ त॒नूं त्वचं॑ पु॒त्रं नप्ता॑रमशीय॒**

**शुग॑सि॒ ( ) तम॒भि शो॑च॒ यो᳚ऽस्मान् द्वेष्टि॒ यं च॑ व॒यं द्वि॒ष्मो धाम्नो॑**

**धाम्नो राजन्नि॒तो व॑रुण नो मुञ्च॒ यदापो॒ अघ्नि॑या॒ वरु॒णेति॒ शपा॑महे॒**

**ततो॑ वरुण नो मुञ्च ॥ 20**

**(अ॒सि॒-षड्वि॑ꣳशतिश्च)(अ11)**

**तै॰सं॰ 1.3.12.1**

**ह॒विष्म॑तीरि॒मा आपो॑ ह॒विष्मा᳚न् दे॒वो अ॑द्ध्व॒रो ह॒विष्मा॒ꣳ आ**

**वि॑वासति ह॒विष्मा॑ꣳ अस्तु॒ सूर्यः॑ ॥**

**अ॒ग्नेर्वो ऽप॑न्नगृहस्य॒ सद॑सि सादयामि सु॒म्नाय॑ सुम्निनीः सु॒म्ने मा॑**

**धत्तेन्द्राग्नि॒यो र्भा॑ग॒धेयीः᳚ स्थ मि॒त्रावरु॑णयो र्भाग॒धेयीः᳚ स्थ॒ विश्वे॑षां**

**प्रथमकाण्डे-तृतीयः प्रश्न:**

**64**

**दे॒वानां᳚ भाग॒धेयीः᳚ स्थ य॒ज्ञे जा॑गृत ॥ 21**

**(ह॒विष्म॑ती॒-श्चतु॑स्त्रिꣳशत्) (अ12)**

**तै॰सं॰ 1.3.13.1**

**हृ॒दे त्वा॒ मन॑से त्वा दि॒वे त्वा॒ सूर्या॑य त्वो॒र्द्ध्वमि॒मम॑द्ध्व॒रं कृ॑धि दि॒वि**

**दे॒वेषु॒ होत्रा॑ यच्छ॒ सोम॑ राज॒न्नेह्यव॑ रोह॒ मा भेर्मा सं ꣲवि॑क्था॒ मा त्वा॑**

**हिꣳसिषं प्र॒जास्त्वमु॒पाव॑रोह प्र॒जास्त्वामु॒पाव॑रोहन्तु शृ॒णोत्व॒ग्निः**

**स॒मिधा॒ हवं॑ मे शृ॒ण्वन्त्वापो॑ धि॒षणा᳚श्च दे॒वीः ॥**

**शृ॒णोत॑ ग्रावाणो वि॒दुषो॒ नु - [ ] 22**

**तै॰सं॰ 1.3.13.2**

**य॒ज्ञꣳ शृ॒णोतु॑ दे॒वः स॑वि॒ता हवं॑ मे ।**

**देवी॑रापो अपां नपा॒द्य ऊ॒र्मिर्.ह॑वि॒ष्य॑ इन्द्रि॒यावा᳚न्-म॒दिन्त॑म॒स्तं दे॒वेभ्यो॑**

**देव॒त्रा ध॑त्त शु॒क्रꣳ शु॑क्र॒पेभ्यो॒ येषां᳚ भा॒गः स्थ स्वाहा॒**

**कार्.षि॑र॒स्यपा॒ऽपां मृ॒द्ध्रꣳ स॑मु॒द्रस्य॒ वोऽक्षि॑त्या॒ उन्न॑ये ॥**

**यम॑ग्ने पृ॒थ्सु मर्त्य॒मावो॒ वाजे॑षु॒ यं जु॒नाः ।**

**स यन्ता॒ शश्व॑ती॒रिषः॑ ॥ 23 (नु - स॒प्तच॑त्वारिꣳशच्च) (अ13)**

**प्रथमकाण्डे-तृतीयः प्रश्न:**

**65**

**तै॰सं॰ 1.3.14.1**

**त्वम॑ग्ने रु॒द्रो असु॑रो म॒हो दि॒वस्त्वꣳ शर्द्धो॒ मारु॑तं पृ॒क्ष ई॑शिषे ।**

**त्वं ꣲवातै॑ररु॒णैर्या॑सि शंग॒यस्त्वं पू॒षा वि॑ध॒तः पा॑सि॒ नुत्मना᳚ ॥**

**आ वो॒ राजा॑नमद्ध्व॒रस्य॑ रु॒द्रꣳ होता॑रꣳ सत्य॒यज॒ꣳ रोद॑स्योः ।**

**अ॒ग्निं पु॒रा त॑नयि॒त्नो र॒चित्ता॒-द्धिर॑ण्यरूप॒मव॑से कृणुद्ध्वं ॥**

**अ॒ग्निर्होता॒ नि ष॑सादा॒ यजी॑यानु॒पस्थे॑ मा॒तुः सु॑र॒भावु॑ लो॒के ।**

**युवा॑ क॒विः पु॑रुनि॒ष्ठ - [ ] 24**

**तै॰सं॰ 1.3.14.2**

**ऋ॒तावा॑ ध॒र्ता कृ॑ष्टी॒नामु॒त मद्ध्य॑ इ॒द्धः ॥**

**सा॒द्ध्वीम॑क र्दे॒ववी॑तिं नो अ॒द्य य॒ज्ञस्य॑ जि॒ह्वाम॑विदाम॒ गुह्यां᳚ ।**

**स आयु॒रा ऽगा᳚थ्सुर॒भि र्वसा॑नो भ॒द्राम॑क र्दे॒वहू॑तिं नो अ॒द्य ॥**

**अक्र॑न्दद॒ग्निः स्त॒नय॑न्निव॒ द्यौः क्षामा॒ रेरि॑हद्वी॒रुधः॑ सम॒ञ्जन्न् ।**

**स॒द्यो ज॑ज्ञा॒नो वि हीमि॒द्धो अख्य॒दा रोद॑सी भा॒नुना॑ भात्य॒न्तः ॥**

**त्वे वसू॑नि पुर्वणीक - [ ] 25**

**प्रथमकाण्डे-तृतीयः प्रश्न:**

**66**

**तै॰सं॰ 1.3.14.3**

**होतर्दो॒षा वस्तो॒रेरि॑रे य॒ज्ञिया॑सः ।**

**क्षामे॑व॒ विश्वा॒ भुव॑नानि॒ यस्मि॒न्थ्सꣳ सौभ॑गानि दधि॒रे पा॑व॒के ॥**

**तुभ्यं॒ ता अ॑ङ्गिरस्तम॒ विश्वाः᳚ सुक्षि॒तयः॒ पृथ॑क् । अग्ने॒ कामा॑य येमिरे ॥**

**अ॒श्याम॒ तं काम॑मग्ने॒ तवो॒ त्य॑श्याम॑ र॒यिꣳ र॑यिवः सु॒वीरं᳚ ।**

**अ॒श्याम॒ वाज॑म॒भि वा॒जय॑न्तो॒ ऽश्याम॑ द्यु॒म्नम॑जरा॒जरं॑ ते ॥**

**श्रेष्ठं॑ ꣲयविष्ठ भार॒ताग्ने᳚ द्यु॒मन्त॒मा भ॑र । 26**

**तै॰सं॰ 1.3.14.4**

**वसो॑ पुरु॒स्पृह॑ꣳ र॒यिं ॥**

**स श्वि॑ता॒नस्त॑न्य॒तू रो॑चन॒स्था अ॒जरे॑भि॒र् नान॑दद्भि॒र्यवि॑ष्ठः ।**

**यः पा॑व॒कः पु॑रु॒तमः॑ पु॒रूणि॑ पृ॒थून्य॒ग्निर॑नु॒याति॒ भर्वन्न्॑ ॥**

**आयु॑ष्टे वि॒श्वतो॑ दधद॒यम॒ग्नि र्वरे᳚ण्यः ।**

**पुन॑स्ते प्रा॒ण आऽय॑ति॒ परा॒ यक्ष्म॑ꣳ सुवामि ते ॥**

**आ॒यु॒र्दा अ॑ग्ने ह॒विषो॑ जुषा॒णो घृ॒तप्र॑तीको घृ॒तयो॑निरेधि ॥**

**घृ॒तं पी॒त्वा मधु॒ चारु॒ गव्यं॑ पि॒तेव॑ पु॒त्रम॒भि - [ ] 27**

**प्रथमकाण्डे-तृतीयः प्रश्न:**

**67**

**तै॰सं॰ 1.3.14.5**

**र॑क्षतादि॒मं ।**

**तस्मै॑ ते प्रति॒हर्य॑ते॒ जात॑वेदो॒ विच॑र्.षणे । अग्ने॒ जना॑मि सुष्टु॒तिं ॥**

**दि॒वस्परि॑ प्रथ॒मं ज॑ज्ञे अ॒ग्निर॒स्मद् द्वि॒तीयं॒ परि॑ जा॒तवे॑दाः ।**

**तृ॒तीय॑म॒फ्सु नृ॒मणा॒ अज॑स्र॒मिन्धा॑न एनं जरते स्वा॒धीः ॥**

**शुचिः॑ पावक॒ वन्द्योऽग्ने॑ बृ॒हद्वि रो॑चसे । त्वं घृ॒तेभि॒राहु॑तः ॥**

**दृ॒शा॒नो रु॒क्म उ॒र्व्या व्य॑द्यौद्-दु॒र्मर्.ष॒मायुः॑ श्रि॒ये रु॑चा॒नः ॥**

**अ॒ग्निर॒मृतो॑ अभव॒द्वयो॑भि॒ - [ ] 28**

**तै॰सं॰ 1.3.14.6**

**र्यदे॑नं॒ द्यौरज॑नयथ्सु॒रेताः᳚ ॥**

**आ यदि॒षे नृ॒पतिं॒ तेज॒ आन॒ट्छुचि॒ रेतो॒ निषि॑क्तं॒ द्यौर॒भीके᳚ ।**

**अ॒ग्निः शर्द्ध॑मनव॒द्यं ꣲयुवा॑नᳪ स्वा॒धियं॑ जनयथ्सू॒दय॑च्च ॥**

**स तेजी॑यसा॒ मन॑सा॒ त्वोत॑ उ॒त शि॑क्ष स्वप॒त्यस्य॑ शि॒क्षोः ।**

**अग्ने॑ रा॒यो नृत॑मस्य॒ प्रभू॑तौ भू॒याम॑ ते सुष्टु॒तय॑श्च॒ वस्वः॑ ॥**

**अग्ने॒ सह॑न्त॒मा भ॑र द्यु॒म्नस्य॑ प्रा॒सहा॑ र॒यिं ॥ विश्वा॒ य - [ ] 29**

**प्रथमकाण्डे-तृतीयः प्रश्न:**

**68**

**तै॰सं॰ 1.3.14.7**

**श्च॑र्.ष॒णीर॒भ्या॑सा वाजे॑षु सा॒सह॑त् ॥**

**तम॑ग्ने पृतना॒सह॑ꣳ र॒यिꣳ स॑हस्व॒ आ भ॑र ।**

**त्वꣳ हि स॒त्यो अद्भु॑तो दा॒ता वाज॑स्य॒ गोम॑तः ॥**

**उ॒क्षान्ना॑य व॒शान्ना॑य॒ सोम॑पृष्ठाय वे॒धसे᳚ ।**

**स्तोमै᳚ र्विधेमा॒ऽग्नये᳚ ॥ व॒द्मा हि सू॑नो॒ अस्य॑द्म॒सद्वा॑ च॒क्रे अ॒ग्नि**

**र्ज॒नुषा ऽज्माऽन्नं᳚ । स त्वं न॑ ऊर्जसन॒ ऊर्जं॑ धा॒ राजे॑व जेरवृ॒के**

**क्षे᳚ष्य॒न्तः ॥**

**अग्न॒ आयू॑ꣳषि - [ ] 30**

**तै॰सं॰ 1.3.14.8**

**पवस॒ आ सु॒वोर्ज॒मिषं॑ च नः । आ॒रे बा॑धस्व दु॒च्छुनां᳚ ॥**

**अग्ने॒ पव॑स्व॒ स्वपा॑ अ॒स्मे वर्चः॑ सु॒वीर्यं᳚ । दध॒त्पोष॑ꣳ र॒यिं मयि॑ ॥**

**अग्ने॑ पावक रो॒चिषा॑ म॒न्द्रया॑ देव जि॒ह्वया᳚ । आ दे॒वान् व॑क्षि॒ यक्षि॑ च ॥**

**स नः॑ पावक दीदि॒वोऽग्ने॑ दे॒वाꣳ इ॒हा व॑ह । उप॑ य॒ज्ञꣳ ह॒विश्च॑ नः ॥**

**अ॒ग्निः शुचि॑ व्रततमः॒ शुचि॒ र्विप्रः॒ शुचिः॑ ( ) क॒विः ।**

**प्रथमकाण्डे-तृतीयः प्रश्न:**

**69**

**शुची॑ रोचत॒ आहु॑तः ॥ उद॑ग्ने॒ शुच॑य॒स्तव॑ शु॒क्रा भ्राज॑न्त ईरते ।**

**तव॒ ज्योती॑ᳪष्य॒र्चयः॑ ॥ 31**

**(पु॒रु॒नि॒ष्ठः - पु॑र्वणीक - भरा॒ - ऽभि - वयो॑भि्ा॒ - र्य -**

**आयु॑ꣳषि - विप्रः॒ शुचि॒ -श्चतु॑र्दश च) (अ14)**

**ठय्ग्ल्फ्ग् ऍब्य्श्ग्त् ष्त्ळ्ण् ल्ळ्ग्य्ळ्त्फ्ञ् ठग्छ्ग्प्ल् ब्झ् 1 ळ्ब् 14 अफ्व्श्ग्ग्ध्ग्प्ल् :-**

**(दे॒वस्य॑-रक्षो॒हणो॑ -वि॒भू-स्त्वꣳ सो॒मा- ऽत्य॒न्यानगां᳚ - पृथि॒व्या -**

**इ॒षे त्वा - ऽऽद॑दे॒ वाक्त॒-संते॑- समु॒द्रꣳ- ह॒विष्म॑ती- र्हृ॒देत्वम॑ग्नेरु॒द्र-श्चतु॑र्दश । )**

**ऍब्य्श्ग्त् ष्त्ळ्ण् ल्ळ्ग्य्ळ्त्फ्ञ् ठग्छ्ग्प्ल् ब्झ् 1, 11, 21 दज्य्त्ज्ल् ब्झ् ठग्फ्च्ण्ग्ग्ळ्त्ल् :-**

**(दे॒वस्य॑-ग॒मध्ये॑-ह॒विष्म॑तीः-पवस॒-एक॑त्रिꣳशत्। )**

**ऊत्य्ल्ळ् ग्फ्छ् एग्ल्ळ् ठग्छ्ग्प् ब्झ् फण्त्य्छ् ठय्ग्ल्फ्ग्प्:-**

**(दे॒वस्या॒-ऽर्चयः॑।)**

**॥ हरिः॑ ओं ॥**

**॥ कृष्ण यजुर्वेदीय तैत्तिरीय संहितायां प्रथमकाण्डे**

**तृतीयः प्रश्नः समाप्तः ॥**

**प्रथमकाण्डे - चतुर्थः प्रश्न:**

**70**

**ओं नमः परमात्मने**

**, श्री महागणपतये नमः,**

**श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ह॒रिः॒ ओं**

**1.4 प्रथमकाण्डेचतुर्थ: प्रश्न: सुत्यादिने कर्तव्या ग्रहाः**

**तै॰सं॰ 1.4.1.1**

**आ द॑दे॒ ग्रावा᳚स्यद्ध्वर॒कृद् दे॒वेभ्यो॑-गंभी॒रमि॒म-म॑द्ध्व॒रं**

**कृ॑द्ध्युत्त॒मेन॑ प॒विनेन्द्रा॑य॒ सोम॒ꣳ सुषु॑तं॒ मधु॑मन्तं॒ पय॑स्वन्तं**

**ꣲवृष्टि॒वनि॒मिन्द्रा॑य त्वा वृत्र॒घ्न इन्द्रा॑य त्वा वृत्र॒तुर॒ इन्द्रा॑य त्वाऽभिमाति॒घ्न**

**इन्द्रा॑य त्वाऽऽदि॒त्यव॑त॒ इन्द्रा॑य त्वा वि॒श्वदे᳚व्यावते श्वा॒त्राः स्थ॑ वृत्र॒तुरो॒**

**राधो॑गूर्ता अ॒मृत॑स्य॒ पत्नी॒स्ता दे॑वीर्देव॒त्रेमं ꣲय॒ज्ञं ध॒त्तोप॑हूताः॒ सोम॑स्य**

**पिब॒तो प॑हूतो यु॒ष्माक॒ꣳ - [ ] 1**

**तै॰सं॰ 1.4.1.2**

**सोमः॑ पिबतु॒ यत्ते॑ सोम दि॒वि ज्योति॒र्यत् पृ॑थि॒व्यां ꣲयदु॒राव॒न्तरि॑क्षे॒**

**तेना॒स्मै यज॑मानायो॒रु रा॒या कृ॒द्ध्यधि॑ दा॒त्रे वो॑चो॒ धिष॑णे वी॒डू स॒ती**

**वी॑डयेथा॒ - मूर्जं॑ दधाथा॒मूर्जं॑ मे धत्तं॒ मा वा॑ꣳ हिꣳसिषं॒ मा मा॑**

**प्रथमकाण्डे - चतुर्थः प्रश्न:**

**71**

**हिꣳसिष्टं॒ प्रागपा॒गुद॑गध॒राक्तास्त्वा॒ दिश॒ आ धा॑व॒न्त्वंब॒ नि ष्व॑र ।**

**यत्ते॑ ( ) सो॒मादा᳚भ्यं॒ नाम॒ जागृ॑वि॒ तस्मै॑ ते सोम॒ सोमा॑य॒ स्वाहा᳚ ॥ 2**

**(यु॒ष्माक॑ᳪ - स्वर॒ यत्ते॒ - नव॑ च) (अ1)**

**तै॰सं॰ 1.4.2.1**

**वा॒चस्पत॑ये पवस्व वाजि॒न् वृषा॒ वृष्णो॑ अ॒ꣳशुभ्यां॒ गभ॑स्तिपूतो**

**दे॒वो दे॒वानां᳚ प॒वित्र॑मसि॒ येषां᳚ भा॒गोऽसि॒ तेभ्य॑स्त्वा॒ स्वांकृ॑तोऽसि॒**

**मधु॑मतीर्न॒ इष॑स्कृधि॒ विश्वे᳚भ्यस्त्वेन्द्रि॒येभ्यो॑ दि॒व्येभ्यः॒ पार्थि॑वेभ्यो॒**

**मन॑स्त्वा ऽष्टू॒र्व॑न्तरि॑क्ष॒ - मन्वि॑हि॒ स्वाहा᳚ त्वा सुभ॒वः सूर्या॑य**

**दे॒वेभ्य॑स्त्वा मरीचि॒पेभ्य॑ ए॒ष ते॒ योनिः॑ प्रा॒णाय॑ त्वा ॥ 3**

**(वा॒चः - स॒प्तच॑त्वारिꣳशत्) (अ2)**

**तै॰सं॰ 1.4.3.1**

**उ॒प॒या॒मगृ॑हीतो ऽस्य॒न्तर्य॑च्छ मघवन् पा॒हि सोम॑मुरु॒ष्य रायः॒ समिषो॑**

**यजस्वा॒ऽन्तस्ते॑ दधामि॒ द्यावा॑पृथि॒वी अ॒न्तरु॒र्व॑न्तरि॑क्षꣳ स॒जोषा॑**

**दे॒वैरव॑रैः॒ परै᳚श्चाऽन्तर्या॒मे म॑घवन् मादयस्व॒ स्वांकृ॑तोऽसि॒ मधु॑मतीर्न॒**

**इष॑स्कृधि॒ विश्वे᳚भ्यस्त्वेन्द्रि॒येभ्यो॑ दि॒व्येभ्यः॒ पार्थि॑वेभ्यो॒ मन॑स्त्वा**

**प्रथमकाण्डे - चतुर्थः प्रश्न:**

**72**

**ऽष्टू॒र्व॑न्तरि॑क्ष॒मन्वि॑हि॒ स्वाहा᳚ त्वा सुभवः॒ सूर्या॑य दे॒वेभ्य॑ ( )**

**स्त्वा मरीचि॒पेभ्य॑ ए॒ष ते॒ योनि॑रपा॒नाय॑ त्वा ॥ 4**

**(दे॒वेभ्यः॑ - स॒प्त च॑) (अ3)**

**तै॰सं॰ 1.4.4.1**

**आ वा॑यो भूष शुचिपा॒ उप॑ नः स॒हस्रं॑ ते नि॒युतो॑ विश्ववार ।**

**उपो॑ ते॒ अन्धो॒ मद्य॑मयामि॒ यस्य॑ देव दधि॒षे पू᳚र्व॒पेयं᳚ ॥**

**उ॒प॒या॒मगृ॑हीतोऽसि वा॒यवे॒ त्वेन्द्र॑वायू इ॒मे सु॒ताः ।**

**उप॒ प्रयो॑भि॒रा ग॑त॒मिन्द॑वो वामु॒शन्ति॒ हि ॥**

**उ॒प॒या॒मगृ॑हीतो-ऽसीन्द्रवा॒युभ्यां᳚ त्वै॒ष ते॒ योनिः॑ स॒जोषा᳚भ्यां त्वा ॥ 5**

**(आ वा॑यो॒ - त्रिच॑त्वारिꣳशत्) (अ4)**

**तै॰सं॰ 1.4.5.1**

**अ॒यं ꣲवां᳚ मित्रावरुणा सु॒तः सोम॑ ऋतावृधा । ममेदि॒ह श्रु॑त॒ꣳ हवं᳚ ।**

**उ॒प॒या॒मगृ॑हीतो-ऽसि मि॒त्रावरु॑णाभ्यां त्वै॒ष ते॒ योनि॑र्**

**ऋता॒युभ्यां᳚ त्वा ॥ 6**

**(अ॒यं ꣲवां᳚ - ꣲविꣳश॒तिः) (अ5)**

**प्रथमकाण्डे - चतुर्थः प्रश्न:**

**73**

**तै॰सं॰ 1.4.6.1**

**या वां॒ कशा॒ मधु॑म॒त्यश्वि॑ना सू॒नृता॑वती । तया॑ य॒ज्ञं मि॑मिक्षतं ।**

**उ॒प॒या॒मगृ॑हीतो-ऽस्य॒श्विभ्यां᳚ त्वै॒ष ते॒ योनि॒र्माद्ध्वी᳚भ्यां त्वा ॥ 7**

**(या वा॑ - म॒ष्टाद॑श) (अ6)**

**तै॰सं॰ 1.4.7.1**

**प्रा॒त॒र्युजौ॒ वि मु॑च्येथा॒-मश्वि॑ना॒वेह ग॑च्छतं । अ॒स्य सोम॑स्य पी॒तये᳚ ॥**

**उ॒प॒या॒मगृ॑हीतो-ऽस्य॒श्विभ्यां᳚ त्वै॒ष ते॒ योनि॑र॒श्विभ्यां᳚ त्वा ॥ 8**

**(प्रा॒त॒र्युजा॒वे - का॒न्न वि॑ꣳश॒तिः) (अ7)**

**तै॰सं॰ 1.4.8.1**

**अ॒यं ꣲवे॒नश्चो॑दय॒त् पृश्ञि॑गर्भा॒ ज्योति॑र्जरायू॒ रज॑सो वि॒माने᳚ ।**

**इ॒मम॒पाꣳ सं॑ग॒मे सूर्य॑स्य॒ शिशुं॒ न विप्रा॑ म॒तिभी॑ रिहन्ति ॥**

**उ॒प॒या॒मगृ॑हीतो-ऽसि॒ शण्डा॑य त्वै॒ष ते॒ योनि॑र्वी॒रतां᳚ पाहि ॥ 9**

**(अ॒यं ꣲवे॒नः - पञ्च॑विꣳशतिः) (अ8)**

**प्रथमकाण्डे - चतुर्थः प्रश्न:**

**74**

**तै॰सं॰ 1.4.9.1**

**तं प्र॒त्नथा॑ पू॒र्वथा॑ वि॒श्वथे॒मथा᳚ ज्ये॒ष्ठता॑तिं बर्.हि॒षद॑ꣳ सुव॒र्विदं॑**

**प्रतीची॒नं ꣲवृ॒जनं॑ दोहसे गि॒राऽऽशुं जय॑न्त॒मनु॒ यासु॒ वर्द्ध॑से ।**

**उ॒प॒या॒मगृ॑हीतो-ऽसि॒ मर्का॑य त्वै॒ष ते॒ योनिः॑ प्र॒जाः पा॑हि ॥ 10**

**(तं प्र॒त्नथा॒ - षट्वि॑ꣳशतिः) (अ9)**

**तै॰सं॰ 1.4.10.1**

**ये दे॑वा दि॒व्येका॑दश॒ स्थ पृ॑थि॒व्या-मद्ध्येका॑दश॒ स्थाऽफ्सु॒षदो॑**

**महि॒नैका॑दश॒ स्थ ते दे॑वा य॒ज्ञमि॒मं जु॑षद्ध्व-मुपया॒मगृ॑हीतोऽस्याग्रय॒णो॑ऽसि॒ स्वा᳚ग्रयणो॒ जिन्व॑ य॒ज्ञं जिन्व॑ य॒ज्ञप॑तिम॒भि सव॑ना**

**पाहि॒ विष्णु॒स्त्वां पा॑तु॒ विशं॒ त्वं पा॑हीन्द्रि॒येणै॒ष ते॒ योनि॒**

**र्विश्वे᳚भ्यस्त्वा दे॒वेभ्यः॑ ॥ 11**

**(ये दे॑वा॒ - स्त्रिच॑त्वारिꣳशत्) (अ10)**

**तै॰सं॰ 1.4.11.1**

**त्रि॒ꣳशत्त्रय॑श्च ग॒णिनो॑ रु॒जन्तो॒ दिव॑ꣳ रु॒द्राः पृ॑थि॒वीं च॑ सचन्ते ।**

**ए॒का॒द॒शासो॑ अफ्सु॒षदः॑ सु॒तꣳ सोमं॑ जुषन्ता॒ꣳ सव॑नाय॒ विश्वे᳚ ॥**

**प्रथमकाण्डे - चतुर्थः प्रश्न:**

**75**

**उ॒प॒या॒मगृ॑हीतो-ऽस्याग्रय॒णो॑ऽसि॒ स्वा᳚ग्रयणो॒ जिन्व॑ य॒ज्ञं जिन्व॑**

**य॒ज्ञप॑तिम॒भि सव॑ना पाहि॒ विष्णु॒स्त्वां पा॑तु॒ विशं॒ त्वं पा॑हीन्द्रि॒येणै॒ष**

**ते॒ योनि॒र्विश्वे᳚भ्यस्त्वा दे॒वेभ्यः॑ ॥ 12**

**(त्रि॒ꣳशत्त्रयो॒ - द्विच॑त्वारिꣳशत्) (अ11)**

**तै॰सं॰ 1.4.12.1**

**उ॒प॒या॒मगृ॑हीतो॒-ऽसीन्द्रा॑य त्वा बृ॒हद्व॑ते॒ वय॑स्वत उक्था॒युवे॒ यत्त॑**

**इन्द्र बृ॒हद्वय॒स्तस्मै᳚ त्वा॒ विष्ण॑वे त्वै॒ष ते॒ योनि॒रिन्द्रा॑य**

**त्वोक्था॒युवे᳚ ॥ 13 (उ॒प॒या॒मगृ॑हीतो॒ऽसीन्द्रा॑य॒ - द्वावि॑ꣳशतिः) (अ12)**

**तै॰सं॰ 1.4.13.1**

**मू॒र्द्धानं॑ दि॒वो अ॑र॒तिं पृ॑थि॒व्या वै᳚श्वान॒रमृ॒ताय॑ जा॒तम॒ग्निं ।**

**क॒विꣳ स॒म्राज॒-मति॑थिं॒ जना॑नामा॒सन्ना पात्रं॑ जनयन्त दे॒वाः ॥**

**उ॒प॒या॒मगृ॑हीतो-ऽस्य॒ग्नये᳚ त्वा वैश्वान॒राय॑ ध्रु॒वो॑ऽसि ध्रु॒वक्षि॑ति**

**र्ध्रु॒वाणां᳚ ध्रु॒वत॒मोऽच्यु॑ताना-मच्युत॒क्षित्त॑म ए॒ष ते॒ योनि॑र॒ग्नये᳚ त्वा**

**वैश्वान॒राय॑ ॥ 14 (मू॒र्द्धानं॒ - पञ्च॑त्रिꣳशत्) (अ13)**

**प्रथमकाण्डे - चतुर्थः प्रश्न:**

**76**

**तै॰सं॰ 1.4.14.1**

**मधु॑श्च॒ माध॑वश्च शु॒क्रश्च॒ शुचि॑श्च॒ नभ॑श्च नभ॒स्य॑श्चे॒षश्चो॒र्जश्च॒**

**सह॑श्च सह॒स्य॑श्च॒ तप॑श्च तप॒स्य॑श्चो-पया॒मगृ॑हीतोऽसि**

**स॒ꣳ सर्पो᳚ऽस्यꣳहस्प॒त्याय॑ त्वा ॥ 15**

**(मधु॑श्च - त्रि॒ꣳशत्) (अ14)**

**तै॰सं॰ 1.4.15.1**

**इन्द्रा᳚ग्नी॒ आ ग॑तꣳ सु॒तं गी॒र्भिर्नभो॒ वरे᳚ण्यं । अ॒स्य पा॑तं धि॒येषि॒ता ॥**

**उ॒प॒या॒मगृ॑हीतो - ऽसीन्द्रा॒ग्निभ्यां᳚ त्वै॒ष ते॒ योनि॑रिन्द्रा॒ग्निभ्यां᳚ त्वा ॥ 16**

**(इन्द्रा᳚ग्नी॒ विꣳश॒तिः) (अ15)**

**तै॰सं॰ 1.4.16.1**

**ओमा॑सश्चर्.षणीधृतो॒ विश्वे॑ देवास॒ आग॑त ।**

**दा॒श्वाꣳसो॑ दा॒शुषः॑ सु॒तं ॥**

**उ॒प॒या॒मगृ॑हीतो-ऽसि॒ विश्वे᳚भ्यस्त्वा दे॒वेभ्य॑ ए॒ष ते॒ योनि॒र्विश्वे᳚भ्यस्त्वा**

**दे॒वेभ्यः॑ ॥ 17 (ओमा॑सो विꣳश॒तिः) (अ16)**

**प्रथमकाण्डे - चतुर्थः प्रश्न:**

**77**

**तै॰सं॰ 1.4.17.1**

**म॒रुत्व॑न्तं ꣲवृष॒भं ꣲवा॑वृधा॒नमक॑वारिं दि॒व्यꣳ शा॒समिन्द्रं᳚ ।**

**वि॒श्वा॒साह॒मव॑से॒ नूत॑नायो॒ग्रꣳ स॑हो॒दामि॒ह तꣳ हु॑वेम ॥**

**उ॒प॒या॒मगृ॑हीतो॒-ऽसीन्द्रा॑य त्वा म॒रुत्व॑त ए॒ष ते॒ योनि॒रिन्द्रा॑य**

**त्वा म॒रुत्व॑ते ॥ 18 (म॒रुत्व॑न्त॒ꣳ - षट्वि॑ꣳशतिः) (अ17)**

**तै॰सं॰ 1.4.18.1**

**इन्द्र॑ मरुत्व इ॒ह पा॑हि सोमं॒ ꣲयथा॑ शार्या॒ते अपि॑बः सु॒तस्य॑ ।**

**तव॒ प्रणी॑ती॒ तव॑ शूर॒ शर्म॒न्ना-वि॑वासन्ति क॒वयः॑ सुय॒ज्ञाः ॥**

**उ॒प॒या॒मगृ॑हीतो॒-ऽसीन्द्रा॑य त्वा म॒रुत्व॑त ए॒ष ते॒ योनि॒रिन्द्रा॑य**

**त्वा म॒रुत्व॑ते ॥ 19 (इन्द्रै॒का॒न्न त्रि॒ꣳशत्) (अ18)**

**तै॰सं॰ 1.4.19.1**

**म॒रुत्वा॑ꣳ इन्द्र वृष॒भो रणा॑य॒ पिबा॒ सोम॑मनुष्व॒धं मदा॑य ।**

**आ सि॑ञ्चस्व ज॒ठरे॒ मद्ध्व॑ ऊ॒र्मिं त्वꣳ राजा॑ऽसि प्र॒दिवः॑ सु॒तानां᳚ ॥**

**उ॒प॒या॒मगृ॑हीतो॒-ऽसीन्द्रा॑य त्वा म॒रुत्व॑त ए॒ष ते॒ योनि॒रिन्द्रा॑य**

**त्वा म॒रुत्व॑ते ॥ 20 (म॒रुत्वा॒नेका॒न्न त्रि॒ꣳशत्) (अ19)**

**प्रथमकाण्डे - चतुर्थः प्रश्न:**

**78**

**तै॰सं॰ 1.4.20.1**

**म॒हाꣳ इन्द्रो॒ य ओज॑सा प॒र्जन्यो॑ वृष्टि॒माꣳ इ॑व ।**

**स्तोमै᳚र्व॒थ्सस्य॑ वावृधे ॥**

**उ॒प॒या॒मगृ॑हीतो-ऽसि महे॒न्द्राय॑ त्वै॒ष ते॒ योनि॑ र्महे॒न्द्राय त्वा ॥ 21**

**(म॒हानेका॒न्न - वि॑ꣳशतिः) (अ20)**

**तै॰सं॰ 1.4.21.1**

**म॒हाꣳ इन्द्रो॑ नृ॒वदा च॑र्.षणि॒प्रा उ॒त द्वि॒बर्.हा॑ अमि॒नः सहो॑भिः ।**

**अ॒स्म॒द्रिय॑ग्वावृधे वी॒र्या॑यो॒रुः पृ॒थुः सुकृ॑तः क॒र्तृभि॑र्भूत् ॥**

**उ॒प॒या॒मगृ॑हीतो - ऽसि महे॒न्द्राय॑ त्वै॒ष ते॒ योनि॑र्महे॒न्द्राय॑ त्वा ॥ 22**

**(म॒हान् नृ॒वथ् - षड्वि॑ꣳशतिः) (अ21)**

**तै॰सं॰ 1.4.22.1**

**क॒दा च॒न स्त॒रीर॑सि॒ नेन्द्र॑ सश्चसि दा॒शुषे᳚ ।**

**उपो॒पेन्नु म॑घव॒न् भूय॒ इन्नु ते॒ दानं॑ दे॒वस्य॑ पृच्यते ॥**

**उ॒प॒या॒मगृ॑हीतोऽस्या-दि॒त्येभ्य॑स्त्वा ॥**

**क॒दा च॒न प्र यु॑च्छस्यु॒भे नि पा॑सि॒ जन्म॑नी ।**

**तुरी॑यादित्य॒ सव॑नं त इन्द्रि॒यमा त॑स्था-व॒मृतं॑ दि॒वि ॥**

**प्रथमकाण्डे - चतुर्थः प्रश्न:**

**79**

**य॒ज्ञो दे॒वानां॒ प्रत्ये॑ति सु॒म्नमादि॑त्यासो॒ भव॑ता मृड॒यन्तः॑ ॥**

**आ वो॒ ( ) ऽर्वाची॑ सुम॒ति-र्व॑वृत्याद॒ꣳ होश्चि॒द्या व॑रिवो॒वित्त॒राऽस॑त् ॥**

**विव॑स्व आदित्यै॒ष ते॑ सोमपी॒थस्तेन॑ मन्दस्व॒ तेन॑ तृप्य तृ॒प्यास्म॑**

**ते व॒यं त॑र्पयि॒तारो॒ या दि॒व्या वृष्टि॒स्तया᳚ त्वा श्रीणामि ॥ 23**

**(वः॒ - स॒प्तवि॑ꣳशतिश्च) (अ22)**

**तै॰सं॰ 1.4.23.1**

**वा॒मम॒द्य स॑वितर्वा॒ममु॒ श्वो दि॒वेदि॑वे वा॒मम॒स्मभ्य॑ꣳ सावीः ।**

**वा॒मस्य॒ हि क्षय॑स्य देव॒ भूरे॑र॒या धि॒या वा॑म॒भाजः॑ स्याम ॥**

**उ॒प॒या॒मगृ॑हीतो - ऽसि दे॒वाय॑ त्वा सवि॒त्रे ॥ 24**

**(वा॒मं - चतु॑र्विꣳशतिः) (अ23)**

**तै॰सं॰ 1.4.24.1**

**अद॑ब्धेभिः सवितः पा॒युभि॒ष्ट्वꣳ शि॒वेभि॑र॒द्य परि॑ पाहि नो॒ गयं᳚ ।**

**हिर॑ण्यजिह्वः सुवि॒ताय॒ नव्य॑से॒ रक्षा॒ माकि॑र्नो अ॒घश॑ꣳस ईशत ॥**

**उ॒प॒या॒मगृ॑हीतोऽसि दे॒वाय॑ त्वा सवि॒त्रे ॥ 25**

**(अद॑ब्धेभि॒ - स्त्रियो॑विꣳशतिः) (अ24)**

**प्रथमकाण्डे - चतुर्थः प्रश्न:**

**80**

**तै॰सं॰ 1.4.25.1**

**हिर॑ण्यपाणिमू॒तये॑ सवि॒तार॒मुप॑ ह्वये । स चेत्ता॑ दे॒वता॑ प॒दं ॥**

**उ॒प॒या॒मगृ॑हीतो-ऽसि दे॒वाय॑ त्वा सवि॒त्रे ॥ 26**

**(हिर॑ण्यपाणिं॒ - चतु॑र्दश) (अ25)**

**तै॰सं॰ 1.4.26.1**

**सु॒शर्मा॑ऽसि सुप्रतिष्ठा॒नो बृ॒हदु॒क्षे नम॑ ए॒ष ते॒ योनि॒**

**र्विश्वे᳚भ्यस्त्वा दे॒वेभ्यः॑ ॥ 27 (सु॒शर्मा॒ - द्वाद॑श) (अ26)**

**तै॰सं॰ 1.4.27.1**

**बृह॒स्पति॑-सुतस्य त इन्दो इन्द्रि॒याव॑तः॒ पत्नी॑वन्तं॒ ग्रहं॑**

**गृह्णा॒म्यग्रा(3)इ पत्नी॒वा(3) स्स॒जूर्दे॒वेन॒ त्वष्ट्रा॒ सोमं॑ पिब॒ स्वाहा᳚ ॥ 28**

**(बृह॒स्पति॑सुतस्य॒ - पञ्च॑दश) (अ27)**

**तै॰सं॰ 1.4.28.1**

**हरि॑रसि हारियोज॒नो हर्योः᳚ स्था॒ता वज्र॑स्य भ॒र्ता पृश्नेः᳚ प्रे॒ता तस्य॑ ते**

**देव सोमे॒ष्टय॑जुषः स्तु॒तस्तो॑मस्य श॒स्तोक्थ॑स्य॒ हरि॑वन्तं॒ ग्रहं॑ गृह्णामि**

**ह॒रीः स्थ॒ हर्यो᳚र्द्धा॒नाः स॒हसो॑मा॒ इन्द्रा॑य॒ स्वाहा᳚ ॥ 29**

**(हरि॑रसि॒ - षड्वि॑ꣳशतिः) (अ28)**

**प्रथमकाण्डे - चतुर्थः प्रश्न:**

**81**

**तै॰सं॰ 1.4.29.1**

**अग्न॒ आयू॑ꣳषि पवस॒ आ सु॒वोर्ज॒मिषं॑ च नः ।**

**आ॒रे बा॑धस्व दु॒च्छुनां᳚ ॥**

**उ॒प॒या॒मगृ॑हीतो-ऽस्य॒ग्नये᳚ त्वा॒ तेज॑स्वत ए॒ष ते॒ योनि॑र॒ग्नये᳚ त्वा॒**

**तेज॑स्वते ॥ 30 (अग्न॒ आयू॑ꣳषि॒ - त्रयो॑विꣳशतिः) (अ29)**

**तै॰सं॰ 1.4.30.1**

**उ॒त्तिष्ठ॒न्नोज॑सा स॒ह पी॒त्वा शिप्रे॑ अवेपयः । सोम॑मिन्द्र च॒मू सु॒तं ॥**

**उ॒प॒या॒मगृ॑हीतो॒-ऽसीन्द्रा॑य॒ त्वौज॑स्वत ए॒ष ते॒ योनि॒रिन्द्रा॑य॒**

**त्वौज॑स्वते ॥ 31 (उ॒त्तिष्ठ॒न्नेक॑विꣳशतिः) (अ30)**

**तै॰सं॰ 1.4.31.1**

**त॒रणि॑ र्वि॒श्वद॑र्.शतो ज्योति॒ष्कृद॑सि सूर्य । विश्व॒मा भा॑सि रोच॒नं ॥**

**उ॒प॒या॒मगृ॑हीतो - ऽसि॒ सूर्या॑य त्वा॒ भ्राज॑स्वत ए॒ष ते॒ योनिः॒ सूर्या॑य**

**त्वा॒ भ्राज॑स्वते ॥ 32 (त॒रणि॑ - र्विꣳश॒तिः) (अ31)**

**तै॰सं॰ 1.4.32.1**

**आ प्या॑यस्व मदिन्तम॒ सोम॒ विश्वा॑भि-रू॒तिभिः॑ ।**

**भवा॑ नः स॒प्रथ॑स्तमः ॥ 33 (आ प्या॑यस्व॒ - नव॑) (अ32)**

**प्रथमकाण्डे - चतुर्थः प्रश्न:**

**82**

**तै॰सं॰ 1.4.33.1**

**ई॒युष्टे ये पूर्व॑तरा॒मप॑श्यन् व्यु॒च्छन्ती॑मु॒षसं॒ मर्त्या॑सः ।**

**अ॒स्माभि॑रू॒ नु प्र॑ति॒चक्ष्या॑ऽभू॒दो ते य॑न्ति॒ ये अ॑प॒रीषु॒ पश्यान्॑ ॥ 34**

**(ई॒यु - रेका॒न्न िव॑ꣳशतिः) (अ33)**

**तै॰सं॰ 1.4.34.1**

**ज्योति॑ष्मतीं त्वा सादयामि ज्योति॒ष्कृतं॑ त्वा सादयामि**

**ज्योति॒र्विदं॑ त्वा सादयामि॒ भास्व॑तीं त्वा सादयामि॒**

**ज्वल॑न्तीं त्वा सादयामि मल्मला॒भव॑न्तीं त्वा सादयामि॒**

**दीप्य॑मानां त्वा सादयामि॒ रोच॑मानां त्वा सादया॒म्यज॑स्रां**

**त्वा सादयामि बृ॒हज्ज्यो॑तिषं त्वा सादयामि**

**बो॒धय॑न्तीं त्वा सादयामि॒ जाग्र॑तीं त्वा सादयामि ॥ 35**

**(ज्योति॑ष्मती॒ꣳ - षट्त्रि॑ꣳशत्) (अ34)**

**तै॰सं॰ 1.4.35.1**

**प्र॒या॒साय॒ स्वाहा॑ ऽऽया॒साय॒ स्वाहा॑ विया॒साय॒ स्वाहा॑ संꣲया॒साय॒**

**स्वाहो᳚द्या॒साय॒ स्वाहा॑ऽवया॒साय॒ स्वाहा॑ शु॒चे स्वाहा॒ शोका॑य॒ स्वाहा॑**

**प्रथमकाण्डे - चतुर्थः प्रश्न:**

**83**

**तप्य॒त्वै स्वाहा॒ तप॑ते॒ स्वाहा᳚ ब्रह्मह॒त्यायै॒ स्वाहा॒ सर्व॑स्मै॒ स्वाहा᳚ ॥ 36**

**(प्र॒या॒साय॒ - चतु॑र्विꣳशतिः) (अ35)**

**तै॰सं॰ 1.4.36.1**

**चि॒त्तꣳ सं॑ता॒नेन॑ भ॒वं ꣲय॒क्ना रु॒द्रं तनि॑म्ना पशु॒पति॑ᳪस्थूल-**

**हृद॒येना॒ग्निꣳ हृद॑येन रु॒द्रं ꣲलोहि॑तेन श॒र्वं मत॑स्नाभ्यां महादे॒वम॒न्तः**

**पा᳚र्श्वेनौषिष्ठ॒हन॑ꣳ शिङ्गी-निको॒श्या᳚भ्यां ॥ 37**

**(चि॒त्त - म॒ष्टाद॑श) (अ36)**

**तै॰सं॰ 1.4.37.1**

**आ ति॑ष्ठ वृत्रह॒न् रथं॑ ꣲयु॒क्ता ते॒ ब्रह्म॑णा॒ हरी᳚ ।**

**अ॒र्वा॒चीन॒ꣳ सु ते॒ मनो॒ ग्रावा॑ कृणोतु व॒ग्नुना᳚ ॥**

**उ॒प॒या॒मगृ॑हीतो॒ऽसीन्द्रा॑य त्वा षोड॒शिन॑ ए॒ष ते॒ योनि॒रिन्द्रा॑य**

**त्वा षोड॒शिने᳚ ॥ 38 (आ ति॑ष्ट॒ - षट्वि॑ꣳशतिः) (अ37)**

**तै॰सं॰ 1.4.38.1**

**इन्द्र॒मिद्धरी॑ वह॒तो-ऽप्र॑तिधृष्ट-शवस॒मृषी॑णां च स्तु॒तीरुप॑**

**य॒ज्ञं च॒ मानु॑षाणां ॥**

**प्रथमकाण्डे - चतुर्थः प्रश्न:**

**84**

**उ॒प॒या॒मगृ॑हीतो॒ऽसीन्द्रा॑य त्वा षोड॒शिन॑ ए॒ष ते॒ योनि॒रिन्द्रा॑य**

**त्वा षोड॒शिने᳚ ॥ 39 (इन्द्र॒मित् - त्रयो॑विꣳशतिः) (अ38)**

**तै॰सं॰ 1.4.39.1**

**असा॑वि॒ सोम॑ इन्द्र ते॒ शवि॑ष्ठ धृष्ण॒वा ग॑हि ।**

**आ त्वा॑ पृणक्त्विन्द्रि॒यꣳ रजः॒ सूर्यं॒ न र॒श्मिभिः॑ ॥**

**उ॒प॒या॒मगृ॑हीतो॒ऽसीन्द्रा॑य त्वा षोड॒शिन॑ ए॒ष ते॒ योनि॒रिन्द्रा॑य**

**त्वा षोड॒शिने᳚ ॥ 40 (असा॑वि - स॒प्तवि॑ꣳशतिः) (अ39)**

**तै॰सं॰ 1.4.40.1**

**सर्व॑स्य प्रति॒शीव॑री॒ भूमि॑स्त्वो॒पस्थ॒ आऽधि॑त ।**

**स्यो॒नाऽस्मै॑ सु॒षदा॑ भव॒ यच्छा᳚ऽस्मै॒ शर्म॑ स॒प्रथाः᳚ ॥**

**उ॒प॒या॒मगृ॑हीतो॒ऽसीन्द्रा॑य त्वा षोड॒शिन॑ ए॒ष ते॒ योनि॒रिन्द्रा॑य**

**त्वा षोड॒शिने᳚ ॥ 41 (सर्व॑स्य॒ षड्वि॑ꣳशतिः) (अ40)**

**तै॰सं॰ 1.4.41.1**

**म॒हाꣳ इन्द्रो॒ वज्र॑ बाहुः षोड॒शी शर्म॑ यच्छतु ।**

**स्व॒स्ति नो॑ म॒घवा॑ करोतु॒ हन्तु॑ पा॒प्मानं॒ ꣲयो᳚ऽस्मान् द्वेष्टि॑ ॥**

**प्रथमकाण्डे - चतुर्थः प्रश्न:**

**85**

**उ॒प॒या॒मगृ॑हीतो॒ऽसीन्द्रा॑य त्वा षोड॒शिन॑ ए॒ष ते॒ योनि॒रिन्द्रा॑य**

**त्वा षोड॒शिने᳚ ॥ 42 (म॒हान् - षड्वि॑ꣳशतिः) (अ41)**

**तै॰सं॰ 1.4.42.1**

**स॒जोषा॑ इन्द्रः॒ सग॑णो म॒रुद्भिः॒ सोमं॑ पिब वृत्रहञ्छूर वि॒द्वान् ।**

**ज॒हि शत्रू॒ꣳ रप॒ मृधो॑ नुद॒स्वाऽथा भ॑यं कृणुहि वि॒श्वतो॑ नः ॥**

**उ॒प॒या॒मगृ॑हीतो॒ऽसीन्द्रा॑य त्वा षोड॒शिन॑ ए॒ष ते॒ योनि॒रिन्द्रा॑य त्वा**

**षोड॒शिने᳚ ॥ 43 (स॒जोषा᳚ - त्रि॒ꣳशत्) (अ42)**

**तै॰सं॰ 1.4.43.1**

**उदु॒ त्यं जा॒तवे॑दसं दे॒वं ꣲव॑हन्ति के॒तवः॑ । दृ॒शे विश्वा॑य॒ सूर्यं᳚ ॥**

**चि॒त्रं दे॒वाना॒-मुद॑गा॒दनी॑कं॒ चक्षु॑ र्मि॒त्रस्य॒ वरु॑णस्या॒ऽग्नेः ।**

**आऽप्रा॒ द्यावा॑पृथि॒वी अ॒न्तरि॑क्ष॒ꣳ सूर्य॑ आ॒त्मा जग॑तस्त॒स्थुष॑श्च ॥**

**अग्ने॒ नय॑ सु॒पथा॑ रा॒ये अ॒स्मान् विश्वा॑नि देव व॒युना॑नि वि॒द्वान् ।**

**यु॒यो॒द्ध्य॑स्म-ज्जु॑हुरा॒ण मेनो॒ भूयि॑ष्ठां ते॒ नम॑ उक्तिं विधेम ॥**

**दिवं॑ गच्छ॒ सुवः॑ पत रू॒पेण॑ - [ ] 44**

**प्रथमकाण्डे - चतुर्थः प्रश्न:**

**86**

**तै॰सं॰ 1.4.43.2**

**वो रू॒पम॒भ्यैमि॒ वय॑सा॒ वयः॑ ।**

**तु॒थो वो॑ वि॒श्व वे॑दा॒ वि भ॑जतु॒ वर्.षि॑ष्ठे॒ अधि॒ नाके᳚ ॥**

**ए॒तत्ते॑ अग्ने॒ राध॒ ऐति॒ सोम॑च्युतं॒ तन्मि॒त्रस्य॑ प॒था न॑य॒र्तस्य॑ प॒था प्रेत॑**

**च॒न्द्रद॑क्षिणा य॒ज्ञस्य॑ प॒था सु॑वि॒ता नय॑न्ती र्ब्राह्म॒णम॒द्य**

**रा᳚द्ध्यास॒मृषि॑मार्.षे॒यं पि॑तृ॒मन्तं॑ पैतृम॒त्यꣳ सु॒धातु॑दक्षिणं॒ ꣲवि सुवः॒**

**पश्य॒ व्य॑न्तरि॑क्षं॒ ꣲयत॑स्व सद॒स्यै॑ ( ) र॒स्मद्दा᳚त्रा देव॒त्रा ग॑च्छत॒**

**मधु॑मतीः प्रदा॒तार॒मा वि॑श॒ताऽन॑वहाया॒ऽस्मान् दे॑व॒याने॑न प॒थेत॑ सु॒कृतां᳚**

**ꣲलो॒के सी॑द॒त तन्नः॑ सᳪस्कृ॒तं ॥ 45**

**(रू॒पेण॑ - सद॒स्यै॑ - र॒ष्टाद॑श च) (अ43)**

**तै॰सं॰ 1.4.44.1**

**धा॒ता रा॒तिः स॑वि॒तेदं जु॑षन्तां प्र॒जाप॑ति र्निधि॒पति॑र्नो अ॒ग्निः ।**

**त्वष्टा॒ विष्णुः॑ प्र॒जया॑ सꣳ ररा॒णो यज॑मानाय॒ द्रवि॑णं दधातु ॥**

**समि॑न्द्र णो॒ मन॑सा नेषि॒ गोभिः॒ सꣳ सू॒रिभि॑र्मघव॒न्थ् सᳪ स्व॒स्त्या ।**

**सं ब्रह्म॑णा दे॒व कृ॑तं॒ ꣲयदस्ति॒ सं दे॒वाना॑ꣳ सुम॒त्या य॒ज्ञिया॑नां ॥**

**प्रथमकाण्डे - चतुर्थः प्रश्न:**

**87**

**सं ꣲवर्च॑सा॒ पय॑सा॒ सं त॒नूभि॒ - रग॑न्महि॒ मन॑सा॒ सꣳ शि॒वेन॑ ॥**

**त्वष्टा॑ नो॒ अत्र॒ वरि॑वः कृणो॒ - [ ] 46**

**तै॰सं॰ 1.4.44.2**

**त्वनु॑ मार्ष्टु त॒नुवो॒ यद्विलि॑ष्टं ॥**

**यद॒द्य त्वा᳚ प्रय॒ति य॒ज्ञे अ॒स्मिन्नग्ने॒ होता॑र॒मवृ॑णीमही॒ह ।**

**ऋध॑गया॒डृध॑गु॒ताऽश॑मिष्ठाः प्रजा॒नन् य॒ज्ञमुप॑ याहि वि॒द्वान् ॥**

**स्व॒गा वो॑ देवाः॒ सद॑नमकर्म॒ य आ॑ज॒ग्म सव॑ने॒दं जु॑षा॒णाः ।**

**ज॒क्षि॒वाꣳसः॑ पपि॒वाꣳस॑श्च॒ विश्वे॒ऽस्मे ध॑त्त वसवो॒ वसू॑नि ॥**

**यानाऽव॑ह उश॒तो दे॑व दे॒वान् तान् - [ ] 47**

**तै॰सं॰ 1.4.44.3**

**प्रेर॑य॒ स्वे अ॑ग्ने स॒धस्थे᳚ ।**

**वह॑माना॒ भर॑माणा ह॒वीꣳषि॒ वसुं॑ घ॒र्मं दिव॒मा ति॑ष्ठ॒तानु॑ ॥**

**यज्ञ॑ य॒ज्ञं ग॑च्छ य॒ज्ञप॑तिं गच्छ॒ स्वां ꣲयोनिं॑ गच्छ॒ स्वाहै॒ष ते॑ य॒ज्ञो**

**य॑ज्ञपते स॒हसू᳚क्तवाकः सु॒वीरः॒ स्वाहा॒ देवा॑ गातुविदो गा॒तुं ꣲवि॒त्त्वा**

**प्रथमकाण्डे - चतुर्थः प्रश्न:**

**88**

**गा॒तुमि॑त॒ मन॑सस्पत इ॒मं नो॑ देव दे॒वेषु॑ य॒ज्ञᳪ स्वाहा॑ वा॒चि स्वाहा॒**

**वाते॑ धाः ॥ 48 (कृ॒णो॒तु॒ - तान॒ - ष्टाच॑त्वारिꣳशच्च )(अ44 )**

**तै॰सं॰ 1.4.45.1**

**उ॒रुꣳ हि राजा॒ वरु॑णश्च॒कार॒ सूर्या॑य॒ पन्था॒मन्वे॑त॒वा उ॑ ।**

**अ॒पदे॒ पादा॒ प्रति॑धातवे - ऽकरु॒ता - ऽप॑व॒क्ता हृ॑दया॒विध॑श्चित् ॥**

**श॒तं ते॑ राजन् भि॒षजः॑ स॒हस्र॑मु॒र्वी गं॑भी॒रा सु॑म॒तिष्टे॑ अस्तु ।**

**बाध॑स्व॒ द्वेषो॒ निर्.ऋ॑तिं परा॒चैः कृ॒तं चि॒देनः॒ प्र मु॑मुग्ध्य॒स्मत् ॥**

**अ॒भिष्ठि॑तो॒ वरु॑णस्य॒ पाशो॒ऽग्नेरनी॑कम॒प आ वि॑वेश ।**

**अपा᳚न्नपात् प्रति॒रक्ष॑न्न सु॒र्यं॑ दमे॑दमे - [ ] 49**

**तै॰सं॰ 1.4.45.2**

**स॒मि्ाधं॑ ꣲयक्ष्यग्ने ।**

**प्रति॑ ते जि॒ह्वा घृ॒तमुच्च॑रण्येथ् समु॒द्रे ते॒ हृद॑यम॒फ्स्व॑न्तः ।**

**सं त्वा॑ विश॒न्त्वोष॑धी-रु॒ताऽऽपो॑ य॒ज्ञस्य॑ त्वा यज्ञपते ह॒विर्भिः॑ ।**

**सू॒क्त॒वा॒के न॑मोवा॒के वि॑धे॒माऽव॑भृथ नि चङ्कुण निचे॒रुर॑सि नि**

**प्रथमकाण्डे - चतुर्थः प्रश्न:**

**89**

**चङ्कु॒णाऽव॑ दे॒वैर्दे॒व-कृ॑त॒मेनो॑ऽया॒डव॒ मर्त्यै॒र्मर्त्य॑-कृतमु॒रोरा नो॑ देव**

**रि॒षस्पा॑हि सुमि॒त्रा न॒ आप॒ ओष॑धयः - [ ] 50**

**तै॰सं॰ 1.4.45.3**

**सन्तु दुर्मि॒त्रास्तस्मै॑ भूयासु॒ र्यो᳚ऽस्मान् द्वेष्टि॒ यं च॑ व॒यं द्वि॒ष्मो**

**देवी॑राप ए॒ष वो॒ गर्भ॒स्तं ꣲवः॒ सुप्री॑त॒ꣳ सुभृ॑तमकर्म**

**दे॒वेषु॑ नः सु॒कृतो᳚ ब्रूता॒त्-प्रति॑युतो॒ वरु॑णस्य॒ पाशः॒ प्रत्य॑स्तो॒**

**वरु॑णस्य॒ पाश॒ एधो᳚ऽस्येधिषी॒महि॑ स॒मिद॑सि॒ तेजो॑ऽसि तेजो॒ मयि॑**

**धेह्य॒पो अन्व॑चारिष॒ꣳ रसे॑न॒ सम॑सृक्ष्महि ।**

**पय॑स्वाꣳ अग्न॒ आ ( ) ऽग॑मं॒ तं मा॒ सꣳ सृ॑ज॒ वर्च॑सा ॥ 51**

**(दमे॑दम॒ - ओष॑धय॒ - आ - षट्च॑) (अ45)**

**तै॰सं॰ 1.4.46.1**

**यस्त्वा॑ हृ॒दा की॒रिणा॒ मन्य॑मा॒नो ऽम॑र्त्यं॒ मर्त्यो॒ जोह॑वीमि ।**

**जात॑वेदो॒ यशो॑ अ॒स्मासु॑ धेहि प्र॒जाभि॑रग्ने अमृत॒त्वम॑श्यां ॥**

**यस्मै॒ त्वꣳ सु॒कृते॑ जातवेद॒ उ लो॒कम॑ग्ने कृ॒णवः॑ स्यो॒नं ।**

**अ॒श्विन॒ꣳ स पु॒त्रिणं॑ वी॒रव॑न्तं॒ गोम॑न्तꣳ र॒यिं न॑शते स्व॒स्ति ॥**

**प्रथमकाण्डे - चतुर्थः प्रश्न:**

**90**

**त्वे सु पु॑त्र शव॒सोऽवृ॑त्र॒न् काम॑ कातयः । न त्वामि॒न्द्राति॑ रिच्यते ॥**

**उ॒क्थ-उ॑क्थे॒ सोम॒ इन्द्रं॑ ममाद नी॒थेनी॑थे म॒घवा॑नꣳ - [ ] 52**

**तै॰सं॰ 1.4.46.2**

**सु॒तासः॑ ।**

**यदी॑ꣳ स॒बाधः॑ पि॒तरं॒ न पु॒त्राः स॑मा॒नद॑क्षा॒ अव॑से॒ हव॑न्ते ॥**

**अग्ने॒ रसे॑न॒ तेज॑सा॒ जात॑वेदो॒ वि रो॑चसे । र॒क्षो॒हाऽमी॑व॒चात॑नः ॥**

**अ॒पो अन्व॑चारिष॒ꣳ रसे॑न॒ सम॑सृक्ष्महि ।**

**पय॑स्वाꣳ अग्न॒ आऽग॑मं॒ तं मा॒ सꣳ सृ॑ज॒ वर्च॑सा ॥**

**वसु॒र्वसु॑पति॒र्. हिक॒मस्य॑ग्ने वि॒भाव॑सुः । स्याम॑ ते सुम॒तावपि॑ ॥**

**त्वाम॑ग्ने॒ वसु॑पतिं॒ ꣲवसू॑नाम॒भि प्र म॑न्दे - [ ] 53**

**तै॰सं॰ 1.4.46.3**

**अद्ध्व॒रेषु॑ राजन्न् ।**

**त्वया॒ वाजं॑ ꣲवाज॒यन्तो॑ जयेमा॒ऽभि ष्या॑म पृथ्सु॒ती र्मर्त्या॑नां ।**

**त्वाम॑ग्ने वाज॒सात॑मं॒ ꣲविप्रा॑ वर्द्धन्ति॒ सुष्टु॑तं । स नो॑ रास्व सु॒वीर्यं᳚ ॥**

**अ॒यं नो॑ अ॒ग्निर्वरि॑वः कृणोत्व॒यं मृधः॑ पु॒र ए॑तु प्रभि॒न्दन्न् ।**

**प्रथमकाण्डे - चतुर्थः प्रश्न:**

**91**

**अ॒यꣳ शत्रू᳚ञ्जयतु॒ जर्.हृ॑षाणो॒ऽयं ꣲवाजं॑ जयतु॒ वाज॑सातौ ॥**

**अ॒ग्निना॒ऽग्निः समि॑द्ध्यते क॒वि र्गृ॒हप॑ति॒ र्युवा᳚ ।**

**ह॒व्य॒वाड्-जु॒ह्वा᳚स्यः ॥**

**त्वᳪ ह्य॑ग्ने ( ) अ॒ग्निना॒ विप्रो॒ विप्रे॑ण॒ सन्थ्स॒ता ।**

**सखा॒ सख्या॑ समि॒द्ध्यसे᳚ ॥**

**उद॑ग्ने॒ शुच॑य॒स्तव॒ >**

**1**

**, वि ज्योति॑षा >**

**2**

**॥ 54**

**(म॒घवा॑नं - मन्दे॒ - ह्य॑ग्ने॒ - चतु॑र्दश च) (अ46)**

**प्रथमकाण्डे - चतुर्थः प्रश्न:**

**92**

**ठय्ग्ल्फ्ग् ऍब्य्श्ग्त् ष्त्ळ्ण् ल्ळ्ग्य्ळ्त्फ्ञ् ठग्छ्ग्प्ल् ब्झ् 1 ळ्ब् 46 अफ्व्श्ग्ग्ध्ग्प्ल् :-**

**आ द॑दे-वा॒चस्पत॑ये-उपया॒मगृ॑हीतो॒ऽस्या वा॑यो - अ॒यं ꣲवां॒ -**

**ꣲयावं᳚-प्रात॒र्युजा॑-व॒यं-तं -ꣲये दे॑वा-स्त्रि॒ꣳश- दु॑पया॒मगृ॑हीतोऽसीमू॒र्द्धानं॒-मधु॒श्चे-न्द्रा᳚ग्नि॒ ओमा॑सो-म॒रुत्व॑न्त॒-**

**मिन्द्र॑ मरुत्वो-म॒रुत्वा᳚न्-म॒हान्-म॒हान्नु॒वत्-क॒दा-वा॒म-मद॑ब्धेभि॒**

**र्हिर॑ण्यपाणिꣳ-सु॒शर्मा॒-बृह॒स्पति॑ सुतस्य॒ - हरि॑र॒स्य-ग्न॑- उ॒**

**त्तिष्ठ॑न्-त॒रणि॒-राप्या॑यस्वे॒-युष्टे ये- ज्योति॑ष्मतीं- प्रया॒साय॑- चि॒त्तमाति॒ष्ठे-न्द्र॒-मसा॑वि॒-सर्व॑स्य-म॒हान्थ्-स॒जोषा॒-**

**उदु॒त्यं-धा॒तो-रुꣳ हि-य-स्त्वा॒ षट्च॑त्वारिꣳशत् ।**

**दभ्ज्च्त्ग्न् ऍब्य्श्ग्त् झ्ब्य् ळ्ण्त्ल् ठय्ग्ल्फ्ग्प्:-**

**वा॒च प्रा॒णाय॑ त्वा । उ॒प॒या॒मगृ॑हीतोऽस्यपा॒नाय॑ त्वा ।**

**आ वा॑यो वा॒यवे॑ स॒जोषा᳚भ्यां त्वा । अ॒यमृ॑ता॒युभ्यां᳚ त्वा ।**

**या वा॑म॒श्विभ्यां॒ माध्वी᳚भ्यां त्वा । प्रा॒त॒र्युजा॑व॒श्विभ्या॑म॒श्विभ्यां᳚ त्वा ।**

**अ॒यꣳ शण्डा॑य वी॒रतां᳚ पाहि । तं मर्का॑य प्र॒जाः पा॑हि ।**

**ये दे॑वा स्त्रि॒ꣳशदा᳚ग्रय॒णो॑ऽसि॒ विश्वे᳚भ्यस्त्वा दे॒वेभ्यः॑ ।**

**प्रथमकाण्डे - चतुर्थः प्रश्न:**

**93**

**उ॒प॒या॒मगृ॑हीतो॒-ऽसीन्द्रा॑य त्वोक्था॒युवे᳚ । मू॒र्द्धान॑म॒ग्नये᳚ त्वा**

**वैश्वान॒राय॑ । मधु॑श्च स॒ꣳ सर्पो॑ऽसि । इन्द्रा᳚ग्नी इन्द्रा॒ग्निभ्यां᳚ त्वा ।**

**ओमा॑सो॒ विश्वे᳚भ्यस्त्वा दे॒वेभ्यः॑ । म॒रुत्वं॑ त॒न्त्रीणीन्द्रा॑य त्वा म॒रुत्व॑ते ।**

**म॒हान्द्वे म॑हे॒न्द्राय॑ त्वा । क॒दा च॒नाऽऽदि॒त्येभ्य॑त्वा । क॒दा च॒न स्त॒री**

**र्विव॑स्व आदित्य । इद्र॒ꣳ शुचि॑र॒पः । वा॒मन्त्रीणी॑ दे॒वाय॑ त्वा सवि॒त्रे ।**

**सु॒शर्मा॑ऽसि॒ विश्वे᳚भ्यस्त्वा दे॒वेभ्यः॑ । बृह॒स्पति॑-सुतस्य॒ त्वष्ट्रा॒ सोमं॑**

**पिब॒ स्वाहा᳚ । हरि॑रसि स॒हसो॑मा॒ इन्द्रा॑य॒ स्वाहा᳚ । अग्न॒ आयू॑ᳪष्य॒**

**ग्नये᳚ त्वा॒ तेज॑स्वते । उ॒त्तिष्ठ॒न्निन्द्रा॑य॒ त्वौज॑स्वते । त॒रणिः॒ सूर्या॑य त्वा॒**

**भ्राज॑स्वते । आ ति॑ष्ठाद्या॒ष्षटिन्द्रा॑य त्वा षोड॒शिने᳚ ।**

**उदु॒ त्यं चि॒त्रं । अग्ने॒ नय॒ दिवं॑ गच्छ । उ॒रूमायु॑ष्टे॒ यद्दे॑वा मुमुग्धि ।**

**अग्ना॑विष्णू सुक्रतू मुमुक्तं । परा॒ वै प॒ङ्क्त्यः॑ । दे॒वा वै ये दे॒वाः**

**प॒ङ्क्त्यो᳚ । परा॒ वै स वाचं᳚ । भूमि॒र्व्य॑तृष्यन्न् ।**

**प्र॒जाप॑ति॒ र्व्य॑क्षुध्यन्न् । भूमि॑रादि॒या वै । अ॒ग्नि॒हो॒त्रमा॑दि॒त्यो वै ।**

**भूमि॒ र्लेकः॒ सले॑कः सु॒लेकः॑ । विष्णो॒रुदु॑त्त॒मं ।**

**प्रथमकाण्डे - चतुर्थः प्रश्न:**

**94**

**अन्न॑पते॒ पुन॑स्वाऽऽदि॒त्याः । उ॒रुꣳ सꣳ सृ॑ज॒ वर्च॑सा ।**

**यस्त्वा॒ सुष्टु॑तं । त्वम॑ग्ने यु॒क्ष्वा हि सु॑ष्टि॒तिं ।**

**त्वम॑ग्ने॒ विच॑र्.षणे । यत्वा॒ वि रो॑चसे ।**

**ऍब्य्श्ग्त् ष्त्ळ्ण् ल्ळ्ग्य्ळ्त्फ्ञ् ठग्छ्ग्प्ल् ब्झ् 1, 11, 21 दज्य्त्ज्ल् ब्झ् ठग्फ्च्ण्ग्ग्ळ्त्ल् :-**

**(आ द॑दे॒-ये दे॑वा-म॒हा-नु॒त्तिष्ठ॒न्थ्-सर्व॑स्य-सन्तु दुर्मि॒त्रा-**

**श्चतु॑ष्पञ्चा॒शत् ।)**

**ऊत्य्ल्ळ् ग्फ्छ् एग्ल्ळ् ठग्छ्ग्प् ब्झ् ऊब्व्य्ळ्ण् ठय्ग्ल्फ्ग्प् :-**

**(आ द॑दे॒-वि ज्योति॑षा ।)**

**॥ हरिः॑ ओं ॥**

**॥ कृष्ण यजुर्वेदीय तैत्तिरीय संहितायां प्रथमकाण्डे चतुर्थः प्रश्नः समाप्तः ॥**

**प्रथमकाण्डे - चतुर्थः प्रश्न:**

**95**

**1.4.1 अफ्फ्ज्स्व्य्ज् झ्ब्य् 1.4**

**1.4.46.3 उद॑ग्ने॒ शुच॑य॒स्तव॒ >**

**1**

**उद॑ग्ने॒ शुच॑य॒स्तव॑ शु॒क्रा भ्राज॑न्त ईरते । तव॒ ज्योती॑ᳪष्य॒र्चयः॑ ।**

**(फद 1-3-14-8)**

**1.4.46.3 -वि ज्योति॑षा>**

**2**

**विज्योति॑षा बृह॒ता भा᳚त्य॒ग्निरा॒वि-र्विश्वा॑नि कृणुतेमहि॒त्वा ।**

**प्रादे॑वी-र्मा॒याः स॑हते-दु॒रेवाः॒ शिशी॑ते॒ शृङ्गे॒ रक्ष॑से वि॒निक्षे᳚ ।**

**(फद 1-2-14-7)**

**==========================================**

**प्रथमकाण्डे- पञ्चमः प्रश्न:**

**96**

**ओं नमः परम्ाात्मने**

**, श्री महागणपतये नमः,**

**श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ह॒रिः॒ ओं**

**1.5 प्रथमकाण्डेपञ्चम: प्रश्न: पुनराधानं**

**तै॰सं॰ 1.5.1.1**

**दे॒वा॒सु॒राः संꣲय॑त्ता आस॒न्ते दे॒वा वि॑ज॒यमु॑प॒यन्तो॒ऽग्नौ वा॒मं ꣲवसु॒ सं**

**न्य॑दधते॒दमु॑ नो भविष्यति॒ यदि॑ नो जे॒ष्यन्तीति॒ तद॒ग्निर्न्य॑कामयत॒**

**तेनापा᳚\*क्राम॒त् तद्दे॒वा वि॒जित्या॑\*व॒रुरु॑थ्समाना॒ अन्वा॑य॒न् तद॑स्य॒**

**सह॒साऽऽ\*दि॑थ्सन्त॒ सो॑ऽरोदी॒द्यदरो॑दी॒त् तद् रु॒द्रस्य॑ रुद्र॒त्वं**

**ꣲयदश्र्वशी॑यत॒ तद् - [ ] 1**

**तै॰सं॰ 1.5.1.2**

**र॑ज॒तꣳ हिर॑ण्यमभव॒त् तस्मा᳚द्-रज॒तꣳ हिर॑ण्यमदक्षि॒ण्यम॑श्रु॒जꣳ**

**हि यो ब॒र्.हिषि॒ ददा॑ति पु॒राऽस्य॑ संँंवथ्स॒राद् गृ॒हे रु॑दन्ति॒ तस्मा᳚द्ब॒र्.हिषि॒ न देय॒ꣳ सो᳚ऽग्निर॑ब्रवीद्-भा॒ग्य॑सा॒न्यथ॑ व इ॒दमिति॑ पुनरा॒धेयं॑**

**ते॒ केव॑ल॒मित्य॑ब्रुवन्-नृ॒द्ध्नव॒त् खलु॒ स इत्य॑ब्रवी॒द्यो**

**म॑द्देव॒त्य॑म॒ग्निमा॒दधा॑ता॒ इति तं पू॒षाऽऽध॑त्त॒ तेन॑ - [ ] 2**

**प्रथमकाण्डे- पञ्चमः प्रश्न:**

**97**

**तै॰सं॰ 1.5.1.3**

**पू॒षाऽऽर्द्ध्नो॒त् तस्मा᳚त् पौ॒ष्णाः प॒शव॑ उच्यन्ते॒ तं त्वष्टाऽऽध॑त्त॒ तेन॒**

**त्वष्टा᳚ऽऽर्द्ध्नो॒त् तस्मा᳚त् त्वा॒ष्ट्राः प॒शव॑ उच्यन्ते॒ तं मनु॒राऽध॑त्त॒ तेन॒**

**मनु॑रार्द्ध्नोत् तस्मा᳚न्मान॒व्यः॑ प्र॒जा उ॑च्यन्ते॒ तं धा॒ताऽऽ\*ध॑त्त॒ तेन॑**

**धा॒ताऽऽ\*र्द्ध्नो᳚थ् संꣲवथ्स॒रो वै धा॒ता तस्मा᳚थ् संंꣲवथ्स॒रं प्र॒जाः**

**प॒शवोऽनु॒ प्र जा॑यन्ते॒ य ए॒वं पु॑नरा॒धेय॒स्यर्द्धिं॒ ꣲवेद॒ - [ ] 3**

**तै॰सं॰ 1.5.1.4**

**र्ध्नोत्ये॒व यो᳚ऽस्यै॒वं ब॒न्धुतां॒ ꣲवेद॒ बन्धु॑मान् भवति भाग॒धेयं॒ ꣲवा**

**अ॒ग्निराहि॑त इ॒च्छमा॑नः प्र॒जां प॒शून् यज॑मान॒स्योप॑ दोद्रावो॒द्वास्य॒ पुन॒रा**

**द॑धीत भाग॒धेये॑नै॒वैन॒ꣳ सम॑र्द्धय॒त्यथो॒ शान्ति॑रे॒वास्यै॒षा पुन॑र्वस्वो॒रा**

**द॑धीतै॒तद्वै पु॑नरा॒धेय॑स्य॒ नक्ष॑त्रं॒ ꣲयत् पुन॑र्वसू॒ स्वाया॑मे॒वैनं॑**

**दे॒वता॑यामा॒धाय॑ ब्रह्मवर्च॒सी भ॑वति द॒र्भै ( ) रा द॑धा॒त्यया॑तयामत्वाय**

**द॒र्भैरा द॑धात्य॒द्भ्य ए॒वैन॒मोष॑धीभ्यो ऽव॒रुद्ध्या ऽऽ\*ध॑त्ते॒ पञ्च॑कपालः**

**पुरो॒डाशो॑ भवति॒ पञ्च॒ वा ऋ॒तव॑ ऋ॒तुभ्य॑ ए॒वैन॑मव॒रुद्ध्याऽऽ\*ध॑त्ते ॥ 4**

**(अशी॑यत॒ तत्- तेन॒-वेद॑- द॒र्भैः पञ्च॑विꣳशतिश्च) (अ1)**

**प्रथमकाण्डे- पञ्चमः प्रश्न:**

**98**

**तै॰सं॰ 1.5.2.1**

**परा॒ वा ए॒ष य॒ज्ञं प॒शून् व॑पति॒ यो᳚ऽग्निमु॑द्वा॒सय॑ते॒ पञ्च॑कपालः**

**पुरो॒डाशो॑ भवति॒ पाङ्क्तो॑ य॒ज्ञः पाङ्क्ताः᳚ प॒शवो॑ य॒ज्ञमे॒व प॒शूनव॑ रुन्धे**

**वीर॒हा वा ए॒ष दे॒वानां॒ ꣲयो᳚ऽग्निमु॑द्वा॒सय॑ते॒ न वा ए॒तस्य॑ ब्राह्म॒णा**

**ऋ॑ता॒यवः॑ पु॒रान्न॑मक्षन् प॒ङ्क्त्यो॑ याज्यानुवा॒क्या॑ भवन्ति॒ पाङ्क्तो॑ य॒ज्ञः**

**पाङ्क्तः॒ पुरु॑षो दे॒वाने॒व वी॒रं नि॑रव॒दाया॒ग्निं पुन॒रा - [ ] 5**

**तै॰सं॰ 1.5.2.2**

**ध॑त्ते॒ श॒ताक्ष॑रा भवन्ति श॒तायुः॒ पुरु॑षः श॒तेन्द्रि॑य॒ आयु॑ष्ये॒वेन्द्रि॒ये**

**प्रति॑ तिष्ठति॒ यद्वा अ॒ग्निराहि॑तो॒ नर्द्ध्यते॒ ज्यायो॑ भाग॒धेयं॑**

**निका॒मय॑मानो॒ यदा᳚ग्ने॒यꣳ सर्वं॒ भव॑ति॒ सैवास्यर्द्धिः॒ सं ꣲवा ए॒तस्य॑**

**गृ॒हे वाक्सृ॑ज्यते॒ यो᳚ऽग्निमु॑द्वा॒सय॑ते॒ स वाच॒ꣳ सᳪ सृ॑ष्टां॒ ꣲयज॑मान**

**ईश्व॒रोऽनु॒ परा॑भवितो॒ र्विभ॑क्तयो भवन्ति वा॒चो विधृ॑त्यै॒**

**यज॑मान॒स्या-प॑राभावाय॒ - [ ] 6**

**तै॰सं॰ 1.5.2.3**

**विभ॑क्तिं करोति॒ ब्रह्मै॒व तद॑करु पा॒ꣳशु य॑जति॒ यथा॑ वा॒मं ꣲवसु॑**

**विविदा॒नो गूह॑ति ता॒दृगे॒व तद॒ग्निं प्रति॑ स्विष्ट॒कृतं॒ निरा॑ह॒ यथा॑ वा॒मं**

**प्रथमकाण्डे- पञ्चमः प्रश्न:**

**99**

**ꣲवसु॑ विविदा॒नः प्र॑का॒शं जिग॑मिषति ता॒दृगे॒व तद्विभ॑क्तिमु॒क्त्वा प्र॑या॒जेन॒**

**वष॑ट्करोत्या॒यत॑नादे॒व नैति॒ यज॑मानो॒ वै पु॑रो॒डाशः॑ प॒शव॑ ए॒ते आहु॑ती॒**

**यद॒भितः॑ पुरो॒डाश॑मे॒ते आहु॑ती - [ ] 7**

**तै॰सं॰ 1.5.2.4**

**जु॒होति॒ यज॑मानमे॒वोभ॒यतः॑ प॒शुभिः॒ परि॑ गृह्णातिकृ॒तय॑जुः॒ सं**

**भृ॑तसंभार॒ इत्या॑हु॒र्न सं॒भृत्याः᳚ संभा॒रा न यजुः॑ कर्त॒व्य॑मित्यथो॒ खलु॑**

**सं॒भृत्या॑ ए॒व सं॑भा॒राः क॑र्त॒व्यं ꣲयजु॑ र्य॒ज्ञस्य॒ समृ॑द्ध्यैपुनर्निष्कृ॒तो**

**रथो॒ दक्षि॑णा पुनरुथ्स्यू॒तं ꣲवासः॑ पुनरुथ्सृ॒ष्टो॑ऽन॒ड्वान् पु॑नरा॒धेय॑स्य॒**

**समृ॑द्ध्यै स॒प्त ते॑ अग्ने स॒मिधः॑ स॒प्त जि॒ह्वा इत्य॑ग्निहो॒त्रं**

**जु॑होति॒ यत्र॑यत्रै॒वास्य॒ न्य॑क्तं॒ तत॑ - [ ] 8**

**तै॰सं॰ 1.5.2.5**

**ए॒वैन॒मव॑ रुन्धे वीर॒हा वा ए॒ष दे॒वानां॒ ꣲयो᳚ऽग्निमु॑द्वा॒सय॑ते॒ तस्य॒ वरु॑ण**

**ए॒वर्ण॒यादा᳚ग्निवारु॒ण-मेका॑दशकपाल॒मनु॒ निर्व॑पे॒द्यं चै॒व हन्ति॒**

**यश्चा᳚स्यर्ण॒यात्तौ भा॑ग॒धेये॑न प्रीणाति॒ नाऽऽर्ति॒मार्च्छ॑ति॒ यज॑मानः ॥ 9**

**(आ-ऽप॑राभावाय-पुरो॒डाश॑मे॒ते-आहु॑ती॒-ततः॒-षट्त्रि॑ꣳशच्च)(अ2)**

**प्रथमकाण्डे- पञ्चमः प्रश्न:**

**100**

**तै॰सं॰ 1.5.3.1**

**भूमि॑ र्भू॒म्ना द्यौ र्व॑रि॒णाऽन्तरि॑क्षं महि॒त्वा ।**

**उ॒पस्थे॑ ते देव्यदिते॒ ऽग्निम॑न्ना॒दम॒न्नाद्या॒या ऽऽद॑धे ॥**

**आऽयं गौः पृश्नि॑रक्रमी॒दस॑नन् मा॒तरं॒ पुनः॑ ।**

**पि॒तरं॑ च प्र॒यन्थ्सुवः॑ ॥**

**त्रि॒ꣳशद्धाम॒ वि रा॑जति॒ वाक् प॑तं॒गाय॑ शिश्रिये । प्रत्य॑स्य वह॒ द्युभिः॑ ॥**

**अ॒स्य प्रा॒णाद॑पान॒त्य॑न्तश्च॑रति रोच॒ना । व्य॑ख्यन् महि॒षः सुवः॑ ॥**

**यत्त्वा᳚-[ ] 10**

**तै॰सं॰ 1.5.3.2**

**क्रु॒द्धः प॑रो॒वप॑ म॒न्युना॒ यदव॑र्त्या ।**

**सु॒कल्प॑मग्ने॒ तत्तव॒ पुन॒स्त्वोद्दी॑पयामसि ॥**

**यत्ते॑ म॒न्युप॑रोप्तस्य पृथि॒वीमनु॑ दद्ध्व॒से ।**

**आ॒दि॒त्या विश्वे॒ तद्दे॒वा वस॑वश्च स॒माभ॑रन्न् ॥**

**मनो॒ ज्योति॑ र्जुषता॒माज्यं॒ ꣲविच्छि॑न्नं ꣲय॒ज्ञꣳ समि॒मं द॑धातु ।**

**प्रथमकाण्डे- पञ्चमः प्रश्न:**

**101**

**बृह॒स्पति॑स्तनुतामि॒मं नो॒ विश्वे॑ दे॒वा इ॒ह मा॑दयन्तां ॥**

**स॒प्त ते अग्ने स॒मिधः॑ स॒प्त जि॒ह्वाः स॒प्तर्. - [ ] 11**

**तै॰सं॰ 1.5.3.3**

**ष॑यः स॒प्त धाम॑ प्रि॒याणि॑ ।**

**स॒प्त होत्राः᳚ सप्त॒धा त्वा॑ यजन्ति स॒प्त योनी॒रा पृ॑णस्वा घृ॒तेन॑ ॥**

**पुन॑रू॒र्जा नि व॑र्तस्व॒ पुन॑रग्न इ॒षाऽऽ\*यु॑षा । पुन॑र्नः पाहि वि॒श्वतः॑ ॥**

**स॒ह र॒य्या नि व॑र्त॒स्वाग्ने॒ पिन्व॑स्व॒ धार॑या ।**

**वि॒श्वफ्स्नि॑या वि॒श्वत॒स्परि॑ ॥**

**लेकः॒ सले॑कः सु॒लेक॒स्ते न॑ आदि॒त्या आज्यं॑ जुषा॒णा वि॑यन्तु॒ केतः॒**

**सके॑तः सु॒केत॒स्ते न॑ ( ) आदि॒त्या आज्यं॑ जुषा॒णा वि॑यन्तु॒ विव॑स्वा॒ꣳ**

**अदि॑ति॒ र्देव॑जूति॒स्ते न॑ आदि॒त्या आज्यं॑ जुषा॒णा वि॑यन्तु ॥ 12**

**(त्वा॒-जि॒ह्वाः स॒प्त-सु॒केत॒स्ते न॒-स्त्रयो॑ दश च ) (अ3)**

**तै॰सं॰ 1.5.4.1**

**भूमि॑ र्भू॒म्ना द्यौ र्व॑रि॒णेत्या॑हा॒-ऽऽशिषै॒वैन॒मा ध॑त्तेस॒र्पा वै जीर्य॑न्तो**

**ऽमन्यन्त॒ स ए॒तं क॑स॒र्णीरः॑ काद्रवे॒यो मन्त्र॑मपश्य॒त् ततो॒ वै ते**

**प्रथमकाण्डे- पञ्चमः प्रश्न:**

**102**

**जी॒र्णास्त॒नूरपा᳚घ्नत सर्परा॒ज्ञिया॑ ऋ॒ग्भि र्गार्.ह॑पत्य॒मा द॑धाति**

**पुनर्न॒वमे॒वैन॑म॒जरं॑ कृ॒त्वा ऽऽ\*ध॒त्तेऽथो॑ पू॒तमे॒व पृ॑थि॒वीम॒न्नाद्यं॒**

**नोपा॑नम॒थ्सैतं - [ ] 13**

**तै॰सं॰ 1.5.4.2**

**मन्त्र॑मपश्य॒त् ततो॒ वै ताम॒न्नाद्य॒मुपा॑नम॒द्यथ्-स॑र्परा॒ज्ञिया॑ ऋ॒ग्भिर्**

**गार्.ह॑पत्य-मा॒दधा᳚त्य॒न्नाद्य॒स्या व॑रुद्ध्या॒ अथो॑ अ॒स्यामे॒वैनं॒**

**प्रति॑ष्ठित॒माध॑त्ते॒ यत्त्वा᳚ क्रु॒द्धः प॑रो॒वपेत्या॒हाप॑ ह्नुत ए॒वास्मै॒ तत्**

**पुन॒स्त्वोद्दी॑पयाम॒सीत्या॑ह॒ समि॑न्ध ए॒वैनं॒ ꣲयत्ते॑ म॒न्युप॑रोप्त॒स्येत्या॑ह**

**दे॒वता॑भिरे॒वै - [ ] 14**

**तै॰सं॰ 1.5.4.3**

**न॒ꣳ सं भ॑रति॒ वि वा ए॒तस्य॑ य॒ज्ञश्छि॑द्यते॒ यो᳚ऽग्निमु॑द्वा॒सय॑ते॒**

**बृह॒स्पति॑वत्य॒र्चोप॑ तिष्ठते॒ ब्रह्म॒ वै दे॒वानां॒ बृह॒स्पति॒ र्ब्रह्म॑णै॒व**

**य॒ज्ञꣳ सं द॑धाति॒ विच्छि॑न्नं ꣲय॒ज्ञꣳ समि॒मं द॑धा॒त्वित्या॑ह॒ संत॑त्यै॒**

**विश्वे॑ दे॒वा इ॒ह मा॑दयन्ता॒मित्या॑ह स॒न्तत्यै॒व य॒ज्ञं दे॒वेभ्योऽनु॑ दिशति**

**स॒प्त ते॑ अग्ने स॒मिधः॑ स॒प्त जि॒ह्वा - [ ] 15**

**प्रथमकाण्डे- पञ्चमः प्रश्न:**

**103**

**तै॰सं॰ 1.5.4.4**

**इत्या॑ह स॒प्तस॑प्त॒ वै स॑प्त॒धाऽग्नेः प्रि॒यास्त॒नुव॒स्ता ए॒वाव॑ रुन्धे॒**

**पुन॑रू॒र्जा स॒ह र॒य्येत्य॒भितः॑ पुरो॒डाश॒माहु॑ती जुहोति॒ यज॑मानमे॒वोर्जा**

**च॑ र॒य्या चो॑भ॒यतः॒ परि॑ गृह्णात्यादि॒त्या वा अ॒स्माल्लो॒काद॒मुं**

**ꣲलो॒कमा॑य॒न्ते॑ऽमुष्मि॑न् ꣲलो॒के व्य॑तृष्य॒न्त इ॒मं ꣲलो॒कं पुन॑रभ्य॒वेत्या॒**

**ऽग्निमा॒धायै॒तान् ( ) होमा॑नजुहवु॒स्त आ᳚र्द्ध्नुव॒न्ते सु॑व॒र्गं ꣲलो॒कमा॑य॒न्**

**यः प॑रा॒चीनं॑ पुनरा॒धेया॑द॒ग्निमा॒दधी॑त॒ स ए॒तान् होमां᳚**

**जुहुया॒द्यामे॒वाऽऽ\*दि॒त्या ऋद्धि॒मार्द्ध्नु॑व॒न् तामे॒वर्द्ध्नो॑ति ॥ 16**

**(सैतं-दे॒वता॑भिरे॒व-जि॒ह्वा-ए॒तान्-पञ्च॑विꣳशतिश्च)(अ4)**

**तै॰सं॰ 1.5.5.1**

**उ॒प॒प्र॒यन्तो॑ अद्ध्व॒रं मन्त्रं॑ ꣲवोचेमा॒ग्नये᳚ । आ॒रे अ॒स्मे च॑ शृण्व॒ते ॥**

**अ॒स्य प्र॒त्नामनु॒ द्युत॑ꣳ शु॒क्रं दु॑दुह्रे॒ अह्र॑यः । पयः॑ सहस्र॒सामृषिं᳚ ॥**

**अ॒ग्निर्मू॒र्द्धा दि॒वः क॒कुत्पतिः॑ पृथि॒व्या अ॒यं ।**

**अ॒पाꣳ रेता॑ꣳसि जिन्वति ॥**

**अ॒यमि॒ह प्र॑थ॒मो धा॑यि धा॒तृभि॒र्. होता॒ यजि॑ष्ठो अद्ध्व॒रेष्वीड्यः॑ ।**

**प्रथमकाण्डे- पञ्चमः प्रश्न:**

**104**

**यमप्न॑वानो॒ भृग॑वो विरुरु॒चुर्वने॑षु चि॒त्रं ꣲवि॒भुवं॑ ꣲवि॒शेवि॑शे ॥**

**उ॒भा वा॑मिन्द्राग्नी आहु॒वद्ध्या॑ - [ ] 17**

**तै॰सं॰ 1.5.5.2**

**उ॒भा राध॑सः स॒ह मा॑द॒यद्ध्यै᳚ ।**

**उ॒भा दा॒तारा॑वि॒षाꣳ र॑यी॒णामु॒भा वाज॑स्य सा॒तये॑ हुवे वां ॥**

**अ॒यं ते॒ योनि॑र्. ऋ॒त्वियो॒ यतो॑ जा॒तो अरो॑चथाः ।**

**तं जा॒नन्न॑ग्न॒ आ रो॒हाथा॑ नो वर्द्धया र॒यिं ॥**

**अग्न॒ आयू॑ꣳषि पवस॒ आ सु॒वोर्ज॒मिषं॑ च नः ।**

**आ॒रे बा॑धस्व दु॒च्छुनां᳚ ॥**

**अग्ने॒ पव॑स्व॒ स्वपा॑ अ॒स्मे वर्चः॑ सु॒वीर्यं᳚ ।**

**दध॒त्पोष॑ꣳ र॒यिं - [ ] 18**

**तै॰सं॰ 1.5.5.3**

**मयि॑ ॥**

**अग्ने॑ पावक रो॒चिषा॑ म॒न्द्रया॑ देव जि॒ह्वया᳚ ।**

**आ दे॒वान् व॑क्षि॒ यक्षि॑ च ॥**

**प्रथमकाण्डे- पञ्चमः प्रश्न:**

**105**

**स नः॑ पावक दीदि॒वोऽग्ने॑ दे॒वाꣳ इ॒हा ऽऽ\*व॑ह ।**

**उप॑ य॒ज्ञꣳ ह॒विश्च॑ नः ॥**

**अ॒ग्निः शुचि॑व्रततमः॒ शुचि॒र्विप्रः॒ शुचिः॑ क॒विः ।**

**शुची॑ रोचत॒ आहु॑तः ॥ उद॑ग्ने॒ शुच॑य॒स्तव॑ शु॒क्रा भ्राज॑न्त ईरते ।**

**तव॒ ज्योती॑ᳪष्य॒र्चयः॑ ॥**

**आ॒यु॒र्दा अ॑ग्ने॒ऽस्यायु॑र्मे- [ ] 19**

**तै॰सं॰ 1.5.5.4**

**देहि वर्चो॒दा अ॑ग्नेऽसि॒ वर्चो॑ मे देहि तनू॒पा अ॑ग्नेऽसि त॒नुवं॑ मे**

**पा॒ह्यग्ने॒ यन्मे॑ त॒नुवा॑ ऊ॒नं तन्म॒ आ पृ॑ण॒ चित्रा॑वसो स्व॒स्ति ते॑**

**पा॒रम॑शी॒येन् धा॑नास्त्वा श॒तꣳ हिमा᳚ द्यु॒मन्तः॒ समि॑धीमहि॒ वय॑स्वन्तो**

**वय॒स्कृतं॒ ꣲयश॑स्वन्तो यश॒स्कृत॑ꣳ सु॒वीरा॑सो॒ अदा᳚भ्यं ।**

**अग्ने॑ सपत्न॒दंभ॑नं॒ ꣲवर्.षि॑ष्ठे॒ अधि॒ नाके᳚ ॥**

**सं त्वम॑ग्ने॒ सूर्य॑स्य॒ वर्च॑सा ( ) ऽगथाः॒ समृषी॑णाᳪ स्तु॒तेन॒**

**सं प्रि॒येण॒ धाम्ना᳚ ।**

**प्रथमकाण्डे- पञ्चमः प्रश्न:**

**106**

**त्वम॑ग्ने॒ सूर्य॑वर्चा असि॒ सं मामायु॑षा॒ वर्च॑सा प्र॒जया॑ सृज ॥ 20**

**(आ॒हु॒वद्ध्यै॒-पोष॑ꣳ र॒यिं-मे॒-वर्च॑सा-स॒प्त द॑श च )(अ5)**

**तै॰सं॰ 1.5.6.1**

**सं प॑श्यामि प्र॒जा अ॒हमिड॑प्रजसो मान॒वीः । सर्वा॑ भवन्तु नो गृ॒हे ॥**

**अंभः॒ स्थाम्भो॑ वो भक्षीय॒ महः॑ स्थ॒ महो॑ वो भक्षीय॒ सहः॑ स्थ॒**

**सहो॑ वो भक्षी॒योर्जः॒ स्थोर्जं॑ ꣲवो भक्षीय॒ रेव॑ती॒ रम॑द्ध्वम॒स्मिन्**

**ꣲलो॒के᳚ऽस्मिन् गो॒ष्ठे᳚ऽस्मिन् क्षये॒ऽस्मिन् योना॑वि॒हैव स्ते॒तो माऽप॑**

**गात ब॒ह्वीर्मे॑ भूयास्त - [ ] 21**

**तै॰सं॰ 1.5.6.2**

**सꣳहि॒ताऽसि॑ विश्वरू॒पीरा मो॒र्जा वि॒शा ऽऽ\*गौ॑प॒त्येना ऽऽ\*रा॒यस्पोषे॑ण**

**सहस्रपो॒षं ꣲवः॑ पुष्यासं॒ मयि॑ वो॒ रायः॑ श्रयन्तां ॥**

**उप॑ त्वाऽग्ने दि॒वेदि॑वे॒ दोषा॑वस्तर्द्धि॒या व॒यं । नमो॒ भर॑न्त॒ एम॑सि ॥**

**राज॑न्तमद्ध्व॒राणां᳚ गो॒पामृ॒तस्य॒ दीदि॑विं । वर्द्ध॑मान॒ᳪ स्वे दमे᳚ ॥**

**स नः॑ पि॒तेव॑ सू॒नवेऽग्ने॑ सूपाय॒नो भ॑व । सच॑स्वा नः स्व॒स्तये᳚ ॥**

**अग्ने॒ - [ ] 22**

**प्रथमकाण्डे- पञ्चमः प्रश्न:**

**107**

**तै॰सं॰ 1.5.6.3**

**त्वं नो॒ अन्त॑मः । उ॒त त्रा॒ता शि॒वो भ॑व वरू॒त्थ्यः॑ ॥**

**तं त्वा॑ शोचिष्ठ दीदिवः । सु॒म्नाय॑ नू॒नमी॑महे॒ सखि॑भ्यः ॥**

**वसु॑र॒ग्नि र्वसु॑श्रवाः । अच्छा॑ नक्षि द्यु॒मत्त॑मो र॒यिं दाः᳚ ॥**

**ऊ॒र्जा वः॑ पश्याम्यू॒र्जा मा॑ पश्यत रा॒यस्पोषे॑ण वः पश्यामि रा॒यस्पोषे॑ण**

**मा पश्य॒तेडाः᳚ स्थ मधु॒कृतः॑ स्यो॒ना मा ऽऽवि॑श॒तेरा॒ मदः॑ ।**

**स॒हस्र॒पो॒षं ꣲवः॑ पुष्यासं॒ - [ ] 23**

**तै॰सं॰ 1.5.6.4**

**मयि॑ वो॒ रायः॑ श्रयन्तां ॥**

**तथ्स॑वि॒तुर्वरे᳚ण्यं॒ भर्गो॑ दे॒वस्य॑ धीमहि । धियो॒ योनः॑ प्रचो॒दया᳚त् ॥**

**सो॒मान॒ᳪ स्वर॑णं कृणु॒हि ब्र॑ह्मणस्पते । क॒क्षीव॑न्तं॒ ꣲय औ॑शि॒जं ॥**

**क॒दा च॒न स्त॒रीर॑सि॒ नेन्द्र॑ सश्चसि दा॒शुषे᳚ ।**

**उपो॒पेन्नु म॑घव॒न्भूय॒ इन्नु ते॒ दानं॑ दे॒वस्य॑ पृच्यते ॥**

**परि॑ त्वाऽग्ने॒ पुरं॑ ꣲव॒यं ꣲविप्र॑ꣳ सहस्य धीमहि ।**

**धृ॒षद्व॑र्णं ( ) दि॒वेदि॑वे भे॒त्तारं॑ भङ्गु॒राव॑तः ॥**

**प्रथमकाण्डे- पञ्चमः प्रश्न:**

**108**

**अग्ने॑ गृहपते सुगृहप॒तिर॒हं त्वया॑ गृ॒हप॑तिना भूयासꣳ सुगृहप॒तिर्मया॒**

**त्वं गृ॒हप॑तिना भूयाः श॒तꣳ हिमा॒स्तामा॒शिष॒मा शा॑से॒ तन्त॑वे॒**

**ज्य्ाोति॑ष्मतीं॒ तामा॒शिष॒मा शा॑से॒ ऽमुष्मै॒ ज्योति॑ष्मतीं ॥ 24**

**(भू॒या॒स्त॒-स्व॒स्तयेऽग्ने॑-पुष्यासं-धृ॒षद्व॑र्ण॒-मेका॒न्न त्रि॒ꣳशच्च॑ ) (अ6)**

**तै॰सं॰ 1.5.7.1**

**अय॑ज्ञो॒ वा ए॒ष यो॑ऽसा॒मोप॑प्र॒यन्तो॑ अद्ध्व॒रमित्या॑ह॒ स्तोम॑मे॒वास्मै॑**

**युन॒क्त्युपेत्या॑ह प्र॒जा वै प॒शव॒ उपे॒मं ꣲलो॒कं प्र॒जामे॒व प॒शूनि॒मं**

**ꣲलो॒कमुपै᳚त्य॒स्य प्र॒त्नामनु॒ द्युत॒मित्या॑ह सुव॒र्गो वै लो॒कः प्र॒त्नः**

**सु॑व॒र्गमे॒व लो॒कꣳ स॒मारो॑हत्य॒ग्निर्मू॒र्द्धा दि॒वः**

**क॒कुदित्या॑ह मू॒र्द्धान॑- [ ] 25**

**तै॰सं॰ 1.5.7.2**

**मे॒वैन॑ꣳ समा॒नानां᳚ करो॒त्यथो॑ देवलो॒कादे॒व म॑नुष्यलो॒के प्रति॑**

**तिष्ठत्य॒यमि॒ह प्र॑थ॒मो धा॑यि धा॒तृभि॒रित्या॑ह॒ मुख्य॑मे॒वैनं॑ करोत्यु॒भा**

**वा॑मिन्द्राग्नी आहु॒वद्ध्या॒ इत्या॒हौजो॒ बल॑मे॒वाव॑ रुन्धे॒ ऽयं ते॒ योनि॑र्**

**प्रथमकाण्डे- पञ्चमः प्रश्न:**

**109**

**ऋ॒त्विय॒ इत्या॑ह प॒शवो॒ वै र॒यिः प॒शूने॒वाव॑ रुन्धे**

**ष॒ड्भिरुप॑तिष्ठते॒ षड्वा - [ ] 26**

**तै॰सं॰ 1.5.7.3**

**ऋ॒तव॑ ऋ॒तुष्वे॒व प्रति॑ तिष्ठति ष॒ड्भिरुत्त॑राभि॒रुप॑ तिष्ठते॒ द्वाद॑श॒**

**संप॑द्यन्ते॒ द्वाद॑श॒ मासाः᳚ संꣲवथ्स॒रः स॑म्ꣲवथ्स॒र ए॒व प्रति॑ तिष्ठति॒ यथा॒**

**वै पुरु॒षोऽश्वो॒ गौर्जीर्य॑त्ये॒वम॒ग्निराहि॑तो जीर्यति सम्ꣲवथ्स॒रस्य॑**

**प॒रस्ता॑दाग्निपावमा॒नीभि॒रुप॑ तिष्ठते पुनर्न॒वमे॒वैन॑म॒जरं॑ करो॒त्यथो॑**

**पु॒नात्ये॒वोप॑ तिष्ठते॒ योग॑ ए॒वास्यै॒ष उप॑ तिष्ठते॒ - [ ] 27**

**तै॰सं॰ 1.5.7.4**

**दम॑ ए॒वास्यै॒ष उप॑ तिष्ठते या॒च्ञैवास्यै॒षोप॑ तिष्ठते॒ यथा॒ पापी॑या॒ञ्छ्रेय॑स**

**आ॒हृत्य॑ नम॒स्यति॑ ता॒दृगे॒व तदा॑ यु॒र्दा अ॑ग्ने॒ऽस्यायु॑र्मे दे॒हीत्या॑हा\*ऽऽयु॒र्दा**

**ह्ये॑ष व॑र्चो॒दा अ॑ग्नेऽसि॒ वर्चो॑ मे दे॒हीत्या॑ह वर्चो॒दा ह्ये॑ष त॑नू॒पा**

**अ॑ग्नेऽसि त॒नुवं॑ मे पा॒हीत्या॑ह - [ ] 28**

**तै॰सं॰ 1.5.7.5**

**तनू॒पा ह्ये॑षोऽग्ने॒ यन्मे॑ त॒नुवा॑ ऊ॒नं तन्म॒ आ पृ॒णेत्या॑ह॒ यन्मे᳚**

**प्र॒जायै॑ पशू॒नामू॒नं तन्म॒ आ पू॑र॒येति॒ वावैतदा॑ह॒चित्रा॑वसो स्व॒स्ति ते॑**

**प्रथमकाण्डे- पञ्चमः प्रश्न:**

**110**

**पा॒रम॑शी॒येत्या॑ह॒ रात्रि॒र्वै चि॒त्राव॑सु॒रव्यु॑ष्ट्यै॒ वा ए॒तस्यै॑ पु॒रा**

**ब्रा᳚ह्म॒णा अ॑भैषु॒र्व्यु॑ष्टिमे॒वाव॑ रुन्ध॒ इन्धा॑नास्त्वा श॒तꣳ - [ ] 29**

**तै॰सं॰ 1.5.7.6**

**हिमा॒ इत्या॑ह श॒तायुः॒ पुरु॑षः श॒तेन्द्रि॑य॒ आयु॑ष्ये॒वेन्द्रि॒ये प्रति॑ तिष्ठत्ये॒षा**

**वै सू॒र्मी कर्ण॑कावत्ये॒तया॑ ह स्म॒ वै दे॒वा असु॑राणाꣳ शतत॒र्.हाᳪ**

**स्तृ॑ꣳ हन्ति॒ यदे॒तया॑ स॒मिध॑मा॒दधा॑ति॒ वज्र॑मे॒वैतच्छ॑त॒घ्नीं ꣲयज॑मानो॒**

**भ्रातृ॑व्याय॒ प्र ह॑रति॒ स्तृत्या॒ अछं॑बट्कार॒ꣳ सं त्वम॑ग्ने॒ सूर्य॑स्य॒**

**वर्च॑साऽगथा॒ इत्या॑है॒तत्त्वमसी॒दम॒हं ( ) भू॑यास॒मिति॒ वावैतदा॑ह॒ त्वम॑ग्ने॒**

**सूर्य॑वर्चा अ॒सीत्या॑हा॒ऽऽशिष॑मे॒वैतामा शा᳚स्ते ॥ 30**

**(मू॒र्द्धान॒ꣳ-षड्वा-ए॒ष उप॑ तिष्ठते-पा॒हीत्या॑ह-श॒त-म॒हꣳ**

**षोड॑श च) (अ7)**

**तै॰सं॰ 1.5.8.1**

**सं प॑श्यामि प्र॒जा अ॒हमित्या॑ह॒ याव॑न्त ए॒व ग्रा॒म्याः प॒शव॒स्ताने॒वाव॑**

**रु॒न्धेऽम्भः॒ स्थाम्भो॑ वो भक्षी॒येत्या॒हाम्भो॒ ह्ये॑ता महः॑ स्थ॒ महो॑ वो**

**प्रथमकाण्डे- पञ्चमः प्रश्न:**

**111**

**भक्षी॒येत्या॑ह॒ महो॒ ह्ये॑ताः सहः॑ स्थ॒ सहो॑ वो भक्षी॒येत्या॑ह॒ सहो॒**

**ह्ये॑ता ऊर्जः॒ स्थोर्जं॑ ꣲवो भक्षी॒येत्या॒ - [ ] 31**

**तै॰सं॰ 1.5.8.2**

**होर्जो॒ ह्ये॑ता रेव॑ती॒ रम॑द्ध्व॒मित्या॑ह प॒शवो॒ वै रे॒वतीः᳚ प॒शूने॒वात्मन्**

**र॑मयत इ॒हैव स्ते॒तो माऽप॑ गा॒तेत्या॑ह ध्रु॒वा ए॒वैना॒ अन॑पगाः कुरुत**

**इष्टक॒चिद्वा अ॒न्यो᳚ऽग्निः प॑शु॒चिद॒न्यः स॑ꣳहि॒तासि॑ विश्वरू॒पीरिति॑**

**व॒थ्सम॒भि मृ॑श॒त्युपै॒वैनं॑ धत्ते पशु॒चित॑मेनं कुरुते॒ प्र - [ ] 32**

**तै॰सं॰ 1.5.8.3**

**वा ए॒षो᳚ऽस्माल्लो॒काच्च्य॑वते॒ य आ॑हव॒नीय॑मुप॒ तिष्ठ॑ते॒ गार्.ह॑पत्य॒मुप॑**

**तिष्ठते॒ ऽस्मिन्ने॒व लो॒के प्रति॑ तिष्ठ॒त्यथो॒ गार्.ह॑पत्यायै॒व नि ह्नु॑ते**

**गाय॒त्रीभि॒रुप॑ तिष्ठते॒ तेजो॒ वै गा॑य॒त्री तेज॑ ए॒वात्मन् ध॒त्तेऽथो॒ यदे॒तं**

**तृ॒चम॒न्वाह॒ संत॑त्यै॒ गार्.ह॑पत्यं॒ ꣲवा अनु॑ द्वि॒पादो॑ वी॒राः प्र जा॑यन्ते॒**

**य ए॒वं ꣲवि॒द्वान् द्वि॒पदा॑भि॒ र्गार्.ह॑पत्यमुप॒तिष्ठ॑त॒ - [ ] 33**

**तै॰सं॰ 1.5.8.4**

**आऽस्य॑ वी॒रो जा॑यत ऊ॒र्जा वः॑ पश्यां ꣲयू॒र्जा मा॑ पश्य॒ते-त्या॑हा॒**

**ऽऽशिष॑मे॒वैतामा शा᳚स्ते॒ तथ्स॑वि॒तुर्वरे᳚ण्य॒मित्या॑ह॒ प्रसू᳚त्यै सो॒मान॒ᳪ**

**प्रथमकाण्डे- पञ्चमः प्रश्न:**

**112**

**स्वर॑ण॒मित्या॑ह सोमपी॒थमे॒वाव॑ रुन्धे कृणु॒हि ब्र॑ह्मणस्पत॒ इत्या॑ह**

**ब्रह्मवर्च॒समे॒वाव॑ रुन्धेक॒दा च॒न स्त॒रीर॒सीत्या॑ह॒ न स्त॒रीꣳ**

**रात्रिं॑ ꣲवसति॒ - [ ] 34**

**तै॰सं॰ 1.5.8.5**

**य ए॒वं ꣲवि॒द्वान॒ग्निमु॑प॒तिष्ठ॑ते॒ परि॑ त्वाऽग्ने॒ पुरं॑ ꣲव॒यमित्या॑ह**

**परि॒धिमे॒वैतं परि॑ दधा॒त्यस्क॑न्दा॒याग्ने॑ गृहपत॒ इत्या॑ह**

**यथाय॒जुरे॒वैतच्छ॒तꣳ हिमा॒ इत्या॑ह श॒तं त्वा॑ हेम॒न्तानि॑न्धिषी॒येति॒ वा**

**वैतदा॑ह पु॒त्रस्य॒ नाम॑ गृह्णात्यन्ना॒दमे॒वैनं॑ करोति॒ तामा॒शिष॒मा शा॑से॒**

**तन्त॑वे॒ ज्योति॑ष्मती॒मिति॑ ब्रूया॒द्यस्य॑ पु॒त्रोऽजा॑तः॒ स्यात् ते॑ज॒स्व्ये॑वास्य॑**

**ब्रह्मवर्च॒सी पु॒त्रो जा॑यते॒ तामा॒शिष॒मा शा॑से॒ ऽमुष्मै॒ ज्योति॑ष्मती॒ ( )**

**मिति॑ ब्रूया॒द्यस्य॑ पु॒त्रो जा॒तः स्यात् तेज॑ ए॒वास्मि॑न् ब्रह्मवर्च॒सं**

**द॑धाति ॥ 35**

**(ऊर्जं॑ ꣲवो भक्षी॒येति॒-प्र-गार्.ह॑पत्यमुप॒तिष्ठ॑ते-वसति॒-ज्योति॑ष्मती॒-**

**मेका॒न्न त्रि॒ꣳशच्च॑) (अ8)**

**प्रथमकाण्डे- पञ्चमः प्रश्न:**

**113**

**तै॰सं॰ 1.5.9.1**

**अ॒ग्नि॒हो॒त्रं जु॑होति॒ यदे॒व किं च॒ यज॑मानस्य॒ स्वं तस्यै॒व तद्रेतः॑**

**सिञ्चति प्र॒जन॑ने प्र॒जन॑न॒ꣳ हि वा अ॒ग्निरथौष॑धी॒रन्त॑गता दहति॒**

**तास्ततो॒ भूय॑सीः॒ प्र जा॑यन्ते॒ यथ्सा॒यं जु॒होति॒ रेत॑ ए॒व तथ्सि॑ञ्चति॒**

**प्रैव प्रा॑त॒स्तने॑न जनयति॒ तद्रेतः॑ सि॒क्तं न त्वष्ट्राऽवि॑कृतं॒ प्रजा॑यते**

**याव॒च्छो वै रेत॑सः सि॒क्तस्य॒ - [ ] 36**

**तै॰सं॰ 1.5.9.2**

**त्वष्टा॑ रू॒पाणि॑ विक॒रोति॑ ताव॒च्छो वै तत्प्र जा॑यत ए॒ष वै दैव्य॒स्त्वष्टा॒**

**यो यज॑ते ब॒ह्वीभि॒रुप॑ तिष्ठते॒ रेत॑स ए॒व सि॒क्तस्य॑ बहु॒शो रू॒पाणि॒ वि**

**क॑रोति॒ स प्रैव जा॑यते॒ श्वःश्वो॒ भूया᳚न् भवति॒ य ए॒वं**

**ꣲवि॒द्वान॒ग्निमु॑प॒तिष्ठ॒ते ऽह॑र्दे॒वाना॒मासी॒द्-रात्रि॒रसु॑राणां॒ तेऽसु॑रा॒ यद्दे॒वानां᳚**

**ꣲवि॒त्तं ꣲवेद्य॒मासी॒त्तेन॑ स॒ह- [ ] 37**

**तै॰सं॰ 1.5.9.3**

**रात्रिं॒ प्राऽ\*वि॑श॒न्ते दे॒वा ही॒ना अ॑मन्यन्त॒ ते॑ऽपश्यन्नाग्ने॒यी रात्रि॑राग्ने॒याः**

**प॒शव॑ इ॒ममे॒वाग्निᳪ स्त॑वाम॒ स नः॑ स्तु॒तः प॒शून् पुन॑र्दास्य॒तीति॒**

**ते᳚ऽग्निम॑स्तुव॒न्थ्स ए᳚भ्यः स्तु॒तो रात्रि॑या॒ अध्यह॑र॒भि प॒शून्निरा᳚र्ज॒त्ते**

**प्रथमकाण्डे- पञ्चमः प्रश्न:**

**114**

**दे॒वाः प॒शून् वि॒त्त्वा कामा॑ꣳ अकुर्वत॒ य ए॒वं ꣲवि॒द्वान॒ग्निमु॑प॒तिष्ठ॑ते**

**पशु॒मान् भ॑व- [ ] 38**

**तै॰सं॰ 1.5.9.4**

**त्यादि॒त्यो वा अ॒स्माल्लो॒काद॒मुं ꣲलो॒कमै॒थ्सो॑ ऽमुंꣲलो॒कं ग॒त्वा पुन॑रि॒मं**

**ꣲलो॒कम॒भ्य॑द्ध्याय॒थ् स इ॒मं ꣲलो॒कमा॒गत्य॑ मृ॒त्योर॑बिभेन्मृ॒त्युसं॑ꣲयुत**

**इव॒ ह्य॑यं ꣲलो॒कः सो॑ऽमन्यते॒-ममे॒वाग्निᳪ स्त॑वानि॒ स मा᳚ स्तु॒तः**

**सु॑व॒र्गं ꣲलो॒कं ग॑मयिष्य॒तीति॒ सो᳚ऽग्निम॑स्तौ॒थ् स ए॑नᳪ स्तु॒तः सु॑व॒र्गं**

**ꣲलो॒कम॑गमय॒द्य - [ ] 39**

**तै॰सं॰ 1.5.9.5**

**ए॒वं ꣲवि॒द्वान॒ग्निमु॑प॒तिष्ठ॑ते सुव॒र्गमे॒व लो॒कमे॑ति॒ सर्व॒मायु॑रेत्य॒भि**

**वा ए॒षो᳚ऽग्नी आ रो॑हति॒ य ए॑नावुप॒तिष्ठ॑ते॒ यथा॒ खलु॒ वै**

**श्रेया॑न॒भ्यारू॑ढः का॒मय॑ते॒ तथा॑ करोति॒ नक्त॒मुप॑ तिष्ठते॒ न प्रा॒तः**

**सꣳ हि नक्तं॑ ꣲव्र॒तानि॑ सृ॒ज्यन्ते॑ स॒ह श्रेया॑ᳪश्च॒ पापी॑याᳪ श्चासाते॒**

**ज्योति॒र्वा अ॒ग्निस्तमो॒ रात्रि॒र्य - [ ] 40**

**प्रथमकाण्डे- पञ्चमः प्रश्न:**

**115**

**तै॰सं॰ 1.5.9.6**

**न्नक्त॑मुप॒तिष्ठ॑ते॒ ज्योति॑षै॒व तम॑स्तर-त्युप॒स्थेयो॒ऽग्नी(3) र्नोप॒स्थेया(3)**

**इत्या॑हुर्मनु॒ष्या॑येन्न्वै योऽह॑रहरा॒हृत्याऽथै॑नं॒ ꣲयाच॑ति॒ स इन्न्वै**

**तमुपा᳚र्च्छ॒त्यथ॒ को दे॒वानह॑रहर्याचिष्य॒तीति॒ तस्मा॒न्नोप॒स्थेयो ऽथो॒**

**खल्वा॑हुरा॒शिषे॒ वै कं ꣲयज॑मानो यजत॒ इत्ये॒षा खलु॒ वा - [ ] 41**

**तै॰सं॰ 1.5.9.7**

**आहि॑ताग्नेरा॒शी र्यद॒ग्निमु॑प॒तिष्ठ॑ते॒ तस्मा॑दुप॒स्थे यः॑ प्र॒जाप॑तिः**

**प॒शून॑सृजत॒ ते सृ॒ष्टा अ॑होरा॒त्रे प्राऽ\*वि॑श॒न् ताञ्छन्दो॑भि॒रन्व॑विन्द॒द्यच्छन्दो॑भिरुप॒तिष्ठ॑ते॒ स्वमे॒व तदन्वि॑च्छति॒ न तत्र॑ जा॒म्य॑स्ती-त्या॑हु॒र्यो**

**ऽह॑रहरुप॒ तिष्ठ॑त॒ इति॒ यो वा अ॒ग्निं प्र॒त्यङ्ङु॑प॒ तिष्ठ॑ते॒ प्रत्ये॑नमोषति॒ यः**

**परा॒ङ् विष्व॑ङ् प्र॒जया॑ प॒शुभि॑ ( ) रेति॒ कवा॑तिर्यङ्ङि॒वोप॑ तिष्ठेत॒ नैनं॑**

**प्र॒त्योष॑ति॒ न विष्व॑ङ् प्र॒जया॑ प॒शुभि॑रेति ॥ 42**

**(सि॒क्तस्य॑-स॒ह-भ॑वति॒-यो-यत्-खलु॒ वै-प॒शुभि॒-स्त्रयो॑दश च)**

**(अ9)**

**प्रथमकाण्डे- पञ्चमः प्रश्न:**

**116**

**तै॰सं॰ 1.5.10.1**

**मम॒ नाम॑ प्रथ॒मं जा॑तवेदः पि॒ता मा॒ता च॑ दधतु॒र्यदग्रे᳚ ।**

**तत्त्वं बि॑भृहि॒ पुन॒रा मदैतो॒स्तवा॒हं नाम॑ बिभराण्यग्ने ॥**

**मम॒ नाम॒ तव॑ च जातवेदो॒ वास॑सी इव वि॒वसा॑नौ॒ ये चरा॑वः ।**

**आयु॑षे॒ त्वं जी॒वसे॑ व॒यं ꣲय॑थाय॒थं ꣲवि परि॑ दधावहै॒ पुन॒स्ते ॥**

**नमो॒ऽग्नये ऽप्र॑तिविद्धाय॒ नमोऽना॑धृष्टाय॒ नमः॑ स॒म्राजे᳚ ।**

**अषा॑ढो - [ ] 43**

**तै॰सं॰ 1.5.10.2**

**अ॒ग्निर्बृ॒हद्व॑या विश्व॒जिथ्सह॑न्त्यः॒ श्रेष्ठो॑ गन्ध॒र्वः ॥**

**त्वत्पि॑तारो अग्ने दे॒वास्त्वा-मा॑हुतय॒स्त्व-द्वि॑वाचनाः ।**

**सं मामायु॑षा॒ सं गौ॑प॒त्येन॒ सुहि॑ते मा धाः ॥**

**अ॒यम॒ग्निः श्रेष्ठ॑तमो॒ ऽयं भग॑वत्तमो॒ ऽयꣳ स॑हस्र॒सात॑मः ।**

**अ॒स्मा अ॑स्तु सु॒वीर्यं᳚ ॥**

**मनो॒ ज्योति॑ र्जुषता॒माज्यं॒ ꣲविच्छि॑न्नं ꣲय॒ज्ञꣳ समि॒मं द॑धातु ।**

**प्रथमकाण्डे- पञ्चमः प्रश्न:**

**117**

**या इ॒ष्टा उ॒षसो॑ नि॒म्रुच॑श्च॒ ताः सं द॑धामि ह॒विषा॑ घृ॒तेन॑ ॥**

**पय॑स्वती॒रोष॑धयः॒ - [ ] 44**

**तै॰सं॰ 1.5.10.3**

**पय॑स्वद्वी॒रुधां॒ पयः॑ ।**

**अ॒पां पय॑सो॒ यत्पय॒स्तेन॒ मामि॑न्द्र॒ सꣳ सृ॑ज ॥**

**अग्ने᳚ व्रतपते व्र॒तं च॑रिष्यामि॒ तच्छ॑केयं॒ तन्मे॑ राद्ध्यतां ॥**

**अ॒ग्निꣳ होता॑रमि॒ह तꣳ हु॑वे दे॒वान् य॒ज्ञिया॑नि॒ह यान् हवा॑महे ॥**

**आ य॑न्तु दे॒वाः सु॑मन॒स्यमा॑ना वि॒यन्तु॑ दे॒वा ह॒विषो॑ मे अ॒स्य ॥**

**कस्त्वा॑ युनक्ति॒ स त्वा॑ युनक्तु॒ यानि॑ घ॒र्मे**

**क॒पाला᳚न्युपचि॒न्वन्ति॑-[ ] 45**

**तै॰सं॰ 1.5.10.4**

**वे॒धसः॑ ।**

**पू॒ष्णस्तान्यपि॑ व्र॒त इ॑न्द्रवा॒यू वि मु॑ञ्चतां ॥**

**अभि॑न्नो घ॒र्मो जी॒रदा॑नु॒र्यत॒ आत्त॒स्तद॑ग॒न् पुनः॑ ।**

**इ॒द्ध्मो वेदिः॑ परि॒धय॑श्च॒ सर्वे॑ य॒ज्ञस्याऽऽयु॒रनु॒ सं च॑रन्ति ॥**

**प्रथमकाण्डे- पञ्चमः प्रश्न:**

**118**

**त्रय॑स्त्रिꣳ श॒त्तन्त॑वो॒ ये वि॑तत्नि॒रे य इ॒मं ꣲय॒ज्ञᳪ स्व॒धया॒ दद॑न्ते॒**

**तेषां᳚ छि॒न्नं प्रत्ये॒तद्द॑धामि॒ स्वाहा॑ घ॒र्मो दे॒वाꣳ अप्ये॑तु ॥ 46**

**(अषा॑ढ॒-ओष॑धय-उपचि॒न्वन्ति॒-पञ्च॑चत्वारिꣳशच्च) (अ10)**

**तै॰सं॰ 1.5.11.1**

**वै॒श्वा॒न॒रो न॑ ऊ॒त्याऽऽ प्र या॑तु परा॒वतः॑ । अ॒ग्निरु॒क्थेन॒ वाह॑सा ॥**

**ऋ॒तावा॑नं ꣲवैश्वान॒रमृ॒तस्य॒ ज्योति॑ष॒स्पतिं᳚ । अज॑स्रं घ॒र्ममी॑महे ॥**

**वै॒श्वा॒न॒रस्य॑ द॒ꣳसना᳚भ्यो बृ॒हदरि॑णा॒देकः॑ स्वप॒स्य॑या क॒विः ।**

**उ॒भा पि॒तरा॑ म॒हय॑न्नजायता॒ग्नि र्द्यावा॑पृथि॒वी भूरि॑रेतसा ॥**

**पृ॒ष्टो दि॒वि पृ॒ष्टो अ॒ग्निः पृ॑थि॒व्यां पृ॒ष्टो विश्वा॒ ओष॑धी॒रा वि॑वेश ।**

**वै॒श्वा॒न॒रः सह॑सा पृ॒ष्टो अ॒ग्निः सनो॒ दिवा॒ स - [ ] 47**

**तै॰सं॰ 1.5.11.2**

**रि॒षः पा॑तु॒ नक्तं᳚ ॥**

**जा॒तो यद॑ग्ने॒ भुव॑ना॒ व्यख्यः॑ प॒शुं न गो॒पा इर्यः॒ परि॑ज्मा ।**

**वैश्वा॑नर॒ ब्रह्म॑णे विन्द गा॒तुं ꣲयू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभिः॒ सदा॑ नः ॥**

**त्वम॑ग्ने शो॒चिषा॒ शोशु॑चान॒ आ रोद॑सी अपृणा॒ जाय॑मानः ।**

**प्रथमकाण्डे- पञ्चमः प्रश्न:**

**119**

**त्वं दे॒वाꣳ अ॒भिश॑स्तेरमुञ्चो॒ वैश्वा॑नर जातवेदो महि॒त्वा ॥**

**अ॒स्माक॑मग्ने म॒घव॑थ्सु धार॒याना॑मि क्ष॒त्रम॒जर॑ꣳ सु॒वीर्यं᳚ ।**

**व॒यं ज॑येम श॒तिन॑ꣳ सह॒स्रिणं॒ ꣲवैश्वा॑नर॒ - [ ] 48**

**तै॰सं॰ 1.5.11.3**

**वाज॑मग्ने॒ तवो॒तिभिः॑ ॥**

**वै॒श्वा॒न॒रस्य॑ सुम॒तौ स्या॑म॒ राजा॒ हिकं॒ भुव॑नानामभि॒श्रीः ।**

**इ॒तो जा॒तो विश्व॑मि॒दं ꣲवि च॑ष्टे वैश्वान॒रो य॑तते॒ सूर्ये॑ण ॥**

**अव॑ ते॒ हेडो॑ वरुण॒ नमो॑भि॒रव॑ य॒ज्ञेभि॑रीमहे ह॒विर्भिः॑ ।**

**क्षय॑न्न॒स्मभ्य॑मसुर प्रचेतो॒ राज॒न्नेना॑ꣳसि शिश्रथः कृ॒तानि॑ ॥**

**उदु॑त्त॒मं ꣲव॑रुण॒ पाश॑म॒स्मदवा॑ऽध॒मं ꣲविम॑द्ध्य॒मᳪ श्र॑थाय ।**

**अथा॑ व॒यमा॑दित्य - [ ] 49**

**तै॰सं॰ 1.5.11.4**

**व्र॒ते तवाऽना॑गसो॒ अदि॑तये स्याम ॥**

**द॒धि॒क्राव्ण्णो॑ अकारिषं जि॒ष्णोरश्व॑स्य वा॒जिनः॑ ॥**

**सु॒र॒भिनो॒ मुखा॑ कर॒त् प्रण॒ आयू॑ꣳषि तारिषत् ॥**

**प्रथमकाण्डे- पञ्चमः प्रश्न:**

**120**

**आ द॑धि॒क्राः शव॑सा॒ पञ्च॑ कृ॒ष्टीः सूर्य॑ इव॒ ज्योति॑षा॒ऽपस्त॑तान ।**

**स॒ह॒स्र॒साः श॑त॒सा वा॒ज्यर्वा॑ पृ॒णक्तु॒ मद्ध्वा॒ समि॒मा वचा॑ꣳसि ॥**

**अ॒ग्निर्मू॒र्धा>1**

**, भुवः॑>2**

**।**

**मरु॑ताे॒ यद्ध॑ वो दि॒वः सु॑म्ना॒ यन्तो॒ हवा॑महे ।**

**आ तू न॒ - [ ] 50**

**तै॰सं॰ 1.5.11.5**

**उप॑ गन्तन ॥**

**या वः॒ शर्म॑ शशमा॒नाय॒ सन्ति॑ त्रि॒धातू॑नि दा॒शुषे॑ यच्छ॒ताधि॑ ।**

**अ॒स्मभ्यं॒ तानि॑ मरुतो॒ वि य॑न्त र॒यिं नो॑ धत्त वृषणः सु॒वीरं᳚ ॥**

**अदि॑तिर्न उरुष्य॒त्वदि॑तिः॒ शर्म॑ यच्छतु । अदि॑तिः पा॒त्वꣳ ह॑सः ॥**

**म॒हीमू॒षु मा॒तर॑ꣳ सुव्र॒ताना॑मृ॒तस्य॒ पत्नी॒मव॑से हुवेम ।**

**तु॒वि॒क्ष॒त्राम॒जर॑न्तीमुरू॒चीꣳ सु॒शर्मा॑ण॒मदि॑तिꣳ सु॒प्रणी॑तिं ॥**

**सु॒त्रामा॑णं पृथि॒वीं द्याम॑ने॒हस॑ꣳ सु॒शर्मा॑ण॒( ) मदि॑तिꣳ सु॒प्रणी॑तिं ।**

**दैवीं॒ नाव॑ᳪ स्वरि॒त्रामना॑गस॒मस्र॑वन्ती॒मा रु॑हेमा स्व॒स्तये᳚ ॥**

**प्रथमकाण्डे- पञ्चमः प्रश्न:**

**121**

**इ॒माꣳ सु नाव॒माऽरु॑हꣳ श॒तारि॑त्राꣳ श॒तस्फ्यां᳚ ।**

**अच्छि॑द्रां पारयि॒ष्णुं ॥ 51**

**(दिवा॒ स-स॑ह॒स्रिणं॒ ꣲवैश्वा॑नराऽऽ-दित्य॒- तू नो॑-ऽने॒हस॑ꣳ सु॒शर्मा॑ण॒**

**- मेका॒न्न वि॑ꣳश॒तिश्च॑ )(अ11)**

**ठय्ग्ल्फ्ग् ऍब्य्श्ग्त् ष्त्ळ्ण् ल्ळ्ग्य्ळ्त्फ्ञ् ठग्छ्ग्प्ल् ब्झ् 1 ळ्ब् 11 अफ्व्श्ग्ग्ध्ग्प्ल् :-**

**(दे॒वा॒सु॒राः-परा॒-भूमि॒-र्भूमि॑-रुपप्र॒यन्तः॒-सं प॑श्या॒-म्यय॑ज्ञः॒सं प॑श्या-म्यग्निहो॒त्रं-मम॒ नाम॑-वैश्वान॒र-एका॑दश) ।**

**ऍब्य्श्ग्त् ष्त्ळ्ण् ल्ळ्ग्य्ळ्त्फ्ञ् ठग्छ्ग्प्ल् ब्झ् 1, 11, 21 दज्य्त्ज्ल् ब्झ् ठग्फ्च्ण्ग्ग्ळ्त्ल् :-**

**(दे॒वा॒सु॒राः-क्रु॒द्धः-सं प॑श्यामि॒-सं प॑श्यामि॒-नक्त॒-मुप॑गन्त॒-**

**नैक॑पञ्चा॒शत्)**

**ऊत्य्ल्ळ् ग्फ्छ् एग्ल्ळ् ठग्छ्ग्प् ब्झ् ऊत्झ्ळ्ण् ठय्ग्ल्फ्ग्प् :-**

**(दे॒वा॒सु॒राः-पा॑रयि॒ष्णुं)**

**॥ हरिः॑ ओं ॥**

**॥ कृष्ण यजुर्वेदीय तैत्तिरीय संहितायां प्रथमकाण्डे**

**पञ्चमः प्रश्नः समाप्तः ॥**

**प्रथमकाण्डे- पञ्चमः प्रश्न:**

**122**

**1.5.1 अफ्फ्ज्स्व्य्ज् झ्ब्य् 1.5**

**1.5.11.4 अ॒ग्निर्मू॒र्धा >**

**1**

**अ॒ग्निर्मू॒र्धा दि॒वः क॒कुत् पतिः॑ पृथि॒व्या अ॒यं ।**

**अ॒पाꣳ रेता॑ꣳसि जिन्वति । (फद 4-4-4-1)**

**1.5.11.4 भुवः॑ >**

**2**

**-------------------------------**

**भुवो॑ य॒ज्ञस्य॒ रज॑सश्च ने॒ता यत्रा॑ नि॒युद्भिः॒ सच॑से शि॒वाभिः॑ ।**

**दि॒वि मू॒र्धानं॑ दधिषे सुव॒र्.षा जि॒ह्वाम॑ग्ने चकृषे हव्य॒वाहं᳚ ।**

**(फद 4-4-4-4)**

**======================**

**प्रथमकाण्डे - षष्ठः प्रश्न:**

**123**

**ओं नमः परमात्मने**

**, श्री महागणपतये नमः,**

**श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ह॒रिः॒ ओं**

**1.6 प्रथमकाण्डे षष्ठ: प्रश्न: याजमानकाण्डं**

**तै॰सं॰ 1.6.1.1**

**सं त्वा॑ सिञ्चामि॒ यजु॑षा प्र॒जामायु॒र्द्धनं॑ च ।**

**बृह॒स्पति॑ प्रसूतो॒ यज॑मान इ॒ह मा रि॑षत् ॥**

**आज्य॑मसि स॒त्यम॑सि स॒त्यस्याद्ध्य॑क्षमसि ह॒विर॑सि वैश्वान॒रं**

**ꣲवै᳚श्वदे॒वमुत्पू॑त-शुष्मꣳ स॒त्यौजाः॒ सहो॑ऽसि॒**

**सह॑मानमसि॒ सह॒स्वारा॑तीः॒ सह॑स्वारातीय॒तः सह॑स्व॒ पृत॑नाः॒ सह॑स्व**

**पृतन्य॒तः । स॒हस्र॑वीर्यमसि॒ तन्मा॑ जि॒न्वाज्य॒स्याज्य॑मसि स॒त्यस्य॑**

**स॒त्यम॑सि स॒त्यायु॑ -[ ] 1**

**तै॰सं॰ 1.6.1.2**

**रसि स॒त्यशु॑ष्ममसि स॒त्येन॑ त्वा॒ऽभि घा॑रयामि॒ तस्य॑ ते भक्षीय**

**पञ्चा॒नां त्वा॒ वाता॑नां ꣲय॒न्त्राय॑ ध॒र्त्राय॑ गृह्णामिपञ्चा॒नां त्व॑र्तू॒नां ꣲय॒न्त्राय॑**

**ध॒र्त्राय॑ गृह्णामिपञ्चा॒नां त्वा॑ दि॒शां ꣲय॒न्त्राय॑ ध॒र्त्राय॑ गृह्णामि**

**प्रथमकाण्डे - षष्ठः प्रश्न:**

**124**

**पञ्चा॒नां त्वा॑ पञ्चज॒नानां᳚ ꣲय॒न्त्राय॑ ध॒र्त्राय॑ गृह्णामिच॒रोस्त्वा॒**

**पञ्च॑बिलस्य य॒न्त्राय॑ ध॒र्त्राय॑ गृह्णामि॒ब्रह्म॑णस्त्वा॒ तेज॑से य॒न्त्राय॑ ध॒र्त्राय॑**

**गृह्णामि क्ष॒त्रस्य॒ त्वौज॑से य॒न्त्राय॑ - [ ] 2**

**तै॰सं॰ 1.6.1.3**

**ध॒र्त्राय॑ गृह्णामि वि॒शे त्वा॑ य॒न्त्राय॑ ध॒र्त्राय॑ गृह्णामिसु॒वीर्या॑य त्वा गृह्णामि**

**सुप्रजा॒स्त्वाय॑ त्वा गृह्णामिरा॒यस्पोषा॑य त्वा गृह्णामि ब्रह्मवर्च॒साय॑ त्वा**

**गृह्णामि॒भूर॒स्माक॑ꣳ ह॒विर्दे॒वाना॑-मा॒शिषो॒ यज॑मानस्य दे॒वानां᳚**

**त्वा दे॒वता᳚भ्यो गृह्णामि॒ कामा॑य त्वा गृह्णामि ॥ 3**

**(स॒त्यायु॒-रोज॑से य॒न्त्राय॒-त्रय॑स्त्रिꣳशच्च) (अ1)**

**तै॰सं॰ 1.6.2.1**

**ध्रु॒वो॑ऽसि ध्रु॒वो॑ऽहꣳ स॑जा॒तेषु॑ भूयासं॒ धीर॒श्चेत्ता॑**

**वसु॒विदु॒ग्रो᳚ऽस्यु॒ग्रो॑ऽहꣳ स॑जा॒तेषु॑ भूयासमु॒ग्रश्चेत्ता॑**

**वसु॒विद॑भि॒-भूर॑स्यभि॒भूर॒हꣳ स॑जा॒तेषु॑ भूयास-मभि॒भूश्चेत्ता॑**

**वसु॒विद्यु॒नज्मि॑ त्वा॒ ब्रह्म॑णा॒ दैव्ये॑न ह॒व्याया॒स्मै वोढ॒वे जा॑तवेदः ॥**

**प्रथमकाण्डे - षष्ठः प्रश्न:**

**125**

**इन्धा॑नास्त्वा सुप्र॒जसः॑ सु॒वीरा॒ ज्योग्जी॑वेम बलि॒हृतो॑ व॒यं ते᳚ ॥**

**यन्मे॑ अग्ने अ॒स्य य॒ज्ञस्य॒ रिष्या॒ - [ ] 4**

**तै॰सं॰ 1.6.2.2**

**द्यद्वा॒ स्कन्दा॒-दाज्य॑स्यो॒त वि॑ष्णो ।**

**तेन॑ हन्मि स॒पत्नं॑ दुर्मरा॒युमैनं॑ दधामि॒ निर्.ऋ॑त्या उ॒पस्थे᳚ ।**

**भूर्भुव॒स्सुव॒रुच्छु॑ष्मो अग्ने॒ यज॑मानायैधि॒ निशु॑ष्मो अभि॒दास॑ते ।**

**अग्ने॒ देवे᳚द्ध॒ मन्वि॑द्ध॒ मन्द्र॑जि॒ह्वा-म॑र्त्यस्य ते**

**होतर्मू॒र्द्धन्ना जि॑घर्मि रा॒यस्पोषा॑य सुप्रजा॒स्त्वाय॑ सु॒वीर्या॑य॒मनो॑ऽसि**

**प्राजाप॒त्यं मन॑सा मा भू॒तेना \*वि॑श॒ वाग॑स्यै॒न्द्री**

**स॑पत्न॒क्षय॑णी - [ ] 5**

**तै॰सं॰ 1.6.2.3**

**वा॒चा मे᳚न्द्रि॒येणा \*वि॑श वस॒न्तमृ॑तू॒नां प्री॑णामि॒ स मा᳚ प्री॒तः प्री॑णातु**

**ग्री॒ष्ममृ॑तू॒नां प्री॑णामि॒ स मा᳚ प्री॒तः प्री॑णातु व॒र्.षा ऋ॑तू॒नां प्री॑णामि॒ ता**

**मा᳚ प्री॒ताः प्री॑णन्तु श॒रद॑मृतू॒नां प्री॑णामि॒ सा मा᳚ प्री॒ता प्री॑णातु**

**हेमन्त -शिशि॒रावृ॑तू॒नां प्री॑णामि॒ तौ मा᳚ प्री॒तौ प्री॑णीताम॒ग्नीषोम॑योर॒हं**

**प्रथमकाण्डे - षष्ठः प्रश्न:**

**126**

**दे॑वय॒ज्यया॒ चक्षु॑ष्मान् भूयासम॒ग्नेर॒हं दे॑वय॒ज्यया᳚न्ना॒दो**

**भू॑यासं॒ - [ ] 6**

**तै॰सं॰ 1.6.2.4**

**दब्धि॑र॒स्यद॑ब्धो भूयासम॒मुं द॑भेयम॒ग्नीषोम॑योर॒हं**

**दे॑वय॒ज्यया॑ वृत्र॒हा भू॑यासमिन्द्राग्नि॒योर॒हं**

**दे॑वय॒ज्यये᳚न्द्रिया॒व्य॑न्ना॒दो भू॑यास॒मिन्द्र॑स्या॒ऽहं**

**दे॑वय॒ज्यये᳚न्द्रिया॒वी भू॑यासं महे॒न्द्रस्या॒ऽहं**

**दे॑वय॒ज्यया॑ जे॒मानं॑ महि॒मानं॑ गमेयम॒ग्नेः स्वि॑ष्ट॒कृतो॒ऽहं**

**दे॑वय॒ज्ययाऽऽयु॑ष्मान् य॒ज्ञेन॑ प्रति॒ष्ठां ग॑मेयं ॥ 7**

**(रिष्या᳚थ्-सपत्न॒क्षय॑ण्य-न्ना॒दो भू॑यास॒ꣳ-षट्त्रि॑ꣳशच्च) (अ2)**

**तै॰सं॰ 1.6.3.1**

**अ॒ग्निर्मा॒ दुरि॑ष्टात् पातु सवि॒ताऽघश॑ꣳ सा॒द्यो मेऽन्ति॑ दू॒रे॑ऽराती॒यति॒**

**तमे॒तेन॑ जेष॒ꣳ सुरू॑पवर्.षवर्ण॒ एही॒मान् भ॒द्रान् दुर्या॑ꣳ अ॒भ्येहि॒**

**मामनु॑व्रता॒ न्यु॑ शी॒र्.षाणि॑ मृढ्व॒मिड॒ एह्यदि॑त॒ एहि॒ सर॑स्व॒त्येहि॒**

**रन्ति॑रसि॒ रम॑तिरसि सू॒नर्य॑सि॒ जुष्टे॒ जुष्टिं॑ तेऽशी॒योप॑हूत उपह॒वं-[ ] 8**

**प्रथमकाण्डे - षष्ठः प्रश्न:**

**127**

**तै॰सं॰ 1.6.3.2**

**ते॑ऽशीय॒ सा मे॑ स॒त्याऽऽशीर॒स्य य॒ज्ञस्य॑ भूया॒दरे॑डता॒ मन॑सा॒**

**तच्छ॑केयं ꣲय॒ज्ञो दिव॑ꣳ रोहतु य॒ज्ञो दिवं॑ गच्छतु॒ यो दे॑व॒यानः॒**

**पन्था॒स्तेन॑ य॒ज्ञो दे॒वाꣳ अप्ये᳚त्व॒स्मास्विन्द्र॑ इन्द्रि॒यं द॑धात्व॒स्मान्राय॑**

**उ॒त य॒ज्ञाः स॑चन्ताम॒स्मासु॑ सन्त्वा॒शिषः॒ सा नः॑ प्रि॒या सु॒प्रतू᳚र्तिर्म॒घोनी॒**

**जुष्टि॑रसि जु॒षस्व॑ नो॒ जुष्टा॑ नो - [ ] 9**

**तै॰सं॰ 1.6.3.3**

**ऽसि॒ जुष्टिं॑ ते गमेयं॒ मनो॒ ज्योति॑ र्जुषता॒माज्यं॒ ꣲविच्छि॑न्नं ꣲय॒ज्ञꣳ**

**समि॒मं द॑धातु । बृह॒स्पति॑-स्तनुतामि॒मन्नो॒ विश्वे॑ दे॒वा इ॒ह मा॑दयन्तां ।**

**ब्रद्ध्न॒ पिन्व॑स्व॒ दद॑तो मे॒ मा क्षा॑यि कुर्व॒तो मे॒ मोप॑**

**दसत् प्र॒जाप॑ते-र्भा॒गो᳚ऽस्यूर्ज॑स्वा॒न् पय॑स्वान् प्राणापा॒नौ मे॑ पाहि**

**समानव्या॒नौ मे॑ पाह्युदानव्या॒नौ मे॑ पा॒ह्यक्षि॑तो॒ऽस्यक्षि॑त्यै**

**त्वा॒ ( ) मा मे᳚ क्षेष्ठा अ॒मुत्रा॒मुष्मि॑न् ꣲलो॒के ॥ 10**

**(उ॒प॒ह॒वं-जुष्टा॑नस्-त्वा॒ षट्च॑) (अ3)**

**प्रथमकाण्डे - षष्ठः प्रश्न:**

**128**

**तै॰सं॰ 1.6.4.1**

**ब॒र्.हिषो॒ऽहं दे॑वय॒ज्यया᳚ प्र॒जावा᳚न् भूयासं॒ नरा॒शꣳ स॑स्या॒हं**

**दे॑वय॒ज्यया॑ पशु॒मान् भू॑यासम॒ग्नेः स्वि॑ष्ट॒कृतो॒ऽहं दे॑वय॒ज्ययाऽऽयु॑ष्मान्**

**य॒ज्ञेन॑ प्रति॒ष्ठां ग॑मेयम॒ग्नेर॒ह-मुज्जि॑ति॒-मनूज्जे॑ष॒ꣳ सोम॑स्या॒हमुज्जि॑ति॒-मनूज्जे॑षम॒ग्नेर॒ह-मुज्जि॑ति॒-मनूज्जे॑षम॒ग्नीषोम॑योर॒ह-मुज्जि॑ति॒-मनूज्जे॑ष-मिन्द्राग्नि॒योर॒ह-मुज्जि॑ति॒ मनूज्जे॑ष॒-**

**मिन्द्र॑स्या॒ह - [ ] 11**

**तै॰सं॰ 1.6.4.2**

**मुज्जि॑ति॒मनूज्जे॑षं महे॒न्द्रस्या॒ह मुज्जि॑ति॒-मनूज्जे॑षम॒ग्नेः स्वि॑ष्ट॒कृतो॒ऽह**

**मुज्जि॑ति॒-मनूज्जे॑षं॒ ꣲवाज॑स्य मा प्रस॒वेनो᳚द्ग्रा॒भेणोद॑ग्रभीत् ।**

**अथा॑ स॒पत्ना॒ꣳ इन्द्रो॑ मे निग्रा॒भेणाध॑राꣳ अकः ॥**

**उ॒द्ग्रा॒भं च॑ निग्रा॒भं च॒ ब्रह्म॑ दे॒वा अ॑वीवृधन्न् ।**

**अथा॑ स॒पत्ना॑-निन्द्रा॒ग्नी मे॑ विषू॒चीना॒न्-व्य॑स्यतां ॥**

**एमा अ॑ग्मन्ना॒शिषो॒ दोह॑कामा॒ इन्द्र॑वन्तो - [ ] 12**

**प्रथमकाण्डे - षष्ठः प्रश्न:**

**129**

**तै॰सं॰ 1.6.4.3**

**वनामहे धुक्षी॒महि॑ प्र॒जामिषं᳚ ॥**

**रोहि॑तेन त्वा॒ऽग्निर्दे॒वतां᳚ गमयतु॒ हरि॑भ्यां॒ त्वेन्द्रो॑ दे॒वतां᳚ गमय॒त्वेत॑शेन**

**त्वा॒ सूर्यो॑ दे॒वतां᳚ गमयतु॒ वि ते॑ मुञ्चामि रश॒ना वि र॒श्मीन् वि योक्त्रा॒**

**यानि॑ परि॒चर्त॑नानि ध॒त्ताद॒स्मासु॒ द्रवि॑णं॒ ꣲयच्च॑ भ॒द्रं प्रणो᳚**

**ब्रूताद्-भाग॒धान् दे॒वता॑सु ॥**

**विष्णोः᳚ श॒म्ꣲयोर॒हं दे॑वय॒ज्यया॑ य॒ज्ञेन॑ प्रति॒ष्ठां ग॑मेय॒ꣳ सोम॑स्या॒हं**

**दे॑वय॒ज्यया॑ - [ ] 13**

**तै॰सं॰ 1.6.4.4**

**सु॒रेता॒ रेतो॑ धिषीय॒ त्वष्टु॑र॒हं दे॑वय॒ज्यया॑ पशू॒नाꣳ रू॒पं पु॑षेयं**

**दे॒वानां॒ पत्नी॑र॒ग्नि र्गृ॒हप॑ति र्य॒ज्ञस्य॑ मिथु॒नं तयो॑र॒हं दे॑वय॒ज्यया॑**

**मिथु॒नेन॒ प्रभू॑यासं ꣲवे॒दो॑ऽसि॒ वित्ति॑रसि वि॒देय॒ कर्मा॑ऽसि क॒रुण॑मसि**

**क्रि॒यास॑ꣳ स॒निर॑सि सनि॒ताऽसि॑ स॒नेयं॑ घृ॒तव॑न्तं कुला॒यिन॑ꣳ**

**रा॒यस्पोष॑ꣳ सह॒स्रिणं॑ ꣲवे॒दो द॑दातु वा॒जिनं᳚ ॥ 14 (इन्द्र॑स्या॒हमिन्द्र॑वन्तः॒-सोम॑स्या॒हं दे॑वय॒ज्यया॒-चतु॑श्चत्वारिꣳशच्च)(अ4)**

**प्रथमकाण्डे - षष्ठः प्रश्न:**

**130**

**तै॰सं॰ 1.6.5.1**

**आ प्या॑यतां ध्रु॒वा घृ॒तेन॑ य॒ज्ञं ꣲय॑ज्ञं॒ प्रति॑ देव॒यद्भ्यः॑ ।**

**सू॒र्याया॒ ऊधोऽदि॑त्या उ॒पस्थ॑ उ॒रुधा॑रा पृथि॒वी य॒ज्ञे अ॒स्मिन्न् ॥**

**प्र॒जाप॑ते र्वि॒भान्नाम॑ लो॒कस्तस्मि॑ᳪस्त्वा दधामि स॒ह यज॑मानेन॒**

**सद॑सि॒ सन्मे॑ भूयाः॒ सर्व॑मसि॒ सर्वं॑ मे भूयाः पू॒र्णम॑सि पू॒र्णं मे॑**

**भूया॒ अक्षि॑तमसि॒ मा मे᳚ क्षेष्ठाः॒ प्राच्यां᳚ दि॒शि दे॒वा ऋ॒त्विजो॑**

**मार्जयन्तां॒ दक्षि॑णायां - [ ] 15**

**तै॰सं॰ 1.6.5.2**

**दि॒शि मासाः᳚ पि॒तरो॑ मार्जयन्तां प्र॒तीच्यां᳚ दि॒शि गृ॒हाः प॒शवो॑**

**मार्जयन्ता॒मुदी᳚च्यां दि॒श्याप॒ ओष॑धयो॒ वन॒स्पत॑यो मार्जयन्तामू॒र्द्ध्वायां᳚**

**दि॒शि य॒ज्ञः सं॑ꣲवथ्स॒रो य॒ज्ञप॑ति र्मार्जयन्तां॒ ꣲविष्णोः॒**

**क्रमो᳚ऽस्यभिमाति॒हा गा॑य॒त्रेण॒ छन्द॑सा पृथि॒वीमनु॒ वि क्र॑मे॒ निर्भ॑क्तः॒**

**स यं द्वि॒ष्मो विष्णोः॒ क्रमो᳚ऽस्यभिशस्ति॒हा त्रैष्टु॑भेन॒ छन्द॑सा॒ऽन्तरि॑क्ष॒मनु॒**

**वि क्र॑मे॒ निर्भ॑क्तः॒ स यं द्वि॒ष्मो विष्णोः॒ क्रमो᳚ऽस्यरातीय॒तो ह॒न्ता**

**जाग॑तेन॒ छन्द॑सा॒ दिव॒मनु॒ वि क्र॑मे॒ निर्भ॑क्तः॒ स यं द्वि॒ष्मो विष्णोः॒**

**प्रथमकाण्डे - षष्ठः प्रश्न:**

**131**

**क्रमो॑ऽसि शत्रूय॒तो ह॒न्ताऽऽनु॑ष्टुभेन॒ छन्द॑सा॒ दिशोऽनु॒ वि क्र॑मे॒ निर्भ॑क्तः॒**

**स यं द्वि॒ष्मः ॥ 16**

**(दक्षि॑णाया - म॒न्तरि॑क्ष॒मनु॒ वि क्र॑मे॒ निर्भ॑क्तः॒ स यं द्वि॒ष्मो**

**विष्णो॒- रेका॒न्न त्रि॒ꣳशच्च॑) (अ5)**

**तै॰सं॰ 1.6.6.1**

**अग॑न्म॒ सुवः॒ सुव॑रगन्म सं॒दृश॑स्ते॒ मा छि॑थ्सि॒ यत्ते॒ तप॒स्तस्मै॑ ते॒**

**माऽऽ वृ॑क्षि सु॒भूर॑सि॒ श्रेष्ठो॑ रश्मी॒नामा॑यु॒र्द्धा अ॒स्यायु॑र्मे धेहि वर्चो॒धा**

**अ॑सि॒ वर्चो॒ मयि॑ धेही॒दम॒हम॒मुं भ्रातृ॑व्यमा॒भ्यो दि॒ग्भ्यो᳚ऽस्यै दि॒वो᳚**

**ऽस्माद॒न्तरि॑क्षाद॒स्यै पृ॑थि॒व्या अ॒स्माद॒न्नाद्या॒न्निर्भ॑जामि॒**

**निर्भ॑क्तः॒ स यं द्वि॒ष्मः ॥ 17**

**तै॰सं॰ 1.6.6.2**

**सं ज्योति॑षाऽभूवमै॒न्द्री-मा॒वृत॑म॒न्वाव॑र्ते॒ सम॒हं प्र॒जया॒ सं मया᳚ प्र॒जा**

**सम॒हꣳ रा॒यस्पोषे॑ण॒ सं मया॑ रा॒यस्पोषः॒ समि॑द्धो अग्ने मे दीदिहि**

**समे॒द्धा ते॑ अग्ने दीद्यासं॒ ꣲवसु॑मान् य॒ज्ञो वसी॑यान् भूयास॒मग्न॒**

**प्रथमकाण्डे - षष्ठः प्रश्न:**

**132**

**आयू॑ꣳषि पवस॒ आ सु॒वोर्ज॒मिषं॑ च नः ।**

**आ॒रे बा॑धस्व दु॒च्छुनां᳚ ॥ अग्ने॒ पव॑स्व॒ स्वपा॑ अ॒स्मे वर्चः॑ सु॒वीर्यं᳚ । 18**

**तै॰सं॰ 1.6.6.3**

**दध॒त्पोष॑ꣳ र॒यिं मयि॑ ।**

**अग्ने॑ गृहपते सुगृहप॒तिर॒हं त्वया॑ गृ॒हप॑तिना भूयासꣳ सुगृहप॒तिर्मया॒**

**त्वं गृ॒हप॑तिना भूयाः श॒तꣳ हिमा॒स्तामा॒शिष॒मा शा॑से॒ तन्त॑वे॒**

**ज्योति॑ष्मतीं॒ तामा॒शिष॒मा शा॑से॒ऽमुष्मै॒ ज्योति॑ष्मतीं॒ कस्त्वा॑ युनक्ति॒ स**

**त्वा॒ विमु॑ञ्च॒त्वग्ने᳚ व्रतपते व्र॒तम॑चारिषं॒ तद॑शकं॒ तन्मे॑ऽराधि य॒ज्ञो**

**ब॑भूव॒ स आ -[ ] 19**

**तै॰सं॰ 1.6.6.4**

**ब॑भूव॒ स प्रज॑ज्ञे॒ स वा॑वृधे ।**

**स दे॒वाना॒मधि॑पति र्बभूव॒ सो अ॒स्माꣳ अधि॑पतीन् करोतु व॒यᳪ**

**स्या॑म॒ पत॑यो रयी॒णां ॥**

**गोमा॑ꣳ अ॒ग्नेऽवि॑माꣳ अ॒श्वी य॒ज्ञो नृ॒वथ्स॑खा॒ सद॒मिद॑प्रमृ॒ष्यः ।**

**प्रथमकाण्डे - षष्ठः प्रश्न:**

**133**

**इडा॑वाꣳ ए॒षो अ॑सुर प्र॒जावा᳚न् दी॒र्घो र॒यिः पृ॑थुबु॒द्ध्नः स॒भावान्॑ ॥ 20**

**(द्वि॒ष्मः-सु॒वीर्य॒ꣳ-स आ-पञ्च॑त्रिꣳशच्च) (अ6)**

**तै॰सं॰ 1.6.7.1**

**यथा॒ वै स॑मृतसो॒मा ए॒वं ꣲवा ए॒ते स॑मृतय॒ज्ञा यद्द॑र्.शपूर्णमा॒सौ**

**कस्य॒ वाऽह॑ दे॒वा य॒ज्ञमा॒गच्छ॑न्ति॒ कस्य॑ वा॒ न ब॑हू॒नां**

**ꣲयज॑मानानां॒ ꣲयो वै दे॒वताः॒ पूर्वः॑ परिगृ॒ह्णाति॒ स ए॑नाः॒ श्वो**

**भू॒ते य॑जत ए॒तद्वै दे॒वाना॑मा॒यत॑नं॒ ꣲयदा॑हव॒नीयो᳚ऽन्त॒राऽग्नी**

**प॑शू॒नां गार्.ह॑पत्यो मनु॒ष्या॑णा-मन्वाहार्य॒पच॑नः**

**पितृ॒णाम॒ग्निं गृ॑ह्णाति॒ स्व ए॒वायत॑ने दे॒वताः॒ परि॑ - [ ] 21**

**तै॰सं॰ 1.6.7.2**

**गृह्णाति॒ ताः श्वो भू॒ते य॑जते व्र॒तेन॒ वै मेद्ध्यो॒ऽग्नि र्व्र॒तप॑ति र्ब्राह्म॒णो**

**व्र॑त॒भृद्-व्र॒तमु॑पै॒ष्यन् ब्रू॑या॒दग्ने᳚ व्रतपते व्र॒तं च॑रिष्या॒मीत्य॒ग्निर्वै**

**दे॒वानां᳚ ꣲव्र॒तप॑ति॒-स्तस्मा॑ ए॒व प्र॑ति॒प्रोच्य॑ व्र॒तमा ल॑भते ब॒र्.हिषा॑**

**पू॒र्णमा॑से व्र॒तमुपै॑ति व॒थ्सैर॑मावा॒स्या॑-यामे॒तद्ध्ये॑तयो॑-रा॒यत॑नमुप॒स्तीर्यः॒**

**पूर्व॑श्चा॒ग्निरप॑र॒श्चेत्या॑हु र्मनु॒ष्या॑ - [ ] 22**

**प्रथमकाण्डे - षष्ठः प्रश्न:**

**134**

**तै॰सं॰ 1.6.7.3**

**इन्न्वा उप॑स्तीर्ण-मि॒च्छन्ति॒ किमु॑ दे॒वा येषां॒ नवा॑वसान॒-**

**मुपा᳚स्मि॒ञ्छ्वो य॒क्ष्यमा॑णे दे॒वता॑ वसन्ति॒ य ए॒वं ꣲवि॒द्वान॒ग्निमु॑पस्तृ॒णाति॒**

**यज॑मानेन ग्रा॒म्याश्च॑ प॒शवो॑ऽव॒रुद्ध्या॑ आर॒ण्याश्चेत्या॑हु॒ र्यद्गा॒म्यानु॑प॒**

**वस॑ति॒ तेन॑ ग्रा॒म्यानव॑ रुन्धे॒ यदा॑र॒ण्यस्या॒श्नाति॒ तेना॑र॒ण्यान्**

**यदना᳚श्वानुप॒वसे᳚त् पितृदेव॒त्यः॑ स्यादार॒ण्यस्या᳚-श्नातीन्द्रि॒यं - [ ] 23**

**तै॰सं॰ 1.6.7.4**

**ꣲवा आ॑र॒ण्यमि॑न्द्रि॒यमे॒वाऽऽत्मं ध॑त्ते॒ यदना᳚श्वानुप॒वसे॒त् क्षोधु॑कः**

**स्या॒द्यद॑श्नी॒याद्रु॒द्रो᳚ऽस्य प॒शून॒भि म॑न्येता॒ऽपो᳚ऽश्नाति॒ तन्नेवा॑शि॒तं**

**नेवाऽन॑शितं॒ न क्षोधु॑को॒ भव॑ति॒ नास्य॑ रु॒द्रः प॒शून॒भि म॑न्यते॒ वज्रो॒**

**वै य॒ज्ञः क्षुत्खलु॒ वै म॑नु॒ष्य॑स्य॒ भ्रातृ॑व्यो॒ यदना᳚ ऽश्वानुप॒वस॑ति॒ वज्रे॑णै॒व**

**सा॒क्षात् ( ) क्षुधं॒ भ्रातृ॑व्यꣳ हन्ति ॥ 24**

**(परि॑-मनु॒ष्या॑-इन्द्रि॒यꣳ-सा॒क्षात्-त्रीणि॑ च) (अ7)**

**तै॰सं॰ 1.6.8.1**

**यो वै श्र॒द्धामना॑रभ्य य॒ज्ञेन॒ यज॑ते॒ नास्ये॒ष्टाय॒ श्रद्द॑ धते॒ऽपः प्रण॑यति**

**श्र॒द्धा वा आपः॑ श्र॒द्धामे॒वाऽऽरभ्य॑ य॒ज्ञेन॑ यजत उ॒भये᳚ऽस्य देवमनु॒ष्या**

**प्रथमकाण्डे - षष्ठः प्रश्न:**

**135**

**इ॒ष्टाय॒ श्रद्द॑धते॒ तदा॑हु॒रति॒ वा ए॒ता वर्त्रं॑ नेद॒न्त्यति॒ वाचं॒ मनो॒ वावैता**

**नाति॑ नेद॒न्तीति॒ मन॑सा॒ प्रण॑यती॒यं ꣲवै मनो॒ - [ ] 25**

**तै॰सं॰ 1.6.8.2**

**ऽनयै॒वैनाः॒ प्रण॑य॒त्य-स्क॑न्नहवि र्भवति॒ य ए॒वं ꣲवेद॑**

**यज्ञायु॒धानि॒ सं भ॑रति य॒ज्ञो वै य॑ज्ञायु॒धानि॑ य॒ज्ञमे॒व तथ्सं भ॑रति॒**

**यदेक॑मेकꣳ सं॒भरे᳚त्-पितृदेव॒त्या॑नि स्यु॒र्यथ् स॒ह सर्वा॑णि मानु॒षाणि॒**

**द्वेद्वे॒ संभ॑रति याज्यानुवा॒क्य॑योरे॒व रू॒पं क॑रो॒त्यथो॑ मिथु॒नमे॒वयो वै दश॑**

**यज्ञायु॒धानि॒ वेद॑ मुख॒तो᳚ऽस्य य॒ज्ञः क॑ल्पते॒ स्फ्यः - [ ] 26**

**तै॰सं॰ 1.6.8.3**

**च॑ क॒पाला॑नि चाग्निहोत्र॒हव॑णी च॒ शूर्पं॑ च कृष्णाजि॒नं च॒ शम्या॑**

**चो॒लूख॑लं च॒ मुस॑लं च दृ॒षच्चोप॑ला चै॒तानि॒ वै दश॑**

**यज्ञायु॒धानि॒ य ए॒वं ꣲवेद॑ मुख॒तो᳚ऽस्य य॒ज्ञः क॑ल्पते॒ यो वै दे॒वेभ्यः॑**

**प्रति॒प्रोच्य॑ य॒ज्ञेन॒ यज॑ते जु॒षन्ते᳚ऽस्य दे॒वा ह॒व्यꣳ ह॒वि र्नि॑रु॒प्यमा॑णम॒भि**

**म॑न्त्रयेता॒ऽग्निꣳ होता॑रमि॒ह तꣳ हु॑व॒ इति॑-[ ] 27**

**प्रथमकाण्डे - षष्ठः प्रश्न:**

**136**

**तै॰सं॰ 1.6.8.4**

**दे॒वेभ्य॑ ए॒व प्र॑ति॒प्रोच्य॑ य॒ज्ञेन॑ यजते जु॒षन्ते᳚ऽस्य दे॒वा ह॒व्यमे॒ष**

**वै य॒ज्ञस्य॒ ग्रहो॑ गृही॒त्वैव य॒ज्ञेन॑ यजते॒ तदु॑दि॒त्वा वाचं॑ ꣲयच्छति**

**य॒ज्ञस्य॒ धृत्या॒ अथो॒ मन॑सा॒ वै प्र॒जाप॑ति र्य॒ज्ञम॑तनुत॒ मन॑सै॒व तद्य॒ज्ञं**

**त॑नुते॒ रक्ष॑सा॒-मन॑न्ववचाराय॒ यो वै य॒ज्ञं ꣲयोग॒ आग॑ते यु॒नक्ति॑ यु॒ङ्क्ते**

**यु॑ञ्जा॒नेषु॒ कस्त्वा॑ युनक्ति॒ स त्वा॑ युन॒क्त्वि ( ) त्या॑ह प्र॒जाप॑ति॒र्वै कः**

**प्र॒जाप॑तिनै॒वैनं॑ ꣲयुनक्ति यु॒ङ्क्ते यु॑ञ्जा॒नेषु॑ ॥ 28**

**(वैम॒नः-स्फ्य-इति॑-युन॒क्त्वे-का॑दश च) (अ8)**

**तै॰सं॰ 1.6.9.1**

**प्र॒जाप॑ति र्य॒ज्ञा-न॑सृजताग्निहो॒त्रं चा᳚ग्निष्टो॒मं च॑ पौर्णमा॒सीं चो॒क्थ्यं॑**

**चामावा॒स्यां᳚ चातिरा॒त्रं च॒ तानुद॑मिमीत॒ याव॑दग्निहो॒त्र-मासी॒त्**

**तावा॑नग्निष्टो॒मो याव॑ती पौर्णमा॒सी तावा॑नु॒क्थ्यो॑ याव॑त्यमावा॒स्या॑**

**तावा॑नतिरा॒त्रो य ए॒वं ꣲवि॒द्वान॑ग्निहो॒त्रं जु॒होति॒ याव॑दग्निष्टो॒मेनो॑पा॒प्नोति॒**

**ताव॒दुपा᳚ऽऽप्नोति॒ य ए॒वं ꣲवि॒द्वान् पौ᳚र्णमा॒सीं ꣲयज॑ते॒**

**याव॑दु॒क्थ्ये॑नोपा॒प्नोति॒ - [ ] 29**

**प्रथमकाण्डे - षष्ठः प्रश्न:**

**137**

**तै॰सं॰ 1.6.9.2**

**ताव॒दुपा᳚ऽऽप्नोति॒ य ए॒वं ꣲवि॒द्वान॑मावा॒स्यां᳚ ꣲयज॑ते॒**

**याव॑दतिरा॒त्रेणो॑पा॒प्नोति॒ ताव॒दुपा᳚ऽऽप्नोति परमे॒ष्ठिनो॒ वा ए॒ष य॒ज्ञोऽग्र॑**

**आसी॒त् तेन॒ स प॑र॒मां काष्ठा॑म गच्छ॒त् तेन॑ प्र॒जाप॑तिं नि॒रवा॑सायय॒त्**

**तेन॑ प्र॒जाप॑तिः पर॒मां काष्ठा॑मगच्छ॒त् तेनेन्द्रं॑ नि॒रवा॑सायय॒त् तेनेन्द्रः॑**

**पर॒मां काष्ठा॑मगच्छ॒त् तेना॒ऽग्नीषोमौ॑ नि॒रवा॑सायय॒त् तेना॒ग्नीषोमौ॑**

**प॒रमां काष्ठा॑मगच्छतां॒ ꣲय - [ ] 30**

**तै॰सं॰ 1.6.9.3**

**ए॒वं ꣲवि॒द्वान् द॑र्.शपूर्णमा॒सौ यज॑ते पर॒मामे॒व काष्ठां᳚ गच्छति॒ यो वै**

**प्रजा॑तेन य॒ज्ञेन॒ यज॑ते॒ प्रप्र॒जया॑ प॒शुभि॑ र्मिथु॒नै र्जा॑यते॒ द्वाद॑श॒ मासाः᳚**

**संꣲवथ्स॒रो द्वाद॑श द्व॒न्द्वानि॑ दर्.शपूर्णमा॒सयो॒स्तानि॑ सं॒पाद्या॒नीत्या॑हुर्व॒थ्सं**

**चो॑पावसृ॒जत्यु॒खां चाधि॑ श्रय॒त्यव॑ च॒ हन्ति॑ दृ॒षदौ॑ च स॒माह॒न्त्यधि॑ च॒**

**वप॑ते क॒पाला॑नि॒ चोप॑ दधाति पुरो॒डाशं॑- [ ] 31**

**तै॰सं॰ 1.6.9.4**

**चा ऽधि॒श्रय॒त्याज्यं॑ च स्तंबय॒जुश्च॒ हर॑त्य॒भि च॑ गृह्णाति॒ वेदिं॑ च परि**

**गृ॒ह्णाति॒ पत्नीं᳚ च॒ संन॑ह्यति॒ प्रोक्ष॑णीश्चा ऽऽसा॒दय॒त्याज्यं॑ चै॒तानि॒ वै**

**प्रथमकाण्डे - षष्ठः प्रश्न:**

**138**

**द्वाद॑श द्व॒न्द्वानि॑ दर्.शपूर्णमा॒सयो॒स्तानि॒ य ए॒वꣳ सं॒पाद्य॒ यज॑ते॒**

**प्रजा॑तेनै॒व य॒ज्ञेन॑ यजते॒ प्र प्र॒जया॑ प॒शुभि॑ र्मिथु॒नै र्जा॑यते ॥ 32**

**(उ॒क्थ्ये॑नोपा॒प्नोत्य॑-गच्छतां॒ ꣲयः- पु॑रो॒डाशं॑-चत्वारि॒ꣳशच्च॑)(अ9)**

**तै॰सं॰ 1.6.10.1**

**ध्रु॒वो॑ऽसि ध्रु॒वो॑ऽहꣳ स॑जा॒तेषु॑ भूयास॒मित्या॑ह ध्रु॒वाने॒वैना᳚न् कुरुत**

**उ॒ग्रो᳚ऽस्यु॒ग्रो॑ऽहꣳ स॑जा॒तेषु॑ भूयास॒मित्या॒हा प्र॑तिवादिन ए॒वैना᳚न्**

**कुरुते-ऽभि॒भूर॑स्यभि॒भूर॒हꣳ स॑जा॒तेषु॑ भूयास॒मित्या॑ह॒ य ए॒वैनं॑**

**प्रत्यु॒त्पिपी॑ते॒ तमुपा᳚स्यते यु॒नज्मि॑ त्वा॒ ब्रह्म॑णा॒ दैव्ये॒नेत्या॑है॒ष वा**

**अ॒ग्नेर्योग॒स्तेनै॒ - [ ] 33**

**तै॰सं॰ 1.6.10.2**

**वैनं॑ ꣲयुनक्ति य॒ज्ञस्य॒ वै समृ॑द्धेन दे॒वाः सु॑व॒र्गं ꣲलो॒कमा॑यन् य॒ज्ञस्य॒**

**व्यृ॑द्धे॒नासु॑रा॒न् परा॑ भावय॒न् यन्मे॑ अग्ने अ॒स्य य॒ज्ञस्य॒ रिष्या॒दित्या॑ह**

**य॒ज्ञस्यै॒व तथ्समृ॑द्धेन॒ यज॑मानः सुव॒र्गं ꣲलो॒कमे॑ति य॒ज्ञस्य॒ व्यृ॑द्धेन॒**

**भ्रातृ॑व्या॒न् परा॑ भावयत्यग्निहो॒त्र-मे॒ताभि॒ र्व्याहृ॑तीभि॒रुप॑ सादयेद्यज्ञमु॒खं**

**ꣲवा अ॑ग्निहो॒त्रं ब्रह्मै॒ता व्याहृ॑तयो यज्ञमु॒ख ए॒व ब्रह्म॑ - [ ] 34**

**प्रथमकाण्डे - षष्ठः प्रश्न:**

**139**

**तै॰सं॰ 1.6.10.3**

**कुरुते संꣲवथ्स॒रे प॒र्याग॑त ए॒ताभि॑रे॒वोप॑ सादये॒द्-ब्रह्म॑णै॒वोभ॒यतः॑**

**संꣲवथ्स॒रं परि॑ गृह्णाति दर्.शपूर्णमा॒सौ चा॑तुर्मा॒स्यान् या॒लभ॑मान**

**ए॒ताभि॒र्व्याहृ॑तीभि र्ह॒वीᳪष्यासा॑दयेद्यज्ञमु॒खं ꣲवै द॑र्.शपूर्णमा॒सौ**

**चा॑तुर्मा॒स्यानि॒ ब्रह्मै॒ता व्याहृ॑तयो यज्ञमु॒ख ए॒व ब्रह्म॑ कुरुते संꣲवथ्स॒रे**

**प॒र्याग॑त ए॒ताभि॑रे॒वासा॑दये॒द् ब्रह्म॑णै॒वोभ॒यतः॑ संꣲवथ्स॒रं परि॑गृह्णाति॒ यद्वै**

**य॒ज्ञस्य॒ साम्ना᳚ क्रि॒यते॑ रा॒ष्ट्रं - [ ] 35**

**तै॰सं॰ 1.6.10.4**

**ꣲय॒ज्ञस्या॒-\*शीर्ग॑च्छति॒ यदृ॒चा विशं॑ ꣲय॒ज्ञस्या॒\*शीर्ग॑च्छ॒त्यथ॑**

**ब्राह्म॒णो॑ऽना॒शीर्के॑ण य॒ज्ञेन॑ यजते सामिधे॒नीर॑नुव॒क्ष्यन्ने॒ता व्याहृ॑तीः**

**पु॒रस्ता᳚द्दद्ध्या॒द् ब्रह्मै॒व प्र॑ति॒पदं॑ कुरुते॒ तथा᳚ ब्राह्म॒णः साशी᳚र्केण य॒ज्ञेन॑**

**यजते॒ यं का॒मये॑त॒ यज॑मानं॒ भ्रातृ॑व्यमस्य य॒ज्ञस्या॒\*शीर्ग॑च्छे॒दिति॒ तस्यै॒**

**ता व्याहृ॑तीः पुरोनुवा॒क्या॑यां दद्ध्याद् भ्रातृव्यदेव॒त्या॑ वै पु॑रोनुवा॒क्या᳚**

**भ्रातृ॑व्यमे॒वास्य॑ य॒ज्ञस्या॒ - [ ] 36**

**प्रथमकाण्डे - षष्ठः प्रश्न:**

**140**

**तै॰सं॰ 1.6.10.5**

**ऽऽशीर्ग॑च्छति॒ यान् का॒मये॑त॒ यज॑मानान्थ् स॒माव॑त्येनान् य॒ज्ञस्या॒**

**ऽऽशीर्ग॑च्छे॒दिति॒ तेषा॑मे॒ता व्याहृ॑तीः पुरोऽनुवा॒क्या॑या अर्द्ध॒र्च एकां᳚**

**दद्ध्याद्या॒ज्या॑यै पु॒रस्ता॒देकां᳚ ꣲया॒ज्या॑या अर्द्ध॒र्च एकां॒ तथै॑नान्थ्**

**स॒माव॑ती य॒ज्ञस्या॒ ऽऽशीर्ग॑च्छति॒ यथा॒ वै प॒र्जन्यः॒ सुवृ॑ष्टं॒ ꣲवर्.ष॑त्ये॒वं**

**ꣲय॒ज्ञो यज॑मानाय वर्.षति॒ स्थल॑योद॒कं प॑रिगृ॒ह्णन्त्या॒शिषा॑ य॒ज्ञं**

**ꣲयज॑मानः॒ परि॑गृह्णाति॒मनो॑ऽसि प्राजाप॒त्यं - [ ] 37**

**तै॰सं॰ 1.6.10.6**

**मन॑सा मा भू॒तेना ऽऽवि॒शेत्या॑ह॒ मनो॒ वै प्रा॑जाप॒त्यं प्रा॑जाप॒त्यो य॒ज्ञो**

**मन॑ ए॒व य॒ज्ञमा॒त्मन् ध॑त्ते॒ वाग॑स्यै॒न्द्री स॑पत्न॒क्षय॑णी वा॒चा**

**मे᳚न्द्रि॒येणाऽऽवि॒शेत्या॑है॒न्द्री वै वाग्वाच॑-मे॒वैन्द्री-मा॒त्मन् ध॑त्ते ॥ 38**

**(तेनै॒-व ब्रह्म॑- रा॒ष्ट्र-मे॒वास्य॑ य॒ज्ञस्य॑-प्राजाप॒त्यꣳ-षट्त्रि॑ꣳशच्च)**

**(अ10)**

**तै॰सं॰ 1.6.11.1**

**यो वै स॑प्तद॒शं प्र॒जाप॑तिं ꣲय॒ज्ञम॒न्वाय॑त्तं॒ ꣲवेद॒ प्रति॑ य॒ज्ञेन॑ तिष्ठति॒**

**न य॒ज्ञाद् भ्र॑ꣳशत॒ आ श्रा॑व॒येति॒ चतु॑रक्षर॒मस्तु॒ श्रौष॒डिति॒ चतु॑रक्षरं॒**

**प्रथमकाण्डे - षष्ठः प्रश्न:**

**141**

**ꣲयजेति॒ द्व्य॑क्षरं॒ ꣲये यजा॑मह॒ इति॒ पञ्चा᳚क्षरं द्व्यक्ष॒रो व॑षट्का॒र**

**ए॒ष वै स॑प्तद॒शः प्र॒जाप॑ति र्य॒ज्ञम॒न्वाय॑त्तो॒ य ए॒वं ꣲवेद॒ प्रति॑ य॒ज्ञेन॑**

**तिष्ठति॒ न य॒ज्ञाद् भ्र॑ꣳशते॒ यो वै य॒ज्ञस्य॒ प्राय॑णं प्रति॒ष्ठा- [ ] 39**

**तै॰सं॰ 1.6.11.2**

**मु॒दय॑नं॒ ꣲवेद॒ प्रति॑ष्ठिते॒नारि॑ष्टेन य॒ज्ञेन॑ स॒ᳪस्थां ग॑च्छ॒त्या**

**श्रा॑व॒यास्तु॒ श्रौष॒ड्यज॒ ये यजा॑महे वषट्का॒र ए॒तद्वै य॒ज्ञस्य॒ प्राय॑णमे॒षा**

**प्र॑ति॒ष्ठैतदु॒दय॑नं॒ ꣲय ए॒वं ꣲवेद॒ प्रति॑ष्ठिते॒नाऽरि॑ष्टेन य॒ज्ञेन॑**

**स॒ᳪस्थां ग॑च्छति॒ यो वै सू॒नृता॑यै॒ दोहं॒ ꣲवेद॑ दु॒ह ए॒वैनां᳚ ꣲय॒ज्ञो**

**वै सू॒नृता ऽऽश्रा॑व॒येत्यैवैना॑-मह्व॒दस्तु॒ - [ ] 40**

**तै॰सं॰ 1.6.11.3**

**श्रौष॒डित्यु॒पावा᳚स्रा॒ग्यजेत्युद॑नैषी॒द्ये यजा॑मह॒ इत्युपा॑ऽसदद्वषट्का॒रेण॑**

**दोग्ध्ये॒ष वै सू॒नृता॑यै॒ दोहो॒ य ए॒वं ꣲवेद॑ दु॒ह ए॒वैनां᳚ दे॒वा वै स॒त्रमा॑सत॒**

**तेषां॒ दिशो॑ऽदस्य॒न्त ए॒तामा॒र्द्रां प॒ङ्क्तिम॑पश्य॒न्ना श्रा॑व॒येति॑**

**पुरोवा॒त-म॑जनय॒न्नस्तु॒ श्रौष॒डित्य॒भ्रꣳ सम॑प्लावय॒न्॒.**

**यजेति॑ वि॒द्युत॑ - [ ] 41**

**प्रथमकाण्डे - षष्ठः प्रश्न:**

**142**

**तै॰सं॰ 1.6.11.4**

**मजनय॒न्. ये यजा॑मह॒ इति॒ प्राव॑र्.षयन्न॒भ्य॑स्तनयन् वषट्का॒रेण॒ ततो॒ वै**

**तेभ्यो॒ दिशः॒ प्राप्या॑यन्त॒ य ए॒वं ꣲवेद॒ प्रास्मै॒ दिशः॑ प्यायन्ते प्र॒जाप॑तिं**

**त्वो॒ वेद॑ प्र॒जाप॑तिस्त्वं ꣲवेद॒ यं प्र॒जाप॑ति॒र्वेद॒ स पुण्यो॑ भवत्ये॒ष वै**

**छ॑न्द॒स्यः॑ प्र॒जाप॑ति॒रा श्रा॑व॒याऽस्तु॒ श्रौष॒ड्यज॒ ये यजा॑महे वषट्का॒रो**

**य ए॒वं ꣲवेद॒ पुण्यो॑ भवति वस॒न्त - [ ] 42**

**तै॰सं॰ 1.6.11.5**

**मृ॑तू॒नां प्री॑णा॒मीत्या॑ह॒र्तवो॒ वै प्र॑या॒जा ऋ॒तूने॒व प्री॑णाति॒ ते᳚ऽस्मै प्री॒ता**

**य॑थापू॒र्वं क॑ल्पन्ते॒ कल्प॑न्तेऽस्मा ऋ॒तवो॒ य ए॒वं ꣲवेदा॒ग्नीषोम॑योर॒हं**

**दे॑वय॒ज्यया॒ चक्षु॑ष्मान् भूयास॒मित्या॑हा॒ग्नीषोमा᳚भ्यां॒ वै य॒ज्ञश्चक्षु॑ष्मा॒न्ताभ्या॑मे॒व चक्षु॑रा॒त्मन् ध॑त्ते॒ ऽग्नेर॒हं दे॑वय॒ज्यया᳚न्ना॒दो**

**भू॑यास॒मित्या॑हा॒ग्नि र्वै दे॒वाना॑मन्ना॒दस्ते नै॒ वा - [ ] 43**

**तै॰सं॰ 1.6.11.6**

**ऽन्नाद्य॑मा॒त्मन् ध॑त्ते॒ दब्धि॑र॒स्यद॑ब्धो भूयासम॒मुं द॑भेय॒मित्या॑है॒तया॒**

**वै दब्ध्या॑ दे॒वा असु॑रानदभ्नुव॒न्तयै॒व भ्रातृ॑व्यं दभ्नोत्य॒ग्नीषोम॑योर॒हं**

**दे॑वय॒ज्यया॑ वृत्र॒हा भू॑यास॒मित्या॑हा॒ऽग्नीषोमा᳚भ्यां॒ ꣲवा इन्द्रो॑**

**प्रथमकाण्डे - षष्ठः प्रश्न:**

**143**

**वृ॒त्रम॑ह॒न्ताभ्या॑मे॒व भ्रातृ॑व्यᳪ स्तृणुत इन्द्राग्नि॒योर॒हं**

**दे॑वय॒ज्यये᳚न्द्रिया॒व्य॑न्ना॒दो भू॑यास॒मित्या॑हेन्द्रिया॒व्ये॑वान्ना॒दो**

**भ॑व॒तीन्द्र॑स्या॒ - [ ] 44**

**तै॰सं॰ 1.6.11.7**

**ऽहं दे॑वय॒ज्यये᳚न्द्रिया॒वी भू॑यास॒मित्या॑हेन्द्रिया॒व्ये॑व भ॑वति**

**महे॒न्द्रस्या॒ऽहं दे॑वय॒ज्यया॑ जे॒मानं॑ महि॒मानं॑ गमेय॒मित्या॑ह**

**जे॒मान॑मे॒व म॑हि॒मानं॑ गच्छत्य॒ग्नेः स्वि॑ष्ट॒कृतो॒ऽहं दे॑वय॒ज्ययाऽऽयु॑ष्मान्**

**य॒ज्ञेन॑ प्रति॒ष्ठां ग॑मेय॒मित्या॒हायु॑रे॒वात्मन् ध॑त्ते॒ प्रति॑ य॒ज्ञेन॑-तिष्ठति ॥ 45**

**(प्र॒ति॒ष्ठा-म॑ह्व॒दस्तु॑-वि॒द्युतं॑-ꣲवस॒न्तं-तेनै॒वे-न्द्र॑स्या॒-ष्टात्रि॑ꣳशच्च)**

**(अ11)**

**तै॰सं॰ 1.6.12.1**

**इन्द्रं॑ ꣲवो वि॒श्वत॒स्परि॒ हवा॑महे॒ जने᳚भ्यः । अ॒स्माक॑मस्तु॒ केव॑लः ॥**

**इन्द्रं॒ नरो॑ ने॒मधि॑ता हवन्ते॒ यत्पार्या॑ यु॒नज॑ते॒ धिय॒स्ताः ।**

**शूरो॒ नृषा॑ता॒ शव॑सश्चका॒न आ गोम॑ति व्र॒जे भ॑जा॒ त्वन्नः॑ ॥**

**इ॒न्द्रि॒याणि॑ शतक्रतो॒ या ते॒ जने॑षु प॒ञ्चसु॑ । इन्द्र॒ तानि॑ त॒ आ वृ॑णे ॥**

**प्रथमकाण्डे - षष्ठः प्रश्न:**

**144**

**अनु॑ ते दायि म॒ह इ॑न्द्रि॒याय॑ स॒त्रा ते॒ विश्व॒मनु॑ वृत्र॒हत्ये᳚ ।**

**अनु॑-[ ] 46**

**तै॰सं॰ 1.6.12.2**

**क्ष॒त्रमनु॒ सहो॑ यज॒त्रेन्द्र॑ दे॒वेभि॒रनु॑ ते नृ॒षह्ये᳚ ॥**

**आयस्मि᳚न् थ्स॒प्तवा॑स॒वा स्तिष्ठ॑न्ति स्वा॒रुहो॑ यथा ।**

**ऋषि॑र्.ह दीर्घ॒श्रुत्त॑म॒ इन्द्र॑स्य घ॒र्मो अति॑थिः ॥**

**आ॒मासु॑ प॒क्वमैर॑य॒ आ सूर्य॑ꣳ रोहयो दि॒वि ।**

**घ॒र्मं न सामं॑ तपता सुवृ॒क्तिभि॒-र्जुष्टं॒ गिर्व॑णसे॒ गिरः॑ ॥**

**इन्द्र॒मिद् गा॒थिनो॑ बृ॒हदिन्द्र॑ म॒र्केभि॑ र॒र्किणः॑ । इन्द्रं॒ ꣲवाणी॑रनूषत ॥**

**गाय॑न्ति त्वा गाय॒त्रिणो - [ ] 47**

**तै॰सं॰ 1.6.12.3**

**ऽर्चं॑ त्य॒र्क म॒र्किणः॑ ।**

**ब्र॒ह्माण॑स्त्वा शतक्रत॒-वुद्व॒ꣳ शमि॑व येमिरे ॥**

**अ॒ꣳहो॒मुचे॒ प्र भ॑रेमा मनी॒षा मो॑षिष्ठ॒-दाव्न्ने॑ सुम॒तिं गृ॑णा॒नाः ।**

**इ॒दमि॑न्द्र॒ प्रति॑ ह॒व्यं गृ॑भाय स॒त्याः स॑न्तु॒ यज॑मानस्य॒ कामाः᳚ ॥**

**प्रथमकाण्डे - षष्ठः प्रश्न:**

**145**

**वि॒वेष॒ यन्मा॑ धि॒षणा॑ ज॒जान॒ स्तवै॑ पु॒रा पार्या॒दिन्द्र॒ मह्नः॑ ।**

**अꣳह॑सो॒ यत्र॑ पी॒पर॒द्यथा॑ नो ना॒वेव॒ यान्त॑ मु॒भये॑ हवन्ते ॥**

**प्र स॒म्राजं॑ प्रथ॒म म॑द्ध्व॒राणा॑ - [ ] 48**

**तै॰सं॰ 1.6.12.4**

**मꣳ हो॒मुचं॑ ꣲवृष॒भं ꣲय॒ज्ञिया॑नां ।**

**अ॒पां नपा॑तमश्विना॒ हय॑न्त म॒स्मिन्न॑र इन्द्रि॒यं ध॑त्त॒मोजः॑ ॥**

**वि न॑ इन्द्र॒ मृधो॑ जहि नी॒ चा य॑च्छ पृतन्य॒तः ।**

**अ॒ध॒स्प॒दं तमीं᳚ कृधि॒ यो अ॒स्माꣳ अ॑भि॒दास॑ति ॥**

**इन्द्र॑ क्ष॒त्रम॒भि वा॒ममोजो ऽजा॑यथा वृषभ चर्.षणी॒नां ।**

**अपा॑नुदो॒ जन॑ममित्र॒ यन्त॑ मु॒रुं दे॒वेभ्यो॑ अकृणोरु लो॒कं ॥**

**मृ॒गो न भी॒मः कु॑च॒रो गि॑रि॒ष्ठाः प॑रा॒वत॒ - [ ] 49**

**तै॰सं॰ 1.6.12.5**

**आ ज॑गामा॒ पर॑स्याः ।**

**सृ॒कꣳ स॒ꣳशाय॑ प॒विमि॑न्द्र ति॒ग्मं ꣲवि शत्रू᳚न् ताढि॒ विमृधो॑ नुदस्व ॥**

**वि शत्रू॒न्. वि मृधो॑ नुद॒ विवृ॒त्रस्य॒ हनू॑ रुज ।**

**प्रथमकाण्डे - षष्ठः प्रश्न:**

**146**

**वि म॒न्युमि॑न्द्र भामि॒तो॑ ऽमित्र॑स्याऽभि॒ दास॑तः ॥**

**त्रा॒तार॒मिन्द्र॑ मवि॒तार॒ मिन्द्र॒ꣳ हवे॑ हवे सु॒हव॒ꣳ शूर॒मिन्द्रं᳚ ।**

**हु॒वे नु श॒क्रं पु॑रुहू॒तमिन्द्र॑ᳪ स्व॒स्ति नो॑ म॒घवा॑ धा॒त्विन्द्रः॑ ॥**

**मा ते॑ अ॒स्याꣳ - [ ] 50**

**तै॰सं॰ 1.6.12.6**

**स॑हसाव॒न् परि॑ष्टा व॒घाय॑ भूम हरिवः परा॒दै ।**

**त्राय॑स्व नो ऽवृ॒केभि॒-र्वरू॑थै॒ स्तव॑ प्रि॒यासः॑ सू॒रिषु॑ स्याम ॥**

**अन॑वस्ते॒ रथ॒मश्वा॑य तक्ष॒न्-त्वष्टा॒ वज्रं॑ पुरुहूत द्यु॒मन्तं᳚ ।**

**ब्र॒ह्माण॒ इन्द्रं॑ म॒हय॑न्तो अ॒र्कैरव॑र्द्धय॒न्नह॑ये॒ हन्त॒ वा उ॑ ॥**

**वृष्णे॒ यत् ते॒ वृष॑णो अ॒र्कमर्चा॒निन्द्र॒ ग्रावा॑णो॒ अदि॑तिः स॒जोषाः᳚ ।**

**अ॒न॒श्वासो॒ ये प॒वयो॑ऽर॒था इन्द्रे॑षिता अ॒भ्यव॑र्त्तंत॒ दस्यून्॑ ॥ 51**

**(वृ॒त्र॒हत्येऽनु॑-गाय॒त्रिणो᳚-ऽध्व॒राणां᳚-परा॒वतो॒-ऽस्याम॒ष्टाच॑त्वारिꣳशच्च) (अ12)**

**प्रथमकाण्डे - षष्ठः प्रश्न:**

**147**

**ठय्ग्ल्फ्ग् ऍब्य्श्ग्त् ष्त्ळ्ण् ल्ळ्ग्य्ळ्त्फ्ञ् ठग्छ्ग्प्ल् ब्झ् 1 ळ्ब् 12 अफ्व्श्ग्ग्ध्ग्प्ल् :-**

**(संत्वा॑ सिञ्चामि-ध्रु॒वो᳚-ऽस्य॒ग्निर्मा॑-ब॒र्.हिषो॒ऽह-मा प्या॑यता॒-मग॑न्म॒**

**-यथा॒ वै-यो वै श्र॒द्धां- प्र॒जाप॑ति॒र्यज्ञान्-ध्रु॒वो॑सीत्या॑ह॒-यो वै**

**स॑प्तद॒श-मिन्द्रं॑ ꣲवो॒-द्वाद॑श । )**

**ऍब्य्श्ग्त् ष्त्ळ्ण् ल्ळ्ग्य्ळ्त्फ्ञ् ठग्छ्ग्प्ल् ब्झ् 1, 11, 21 दज्य्त्ज्ल् ब्झ् ठग्फ्च्ण्ग्ग्ळ्त्ल् :-**

**(संत्वा॑-ब॒र्.हिषो॒ऽहं-ꣲयथा॒ वा-ए॒वं ꣲवि॒द्वा-ञ्छ्रौष॑ट्थ्-साहसाव॒-**

**न्नेक॑पञ्चा॒शत् । )**

**ऊत्य्ल्ळ् ग्फ्छ् एग्ल्ळ् ठग्छ्ग्प् ब्झ् दत्स्ळ्ण् ठय्ग्ल्फ्ग्प्:-**

**(संत्वा॑-सिञ्चामि॒ दस्यून्॑ । )**

**॥ हरिः॑ ओं ॥**

**॥ कृष्ण यजुर्वेदीय तैत्तिरीय संहितायां प्रथमकाण्डे**

**षष्ठः प्रश्नः समाप्तः ॥**

**------------------------------------**

**प्रथमकाण्डे - सप्तमः प्रश्न:**

**148**

**ओं नमः परमात्मने**

**, श्री महागणपतये नमः,**

**श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ह॒रिः॒ ओं**

**1.7 प्रथमकाण्डे सप्तमः प्रश्नः याजमान-ब्राह्मणं**

**तै॰सं॰ 1.7.1.1**

**पा॒क॒य॒ज्ञं ꣲवा अन्वाहि॑ताग्नेः प॒शव॒ उप॑ तिष्ठन्त॒ इडा॒ खलु॒ वै**

**पा॑कय॒ज्ञः सैषाऽन्त॒रा प्र॑याजानूया॒जान् यज॑मानस्य लो॒केऽव॑हिता॒**

**तामा᳚ह्रि॒यमा॑णाम॒भि म॑न्त्रयेत॒ सुरू॑पवर्.षवर्ण॒ एहीति॑ प॒शवो॒ वा इडा॑**

**प॒शूने॒वोप॑ ह्वयते य॒ज्ञं ꣲवै दे॒वा अदु॑ह्रन् य॒ज्ञोऽसु॑राꣳ अदुह॒त् तेऽसु॑रा**

**य॒ज्ञदु॑ग्धाः॒ परा॑ऽभव॒न्. यो वै य॒ज्ञस्य॒ दोहं॑ ꣲवि॒द्वान् - [ ] 1**

**तै॰सं॰ 1.7.1.2**

**यज॒तेऽप्य॒न्यं ꣲयज॑मानं दुहे॒ सा मे॑ स॒त्याऽऽशीर॒स्य य॒ज्ञस्य॑**

**भूया॒दित्या॑है॒ष वै य॒ज्ञस्य॒ दोह॒स्तेनै॒वैनं॑ दुहे॒ प्रत्ता॒ वै गौर्दु॑हे॒ प्रत्तेडा॒**

**यज॑मानाय दुह ए॒ते वा इडा॑यै॒ स्तना॒ इडोप॑हू॒तेति॑ वा॒युर्व॒थ्सो यर्.हि॒**

**होतेडा॑मुप॒ह्वये॑त॒ तर्.हि॒ यज॑मानो॒ होता॑र॒मीक्ष॑माणो वा॒युं**

**मन॑साद्ध्यायेन् - [ ] 2**

**प्रथमकाण्डे - सप्तमः प्रश्न:**

**149**

**तै॰सं॰ 1.7.1.3**

**मा॒त्रे व॒थ्समु॒पाव॑सृजति॒ सर्वे॑ण॒ वै य॒ज्ञेन॑ दे॒वाः सु॑व॒र्गं ꣲलो॒कमा॑यन्**

**पाकय॒ज्ञेन॒ मनु॑रश्राम्य॒थ्सेडा॒ मनु॑मु॒पाव॑र्तत॒ तां दे॑वासु॒रा व्य॑ह्वयन्त**

**प्र॒तीचीं᳚ दे॒वाः परा॑ची॒मसु॑राः॒ सा दे॒वानु॒पाव॑र्तत प॒शवो॒ वै तद्**

**दे॒वान॑वृणत प॒शवोऽसु॑रानजहु॒र्यं का॒मये॑ता प॒शुः स्या॒दिति॒ परा॑चीं॒**

**तस्येडा॒मुप॑ ह्वयेताप॒शुरे॒व भ॑वति॒ यं - [ ] 3**

**तै॰सं॰ 1.7.1.4**

**का॒मये॑त पशु॒मान्थ् स्या॒दिति॑ प्र॒तीचीं॒ तस्येडा॒मुप॑ह्वयेत पशु॒माने॒व**

**भ॑वति ब्रह्मवा॒दिनो॑ वदन्ति॒ स त्वा इडा॒मुप॑ ह्वयेत॒ य इडा॑मुप॒-**

**हूया॒त्मान॒-मिडा॑यामुप॒-ह्वये॒तेति॒ सा नः॑ प्रि॒या**

**सु॒प्रतू᳚र्ति-र्म॒घोनीत्या॒-हेडा॑मे॒वोप॒हूया॒ऽऽत्मान॒मिडा॑या॒मुप॑ह्वयते॒ व्य॑स्तमिव॒ वा ए॒तद्य॒ज्ञस्य॒ यदिडा॑**

**सा॒मि प्रा॒श्नन्ति - [ ] 4**

**तै॰सं॰ 1.7.1.5**

**सा॒मि मा᳚र्जयन्त ए॒तत् प्रति॒ वा असु॑राणां ꣲय॒ज्ञो व्य॑च्छिद्यत॒**

**ब्रह्म॑णा दे॒वाः सम॑दधु॒ र्बृह॒स्पति॑-स्तनुतामि॒मं न॒ इत्या॑ह॒**

**प्रथमकाण्डे - सप्तमः प्रश्न:**

**150**

**ब्रह्म॒ वै दे॒वानां॒ बृह॒स्पति॒ र्ब्रह्म॑णै॒व य॒ज्ञꣳ सं द॑धाति॒ विच्छि॑न्नं**

**ꣲय॒ज्ञꣳ समि॒मं द॑धा॒त्वित्या॑ह॒ संत॑त्यै॒ विश्वे॑ दे॒वा इ॒ह मा॑दयन्ता॒मित्या॑ह**

**सं॒तत्यै॒व य॒ज्ञं दे॒वेभ्योऽनु॑ दिशति॒ यां ꣲवै - [ ] 5**

**तै॰सं॰ 1.7.1.6**

**य॒ज्ञे दक्षि॑णां॒ ददा॑ति॒ ताम॑स्य प॒शवोऽनु॒ सं क्रा॑मन्ति॒ स ए॒ष**

**ई॑जा॒नो॑ऽप॒शुर्भावु॑को॒ यज॑मानेन॒ खलु॒ वै तत्का॒र्य॑-मित्या॑हु॒ र्यथा॑**

**देव॒त्रा द॒त्तं कु॑र्वी॒तात्मन् प॒शून् र॒मये॒तेति॒ ब्रद्ध्न॒ पिन्व॒स्वेत्या॑ह**

**य॒ज्ञो वै ब्र॒द्ध्नो य॒ज्ञमे॒व तन्म॑हय॒त्यथो॑ देव॒त्रैव द॒त्तं कु॑रुत**

**आ॒त्मन् प॒शून् र॑मयते॒ दद॑तो मे॒ ( ) मा क्षा॒यीत्या॒हाक्षि॑तिमे॒वोपै॑ति**

**कुर्व॒तो मे॒ मोप॑ दस॒दित्या॑ह भू॒मान॑मे॒वोपै॑ति ॥ 6**

**(वि॒द्वान्-ध्या॑येद्-भवति॒ यं-प्रा॒श्नन्ति॒-यां ꣲवै-म॒-**

**एका॒न्न वि॑ꣳश॒तिश्च॑ )(अ1)**

**तै॰सं॰ 1.7.2.1**

**सᳪश्र॑वा ह सौवर्चन॒सः तुमि॑ञ्ज॒मौपो॑दिति-मुवाच॒**

**यथ्स॒त्रिणा॒ꣳ होताऽभूः॒ कामिडा॒मुपा᳚ह्वथा॒ इति॒**

**प्रथमकाण्डे - सप्तमः प्रश्न:**

**151**

**तामुपा᳚ह्व॒ इति॑ होवाच॒ या प्रा॒णेन॑ दे॒वान् दा॒धार॑ व्या॒नेन॑ मनु॒ष्या॑नपा॒नेन॑**

**पि॒तॄनिति॑ छि॒नत्ति॒ सा न छि॑न॒त्ती(3) इति॑ छि॒नत्तीति॑ होवाच॒ शरी॑रं॒ ꣲवा**

**अ॑स्यै॒ तदुपा᳚ह्वथा॒ इति॑ होवाच॒ गौर्वा - [ ] 7**

**तै॰सं॰ 1.7.2.2**

**अ॑स्यै॒ शरी॑रं॒ गां ꣲवाव तौ तत् पर्य॑वदतां॒ ꣲया य॒ज्ञे दी॒यते॒ सा**

**प्रा॒णेन॑ दे॒वान् दा॑धार॒ यया॑ मनु॒ष्या॑ जीव॑न्ति॒ सा व्या॒नेन॑**

**मनु॒ष्यान्॑ यां पि॒तृभ्यो॒ घ्नन्ति॒ साऽपा॒नेन॑ पि॒तॄन् य ए॒वं ꣲवेद॑**

**पशु॒मान् भ॑व॒त्यथ॒ वै तामुपा᳚ह्व॒ इति॑ होवाच॒ या प्र॒जाः प्र॒भव॑न्तीः॒**

**प्रत्या॒भव॒तीत्यन्नं॒ ꣲवा अ॑स्यै॒ तदु - [ ] 8**

**तै॰सं॰ 1.7.2.3**

**पा᳚ह्वथा॒ इति॑ होवा॒चौष॑धयो॒ वा अ॑स्या॒ अन्न॒मोष॑धयो॒ वै प्र॒जाः**

**प्र॒भव॑न्तीः॒ प्रत्या भ॑वन्ति॒ य ए॒वं ꣲवेदा᳚न्ना॒दो भ॑व॒त्यथ॒ वै तामुपा᳚ह्व॒ इति॑**

**होवाच॒ या प्र॒जाः प॑रा॒भव॑न्ती-रनुगृ॒ह्णाति॒ प्रत्या॒भव॑न्ती र्गृ॒ह्णातीति॑ प्रति॒ष्ठां**

**ꣲवा अ॑स्यै॒ तदुपा᳚ह्वथा॒ इति॑ होवाचे॒ यं ꣲवा अ॑स्यै प्रति॒ष्ठे- [ ] 9**

**प्रथमकाण्डे - सप्तमः प्रश्न:**

**152**

**तै॰सं॰ 1.7.2.4**

**यं ꣲवै प्र॒जाः प॑रा॒भव॑न्ती॒रनु॑ गृह्णाति॒ प्रत्या॒भव॑न्ती र्गृह्णाति॒**

**य ए॒वं ꣲवेद॒ प्रत्ये॒व ति॑ष्ठ॒त्यथ॒ वै तामुपा᳚ह्व॒ इति॑ होवाच॒ यस्यै॑**

**नि॒क्रम॑णे घृ॒तं प्र॒जाः सं॒जीव॑न्तीः॒ पिब॒न्तीति॑ छि॒नत्ति॒ सा न छि॑न॒त्ती(3)**

**इति॒ न छि॑न॒त्तीति॑ होवाच॒ प्र तु ज॑नय॒तीत्ये॒ष वा इडा॒मुपा᳚ह्वथा॒ इति॑**

**( ) होवाच॒ वृष्टि॒र्वा इडा॒ वृष्ट्यै॒ वै नि॒क्रम॑णे घृ॒तं प्र॒जाः सं॒जीव॑न्तीः**

**पिबन्ति॒ य ए॒वं ꣲवेद॒ प्रैव जा॑यतेऽन्ना॒दो भ॑वति ॥ 10**

**(गौर्वा-अ॑स्यै॒-तत्-प्र॑ति॒ष्ठा-ऽह्व॑था॒-इति॑-विꣳश॒तिश्च॑) (अ2)**

**तै॰सं॰ 1.7.3.1**

**प॒रोक्षं॒ ꣲवा अ॒न्ये दे॒वा इ॒ज्यन्ते᳚ प्र॒त्यक्ष॑म॒न्ये यद्यज॑ते॒ य ए॒व दे॒वाः**

**प॒रोक्ष॑मि॒ज्यन्ते॒ ताने॒व तद्य॑जति॒यद॑न्वाहा॒र्य॑-मा॒हर॑त्ये॒ते वै दे॒वाः प्र॒त्यक्षं॒**

**ꣲयद् ब्रा᳚ह्म॒णास्ताने॒व तेन॑ प्रीणा॒त्यथो॒ दक्षि॑णै॒वास्यै॒षाऽथो॑ य॒ज्ञस्यै॒व**

**छि॒द्रमपि॑ दधाति॒ यद्वै य॒ज्ञस्य॑ क्रू॒रं ꣲयद्विलि॑ष्टं॒ तद॑न्वाहा॒र्ये॑णा॒ - [ ] 11**

**तै॰सं॰ 1.7.3.2**

**ऽन्वाह॑रति॒ तद॑न्वाहा॒र्य॑स्या-न्वाहार्य॒त्वं दे॑वदू॒ता वा ए॒ते यदृ॒त्विजो॒**

**यद॑न्वाहा॒र्य॑-मा॒हर॑ति देवदू॒ताने॒व प्री॑णातिप्र॒जाप॑ति र्दे॒वेभ्यो॑ य॒ज्ञान्**

**प्रथमकाण्डे - सप्तमः प्रश्न:**

**153**

**व्यादि॑श॒थ् स रि॑रिचा॒नो॑ऽमन्यत॒ स ए॒तम॑न्वाहा॒र्य॑-मभ॑क्त-मपश्य॒त् त**

**मा॒त्मन्न॑धत्त॒स वा ए॒ष प्रा॑जाप॒त्यो यद॑न्वाहा॒र्यो॑ यस्यै॒वं ꣲवि॒दुषो᳚न्वाहा॒र्य॑**

**आह्रि॒यते॑ सा॒क्षादे॒व प्र॒जाप॑तिमृद्ध्नो॒त्य-प॑रिमितोनि॒रुप्योऽप॑रिमितः**

**प्र॒जाप॑तिः प्र॒जाप॑ते॒- [ ] 12**

**तै॰सं॰ 1.7.3.3**

**राप्त्यै॑ दे॒वा वै यद्य॒ज्ञेऽकु॑र्वत॒ तदसु॑रा अकुर्वत॒ ते दे॒वा ए॒तं**

**प्रा॑जाप॒त्य-म॑न्वाहा॒र्य॑-मपश्य॒न् तम॒न्वाह॑रन्त॒ ततो॑ दे॒वा अभ॑व॒न्**

**परासु॑रा॒ यस्यै॒वं ꣲवि॒दुषो᳚ऽन्वाहा॒र्य॑ आह्रि॒यते॒ भव॑त्या॒त्मना॒ परा᳚स्य॒**

**भ्रातृ॑व्यो भवति य॒ज्ञेन॒ वा इ॒ष्टी प॒क्वेन॑ पू॒र्ती यस्यै॒वं ꣲवि॒दुषो᳚ऽन्वाहा॒र्य॑**

**आह्रि॒यते॒ स त्वे॑वेष्टा॑पू॒र्ती प्र॒जाप॑तेर्भा॒गो॑ऽसी- [ ] 13**

**तै॰सं॰ 1.7.3.4**

**त्या॑ह प्र॒जाप॑तिमे॒व भा॑ग॒धेये॑न॒ सम॑र्द्धय॒त्यूर्ज॑स्वा॒न्**

**पय॑स्वा॒नित्या॒होर्ज॑-मे॒वास्मि॒न् पयो॑ दधाति प्राणापा॒नौ मे॑ पाहि**

**समानव्या॒नौ मे॑ पा॒हीत्या॑हा॒- ऽऽशिष॑मे॒वैतामा शा॒स्ते ऽक्षि॑तो॒**

**ऽस्यक्षि॑त्यै त्वा॒ मा मे᳚ क्षेष्ठा अ॒मुत्रा॒मुष्मि॑न् ꣲलो॒क इत्या॑ह॒ क्षीय॑ते॒**

**प्रथमकाण्डे - सप्तमः प्रश्न:**

**154**

**वा अ॒मुष्मि॑न् ꣲलो॒के ऽन्न॑मि॒तः प्र॑दान॒ᳪ ह्य॑मु॒ष्मि॑न् ꣲलो॒के ( )**

**प्र॒जा उ॑प॒जीव॑न्ति॒ यदे॒व- म॑भिमृ॒शत्यक्षि॑ति-मे॒वैन॑द्गमयति॒**

**नास्या॒मुष्मि॑न् ꣲलो॒केऽन्नं॑ क्षीयते ॥ 14**

**(अ॒न्वा॒हा॒र्ये॑ण-प्र॒जाप॑ते-रसि॒-ह्य॑मुष्मि॑न् ꣲलो॒के-पञ्च॑दश च )(अ3)**

**तै॰सं॰ 1.7.4.1**

**ब॒र्.हिषो॒ऽहं दे॑वय॒ज्यया᳚ प्र॒जावा᳚न् भूयास॒मित्या॑ह ब॒र्.हिषा॒ वै**

**प्र॒जाप॑तिः प्र॒जा अ॑सृजत॒ तेनै॒व प्र॒जाः सृ॑जते॒ नरा॒शꣳ**

**स॑स्या॒हं दे॑वय॒ज्यया॑ पशु॒मान् भू॑यास॒मित्या॑ह॒ नरा॒शꣳसे॑न॒ वै**

**प्र॒जाप॑तिः प॒शून॑सृजत॒ तेनै॒व प॒शून्थ् सृ॑जते॒ऽग्नेः स्वि॑ष्ट॒कृतो॒ऽहं**

**दे॑वय॒ज्ययाऽऽयु॑ष्मान् य॒ज्ञेन॑ प्रति॒ष्ठां ग॑मेय॒मित्या॒हाऽऽयु॑रे॒वात्मन्**

**ध॑त्ते॒ प्रति॑ य॒ज्ञेन॑ तिष्ठति दर्.शपूर्णमा॒सयो॒र् - [ ] 15**

**तै॰सं॰ 1.7.4.2**

**वै दे॒वा उज्जि॑ति॒-मनूद॑जयन् दर्.शपूर्णमा॒साभ्या॒-मसु॑रा॒नपा॑नुदन्ता॒ग्ने-र॒हमुज्जि॑ति॒-मनूज्जे॑ष॒-मित्या॑ह दर्.शपूर्णमा॒सयो॑रे॒व**

**दे॒वता॑नां॒ ꣲयज॑मान॒ उज्जि॑ति॒मनूज्ज॑यति दर्.शपूर्णमा॒साभ्यां॒ भ्रातृ॑व्या॒नप॑**

**प्रथमकाण्डे - सप्तमः प्रश्न:**

**155**

**नुदते॒ वाज॑वतीभ्यां॒ ꣲव्यू॑ह॒त्यन्नं॒ ꣲवै वाजोऽन्न॑मे॒वाव॑ रुन्धे॒ द्वाभ्यां॒**

**प्रति॑ष्ठित्यै॒यो वै य॒ज्ञस्य॒ द्वौ दोहौ॑ वि॒द्वान् यज॑त उभ॒यत॑ - [ ] 16**

**तै॰सं॰ 1.7.4.3**

**ए॒व य॒ज्ञं दु॑हे पु॒रस्ता᳚च्चो॒परि॑ष्टाच्चै॒ष वा अ॒न्यो य॒ज्ञस्य॒ दोह॒**

**इडा॑याम॒न्यो यर्.हि॒ होता॒ यज॑मानस्य॒ नाम॑ गृह्णी॒यात् तर्.हि॑ ब्रूया॒देमा**

**अ॑ग्मन्ना॒शिषो॒ दोह॑कामा॒ इति॒ सᳪस्तु॑ता ए॒व दे॒वता॑ दु॒हेऽथो॑ उभ॒यत॑**

**ए॒व य॒ज्ञं दु॑हे पु॒रस्ता᳚-च्चो॒परि॑ष्टा-च्च॒रोहि॑तेन त्वा॒ऽग्निर्दे॒वतां᳚**

**गमय॒त्वित्या॑है॒ते वै दे॑वा॒श्वा - [ ] 17**

**तै॰सं॰ 1.7.4.4**

**यज॑मानः प्रस्त॒रो यदे॒तैः प्र॑स्त॒रं प्र॒हर॑ति देवा॒श्वैरे॒व यज॑मानꣳ**

**सुव॒र्गं ꣲलो॒कं ग॑मयति॒ वि ते॑ मुञ्चामि रश॒ना वि र॒श्मीनित्या॑है॒ष वा**

**अ॒ग्नेर्वि॑मो॒कस्ते-नै॒वैनं॒ ꣲविमु॑ञ्चति॒विष्णोः᳚ शं॒ꣲयोर॒हं दे॑वय॒ज्यया॑**

**य॒ज्ञेन॑ प्रति॒ष्ठां ग॑मेय॒मित्या॑हय॒ज्ञो वै विष्णु॑र्य॒ज्ञ ए॒वान्त॒तः प्रति॑तिष्ठति॒**

**सोम॑स्या॒हं दे॑वय॒ज्यया॑ सु॒रेता॒ - [ ] 18**

**प्रथमकाण्डे - सप्तमः प्रश्न:**

**156**

**तै॰सं॰ 1.7.4.5**

**रेतो॑ धिषी॒येत्या॑ह॒ सोमो॒ वै रे॑तो॒धास्तेनै॒व रेत॑ आ॒त्मन् ध॑त्ते॒त्वष्टु॑र॒हं**

**दे॑वय॒ज्यया॑ पशू॒नाꣳ रू॒पं पु॑षेय॒मित्या॑ह॒त्वष्टा॒ वै प॑शू॒नां मि॑थु॒नाना॑ꣳ**

**रूप॒कृत्तेनै॒व प॑शू॒नाꣳरू॒पमा॒त्मन् ध॑त्ते दे॒वानां॒ पत्नी॑र॒ग्नि र्गृ॒हप॑ति**

**र्य॒ज्ञस्य॑ मिथु॒नं तयो॑र॒हं दे॑वय॒ज्यया॑ मिथु॒नेन॒ प्रभू॑यास॒मित्या॑है॒तस्मा॒द्वै मि॑थु॒नात् प्र॒जाप॑ति र्मिथु॒नेन॒ - [ ] 19**

**तै॰सं॰ 1.7.4.6**

**प्राजा॑यत॒ तस्मा॑दे॒व यज॑मानो मिथु॒नेन॒ प्रजा॑यतेवे॒दो॑ऽसि॒ वित्ति॑रसि**

**वि॒देयेत्या॑ह वे॒देन॒ वै दे॒वा असु॑राणां ꣲवि॒त्तं ꣲवेद्य॑मविन्दन्त॒ तद्वे॒दस्य॑**

**वेद॒त्वं ꣲयद्य॒द्भ्रातृ॑व्यस्याभि॒द्ध्याये॒त् तस्य॒ नाम॑ गृह्णीया॒त् तदे॒वास्य॒**

**सर्वं॑ ꣲवृङ्क्ते घृ॒तव॑न्तं कुला॒यिन॑ꣳ रा॒यस्पोष॑ꣳ सह॒स्रिणं॑ ꣲवे॒दो द॑दातु**

**वा॒जिन॒मित्या॑ह॒ प्रस॒हस्रं॑ प॒शूना᳚प्नो॒त्या ( ) स्य॑ प्र॒जायां᳚ ꣲवा॒जी**

**जा॑यते॒ य ए॒वं ꣲवेद॑ ॥ 20**

**(द॒र्.श॒पू॒र्ण॒मासयो॑-रुभ॒यतो॑-देवा॒श्वाः-सु॒रेताः᳚-प्र॒जाप॑तिर्मिथु॒नेना᳚ऽऽप्नोत्य॒-ष्टौ च॑) (अ4)**

**प्रथमकाण्डे - सप्तमः प्रश्न:**

**157**

**तै॰सं॰ 1.7.5.1**

**ध्रु॒वां ꣲवै रिच्य॑मानां ꣲय॒ज्ञोऽनु॑ रिच्यते य॒ज्ञं ꣲयज॑मानो॒ यज॑मानं प्र॒जा**

**ध्रु॒वामा॒प्याय॑मानां ꣲय॒ज्ञोऽन्वा प्या॑यते य॒ज्ञं ꣲयज॑मानो॒ यज॑मानं प्र॒जा**

**आप्या॑यतां ध्रु॒वा घृ॒तेनेत्या॑ह ध्रु॒वामे॒वाऽऽप्या॑ययति॒-तामा॒प्याय॑मानां**

**ꣲय॒ज्ञोऽन्वा प्या॑यते य॒ज्ञं ꣲयज॑मानो॒ यज॑मानं प्र॒जाः प्र॒जाप॑ते र्वि॒भान्नाम॑**

**लो॒कस्तस्मि॑ᳪस्त्वा दधामि स॒ह यज॑माने॒नेत्या॑ - [ ] 21**

**तै॰सं॰ 1.7.5.2**

**हा॒यं ꣲवै प्र॒जाप॑ते र्वि॒भान्नाम॑ लो॒कस्तस्मि॑न्ने॒वैनं॑ दधाति स॒ह यज॑मानेन॒**

**रिच्य॑त इव॒ वा ए॒तद्यद्यज॑ते॒यद्य॑जमानभा॒गं प्रा॒श्नात्या॒त्मान॑मे॒व**

**प्री॑णात्ये॒तावा॒न्॒. वै य॒ज्ञो यावान्॑ यजमानभा॒गो य॒ज्ञो यज॑मानो॒**

**यद्य॑जमानभा॒गं प्रा॒श्नाति॑ य॒ज्ञ ए॒व य॒ज्ञं प्रति॑ष्ठापयत्ये॒तद्वै सू॒यव॑स॒ꣳ**

**सोद॑कं॒ यद् ब॒र्.हिश्चाऽऽप॑श्चै॒तद् - [ ] 22**

**तै॰सं॰ 1.7.5.3**

**यज॑मानस्या॒ऽऽयत॑नं॒ ꣲयद्वेदि॒र्यत् पू᳚र्णपा॒त्रम॑न्तर्वे॒दि नि॒नय॑ति॒ स्व**

**ए॒वाऽऽय॑तने सू॒यव॑स॒ꣳ सोद॑कं कुरुते॒ सद॑सि॒ सन्मे॑ भूया॒**

**इत्या॒हाऽऽपो॒ वै य॒ज्ञ आपो॒ऽमृतं॑ ꣲय॒ज्ञमे॒वामृत॑-मा॒त्मन् ध॑त्ते॒ सर्वा॑णि॒**

**प्रथमकाण्डे - सप्तमः प्रश्न:**

**158**

**वै भू॒तानि॑ व्र॒तमु॑प॒यन्त॒मनूप॑ यन्ति॒ प्राच्यां᳚ दि॒शि दे॒वा ऋ॒त्विजो॑**

**मार्जयन्ता॒मित्या॑है॒ष वै द॑र्.शपूर्णमा॒सयो॑रवभृ॒थो - [ ] 23**

**तै॰सं॰ 1.7.5.4**

**यान्ये॒वैनं॑ भू॒तानि॑ व्र॒तमु॑प॒यन्त॑-मनूप॒यन्ति॒ तैरे॒व स॒हाव॑भृ॒थमवै॑ति॒**

**विष्णु॑मुखा॒ वै दे॒वा श्छन्दो॑भिरि॒मान् ꣲलो॒का-न॑नपज॒य्यम॒भ्य॑जय॒न्॒.**

**यद्वि॑ष्णुक्र॒मान् क्रम॑ते॒ विष्णु॑रे॒व भू॒त्वा यज॑मान॒ श्छन्दो॑भिरि॒मान्ꣲलो॒का-न॑नपज॒य्यम॒भि ज॑यति॒ विष्णोः॒ क्रमो᳚ऽस्यभिमाति॒हेत्या॑ह गाय॒त्री**

**वै पृ॑थि॒वी त्रैष्टु॑भम॒न्तरि॑क्षं॒ जाग॑ती॒द्यौरानु॑ष्टुभी॒र्दिश॒ श्छन्दो॑भिरे॒वेमान्ꣲलो॒कान् य॑थापू॒र्वम॒भि ज॑यति ॥ 24**

**(यज॑माने॒नेति॑-चै॒ तद॑-वभृ॒थो-दिशः॑-स॒प्त च॑) (अ5)**

**तै॰सं॰ 1.7.6.1**

**अग॑न्म॒ सुवः॒ सुव॑रग॒न्मेत्या॑ह सुव॒र्गमे॒व लो॒कमे॑तिसं॒दृश॑स्ते॒**

**मा छि॑थ्सि॒ यत्ते॒ तप॒स्तस्मै॑ ते॒ मा वृ॒क्षीत्या॑हयथाय॒जुरे॒वैतथ् सु॒भूर॑सि॒**

**श्रेष्ठो॑ रश्मी॒नामा॑यु॒र्द्धा अ॒स्यायु॑र्मे धे॒हीत्या॑हा॒ऽऽशिष॑मे॒वैतामा शा᳚स्ते॒**

**प्र वा ए॒षो᳚ऽस्मान्ँ लो॒काच्च्य॑वते॒ यो - [ ] 25**

**प्रथमकाण्डे - सप्तमः प्रश्न:**

**159**

**तै॰सं॰ 1.7.6.2**

**वि॑ष्णुक्र॒मान् क्रम॑ते सुव॒र्गाय॒ हि लो॒काय॑ विष्णुक्र॒माः क्र॒म्यन्ते᳚**

**ब्रह्मवा॒दिनो॑ वदन्ति॒ सत्वै वि॑ष्णुक्र॒मान् क्र॑मेत॒ य इ॒मान् ꣲलो॒कान्**

**भ्रातृ॑व्यस्य सं॒ꣲविद्य॒ पुन॑रि॒मं ꣲलो॒कं प्र॑त्यव॒रोहे॒दित्ये॒ष वा अ॒स्य लो॒कस्य॑**

**प्रत्यवरो॒हो यदाहे॒दम॒हम॒मुं भ्रातृ॑व्यमा॒भ्यो दि॒ग्भ्यो᳚ऽस्यै दि॒व इती॒माने॒व**

**लो॒कान् भ्रातृ॑व्यस्य सं॒ꣲविद्य॒ पुन॑रि॒मं ꣲलो॒कं प्र॒त्यव॑रोहति॒ सं - [ ] 26**

**तै॰सं॰ 1.7.6.3**

**ज्योति॑षाऽभूव॒मित्या॑हा॒स्मिन्ने॒व लो॒के प्रति॑ तिष्ठत्यै॒-न्द्रीमा॒वृत॑म॒न्वाव॑र्त॒**

**इत्या॑हा॒सौ वा आ॑दि॒त्य इन्द्र॒स्तस्यै॒वा ऽऽवृत॒मनु॑ प॒र्याव॑र्तते दक्षि॒णा**

**प॒र्याव॑र्तते॒ स्वमे॒व वी॒र्य॑मनु॑ प॒र्याव॑र्तते॒ तस्मा॒द् दक्षि॒णोऽर्द्ध॑ आ॒त्मनो॑**

**वी॒र्या॑वत्त॒रोऽथो॑ आदि॒त्यस्यै॒वाऽऽवृत॒मनु॑ प॒र्याव॑र्तते॒ सम॒हं प्र॒जया॒**

**सं मया᳚ प्र॒जेत्या॑हा॒ऽऽशिष॑ - [ ] 27**

**तै॰सं॰ 1.7.6.4**

**मे॒वैतामा शा᳚स्ते॒ समि॑द्धो अग्ने मे दीदिहि समे॒द्धा ते॑ अग्ने**

**दीद्यास॒मित्या॑ह यथा य॒जुरे॒वैतद्वसु॑मान् य॒ज्ञो वसी॑यान्-भूयास॒मित्या॑हा॒**

**ऽऽशिष॑मे॒वैतामा शा᳚स्ते ब॒हु वै गार्.ह॑पत्य॒स्यान्ते॑ मि॒श्रमि॑व चर्यत**

**प्रथमकाण्डे - सप्तमः प्रश्न:**

**160**

**आग्निपावमा॒नीभ्यां॒ गार्.ह॑पत्य॒मुप॑ तिष्ठते पु॒नात्ये॒वाग्निं पु॑नी॒त आ॒त्मानं॒**

**द्वाभ्यां॒ प्रति॑ष्ठित्या॒ अग्ने॑ गृहपत॒ इत्या॑ह - [ ] 28**

**तै॰सं॰ 1.7.6.5**

**यथा य॒जुरे॒वैतच्छ॒तꣳ हिमा॒ इत्या॑ह श॒तं त्वा॑ हेम॒न्तानि॑न्धिषी॒येति॒**

**वावैतदा॑ह पु॒त्रस्य॒ नाम॑ गृह्णात्यन्ना॒दमे॒वैनं॑ करोति॒ तामा॒शिष॒मा शा॑से॒**

**तन्त॑वे॒ ज्योति॑ष्मती॒मिति॑ ब्रूया॒द्यस्य॑ पु॒त्रोऽजा॑तः॒ स्यात् ते॑ज॒स्व्ये॑वास्य॑**

**ब्रह्मवर्च॒सी पु॒त्रो जा॑यते॒ तामा॒शिष॒मा शा॑से॒ऽमुष्मै॒ ज्योति॑ष्मती॒मिति॑**

**ब्रूया॒द्यस्य॑ पु॒त्रो - [ ] 29**

**तै॰सं॰ 1.7.6.6**

**जा॒तः स्यात्तेज॑ ए॒वास्मि॑न् ब्रह्मवर्च॒सं द॑धाति॒ यो वै य॒ज्ञं प्र॒युज्य॒ न**

**वि॑मु॒ञ्चत्य॑ प्रतिष्ठा॒नो वै स भ॑वति॒ कस्त्वा॑ युनक्ति॒ स त्वा॒ वि**

**मु॑ञ्च॒त्वित्या॑ह प्र॒जाप॑ति॒र्वै कः प्र॒जाप॑तिनै॒वैनं॑ ꣲयु॒नक्ति॑ प्र॒जाप॑तिना॒**

**वि मु॑ञ्चति॒ प्रति॑ष्ठित्या ईश्व॒रं ꣲवै व्र॒तमवि॑सृष्टं प्र॒दहोऽग्ने᳚ व्रतपते**

**व्र॒तम॑चारिष॒मित्या॑ह व्र॒तमे॒व - [ ] 30**

**प्रथमकाण्डे - सप्तमः प्रश्न:**

**161**

**तै॰सं॰ 1.7.6.7**

**वि सृ॑जते॒ शान्त्या॒ अप्र॑दाहाय॒ परा॒ङ् वाव य॒ज्ञ ए॑ति॒ न नि व॑र्तते॒**

**पुन॒र्यो वै य॒ज्ञस्य॑ पुनरालं॒भं ꣲवि॒द्वान् यज॑ते॒ तम॒भि निव॑र्तते य॒ज्ञो**

**ब॑भूव॒ स आ ब॑भू॒वेत्या॑है॒ष वै य॒ज्ञस्य॑ पुनरालं॒भस्तेनै॒वैनं॒ पुन॒रा**

**ल॑भ॒ते ऽन॑वरुद्धा॒ वा ए॒तस्य॑ वि॒राड्य आहि॑ताग्निः॒ सन्न॑स॒भः**

**प॒शवः॒ खलु॒ वै ( ) ब्रा᳚ह्म॒णस्य॑ स॒भेष्ट्वा प्राङु॒त्क्रम्य॑ ब्रूया॒द्गोमा॑ꣳ**

**अ॒ग्नेऽवि॑माꣳ अ॒श्वी य॒ज्ञ इत्यव॑ स॒भाꣳ रु॒न्धे प्र स॒हस्रं॑**

**प॒शूना᳚प्नो॒त्यास्य॑ प्र॒जायां᳚ ꣲवा॒जी जा॑यते ॥ 31**

**(यः-स-मा॒सिषं॑-गृहपत॒-इत्या॑हा॒-ऽमुष्मै॒ ज्योति॑ष्मती॒मिति॑ ब्रूया॒द्यस्य॑ पु॒त्रो-व्र॒तमे॒व-खलु॒-वै-चतु॑र्विꣳशतिश्च) (अ6)**

**तै॰सं॰ 1.7.7.1**

**देव॑ सवितः॒ प्र सु॑व य॒ज्ञं प्र सु॑व य॒ज्ञप॑तिं॒ भगा॑य दि॒व्यो ग॑न्ध॒र्वः ।**

**के॒त॒पूः केतं॑ नः पुनातु वा॒चस्पति॒ र्वाच॑म॒द्य स्व॑दाति नः ॥**

**इन्द्र॑स्य॒ वज्रो॑ऽसि॒ वार्त्र॑घ्न॒स्त्वया॒ऽयं ꣲवृ॒त्रं ꣲव॑द्ध्यात् ॥**

**वाज॑स्य॒ नु प्र॑स॒वे मा॒तरं॑ म॒हीमदि॑तिं॒ नाम॒ वच॑सा करामहे ।**

**प्रथमकाण्डे - सप्तमः प्रश्न:**

**162**

**यस्या॑मि॒दं ꣲविश्वं॒ भुव॑नमावि॒वेश॒ तस्यां᳚ नो दे॒वः स॑वि॒ता**

**धर्म॑ साविषत् ॥**

**अ॒फ्स्व॑ - [ ] 32**

**तै॰सं॰ 1.7.7.2**

**न्तर॒मृत॑म॒फ्सु भे॑ष॒जम॒पामु॒त प्रश॑स्ति॒ष्वश्वा॑ भवथ वाजिनः ॥**

**वा॒युर्वा᳚ त्वा॒ मनु॑र्वा त्वा गन्ध॒र्वाः स॒प्तवि॑ꣳशतिः ।**

**ते अग्रे॒ अश्व॑मायुञ्ज॒न्ते अ॑स्मिञ्ज॒वमाद॑धुः ॥**

**अपां᳚ नपादाशु हेम॒न्॒. य ऊ॒र्मिः क॒कुद्मा॒न् प्रतू᳚र्ति र्वाज॒सात॑म॒स्तेना॒यं**

**ꣲवाज॑ꣳ सेत् ॥**

**विष्णोः॒ क्रमो॑ऽसि॒ विष्णोः᳚ क्रा॒न्तम॑सि॒ विष्णो॒ र्विक्रा᳚न्तमस्य॒ङ्कौ**

**न्य॒ङ्का ( ) व॒भितो॒ रथं॒ ꣲयौ ध्वा॒न्तं ꣲवा॑ता॒ग्रमनु॑ सं॒चर॑न्तौ दू॒रेहे॑तिरिन्द्रि॒यावा᳚न् पत॒त्री ते नो॒ऽग्नयः॒ पप्र॑यः पारयन्तु ॥ 33**

**(अ॒फ्सु-न्य॒ङ्कौ-पञ्च॑दश च) (अ7)**

**प्रथमकाण्डे - सप्तमः प्रश्न:**

**163**

**तै॰सं॰ 1.7.8.1**

**दे॒वस्या॒हꣳ स॑वि॒तुः प्र॑स॒वे बृह॒स्पति॑ना वाज॒जिता॒ वाजं॑ जेषं**

**दे॒वस्या॒हꣳ स॑वि॒तुः प्र॑स॒वे बृह॒स्पति॑ना वाज॒जिता॒ वर्.षि॑ष्ठं॒ नाक॑ꣳ**

**रुहेय॒मिन्द्रा॑य॒ वाचं॑ ꣲवद॒तेन्द्रं॒ वाजं॑ जापय॒तेन्द्रो॒ वाज॑मजयित् ॥**

**अश्वा॑जनि वाजिनि॒ वाजे॑षु वाजिनीव॒त्यश्वा᳚न् थ्स॒मथ्सु॑ वाजय ॥**

**अर्वा॑सि॒ सप्ति॑रसि वा॒ज्य॑सि॒ वाजि॑नो॒ वाजं॑ धावत म॒रुतां᳚ प्रस॒वे**

**ज॑यत॒ वियोज॑ना मिमीद्ध्व॒मद्ध्व॑नः स्कभ्नीत॒ - [ ] 34**

**तै॰सं॰ 1.7.8.2**

**काष्ठां᳚ गच्छत॒ वाजे॑वाजेऽवत वाजिनो नो॒ धने॑षु विप्रा अमृता ऋतज्ञाः ॥**

**अ॒स्य मद्ध्वः॑ पिबत मा॒दय॑द्ध्वं तृ॒प्ता या॑त प॒थिभि॑ र्देव॒यानैः᳚ ॥**

**ते नो॒ अर्व॑न्तो हवन॒श्रुतो॒ हवं॒ ꣲविश्वे॑ शृण्वन्तु वा॒जिनः॑ ॥**

**मि॒तद्र॑वः सहस्र॒सा मे॒धसा॑ता सनि॒ष्यवः॑ ।**

**म॒हो ये रत्न॑ꣳ समि॒थेषु॑ जभ्रि॒रे शन्नो॑ भवन्तु वा॒जिनो॒ हवे॑षु ॥**

**दे॒वता॑ता मि॒तद्र॑वः स्व॒र्काः ।**

**जं॒भय॒न्तोऽहिं॒ ꣲवृक॒ꣳ रक्षा॑ꣳसि॒ सने᳚म्य॒स्मद्यु॑यव॒ - [ ] 35**

**प्रथमकाण्डे - सप्तमः प्रश्न:**

**164**

**तै॰सं॰ 1.7.8.3**

**न्नमी॑वाः ॥**

**ए॒ष स्य वा॒जी क्षि॑प॒णिं तु॑रण्यति ग्री॒वायां᳚ ब॒द्धो अ॑पिक॒क्ष आ॒सनि॑ ।**

**क्रतुं॑ दधि॒क्रा अनु॑ सं॒तवी᳚त्वत् प॒थामङ्का॒ᳪ स्यन्वा॒पनी॑फणत् ॥**

**उ॒त स्मा᳚स्य॒ द्रव॑तस्तुरण्य॒तः प॒र्णं न वेरनु॑ वाति प्रग॒र्द्धिनः॑ ।**

**श्ये॒नस्ये॑व॒ ध्रज॑तो अङ्क॒सं परि॑ दधि॒क्राव्.ण्णः॑ स॒होर्जा तरि॑त्रतः ॥**

**आ मा॒ वाज॑स्य प्रस॒वो ज॑गम्या॒दा द्यावा॑पृथि॒वी वि॒श्वशं॑भू ।**

**आ मा॑ गन्तां पि॒तरा॑ - [ ] 36**

**तै॰सं॰ 1.7.8.4**

**मा॒तरा॒ चाऽऽ मा॒ सोमो॑ अमृत॒त्वाय॑ गम्यात् ॥**

**वाजि॑नो वाजजितो॒ वाज॑ꣳ सरि॒ष्यन्तो॒ वाजं॑ जे॒ष्यन्तो॒ बृह॒स्पते᳚**

**र्भा॒गमव॑ जिघ्रत॒ वाजि॑नो वाजजितो॒ वाज॑ꣳ ससृ॒वाꣳसो॒ वाजं॑**

**जिगि॒वाꣳसो॒ बृह॒स्पते᳚र्भा॒गे नि मृ॑ढ्वमि॒यं ꣲवः॒ सा स॒त्या**

**सं॒धाभू॒द्यामिन्द्रे॑ण स॒मध॑द्ध्व॒मजी॑जिपत वनस्पतय॒ इन्द्रं॒ ꣲवाजं॒**

**ꣲविमु॑च्यद्ध्वं ॥ 37**

**प्रथमकाण्डे - सप्तमः प्रश्न:**

**165**

**(स्क॒भ्नी॒त॒-यु॒य॒व॒न्-पि॒तरा॒-द्विच॑त्वारिꣳशच्च) (अ8)**

**तै॰सं॰ 1.7.9.1**

**क्ष॒त्रस्योल्ब॑मसि क्ष॒त्रस्य॒ योनि॑रसि॒ जाय॒ एहि॒ सुवो॒ रोहा॑व॒ रोहा॑व॒**

**हि सुव॑र॒हं ना॑वु॒भयोः॒ सुवो॑ रोक्ष्यामि॒ वाज॑श्च प्रस॒वश्चा॑पि॒जश्च॒ क्रतु॑श्च॒**

**सुव॑श्च मू॒र्द्धा च॒ व्यश्नि॑यश्चाऽऽन्त्याय॒न श्चान्त्य॑श्च भौव॒नश्च॒**

**भुव॑न॒श्चाधि॑पतिश्च ।**

**आयु॑र्य॒ज्ञेन॑ कल्पतां प्रा॒णो य॒ज्ञेन॑ कल्पतामपा॒नो - [ ] 38**

**तै॰सं॰ 1.7.9.2**

**य॒ज्ञेन॑ कल्पतां ꣲव्या॒नो य॒ज्ञेन॑ कल्पतां॒ चक्षु॑र्य॒ज्ञेन॑ कल्पता॒ᳪ**

**श्रोत्रं॑ ꣲय॒ज्ञेन॑ कल्पतां॒ मनो॑ य॒ज्ञेन॑ कल्पतां॒ ꣲवाग्य॒ज्ञेन॑कल्पता-मा॒त्मा**

**य॒ज्ञेन॑ कल्पतां ꣲय॒ज्ञो य॒ज्ञेन॑ कल्पता॒ꣳ सुव॑र्दे॒वाꣳ अ॑गन्मा॒मृता॑ अभूम**

**प्र॒जाप॑तेः प्र॒जा अ॑भूम॒सम॒हं प्र॒जया॒ सं मया᳚ प्र॒जा सम॒हꣳ**

**रा॒यस्पोषे॑ण॒ सं मया॑ रा॒यस्पोषो ऽन्ना॑य त्वा॒ ऽन्नाद्या॑य त्वा॒ वाजा॑य ( )**

**त्वा वाजजि॒त्यायै᳚ त्वा॒ ऽमृत॑मसि॒ पुष्टि॑रसि प्र॒जन॑नमसि ॥ 39**

**(अ॒पा॒नो-वाजा॑य॒-नव॑ च) (अ9)**

**प्रथमकाण्डे - सप्तमः प्रश्न:**

**166**

**तै॰सं॰ 1.7.10.1**

**वाज॑स्ये॒मं प्र॑स॒वः सु॑षुवे॒ अग्रे॒ सोम॒ꣳ राजा॑न॒मोष॑धीष्व॒फ्सु ।**

**ता अ॒स्मभ्यं॒ मधु॑मतीर्भवन्तु व॒यꣳ रा॒ष्ट्रे जा᳚ग्रियाम पु॒रोहि॑ताः ॥**

**वाज॑स्ये॒दं प्र॑स॒व आ ब॑भूवे॒मा च॒ विश्वा॒ भुव॑नानि स॒र्वतः॑ ।**

**स वि॒राजं॒ पर्ये॑ति प्रजा॒नन् प्र॒जां पुष्टिं॑ ꣲव॒र्द्धय॑मानो अ॒स्मे ॥**

**वाज॑स्ये॒मां प्र॑स॒वः शि॑श्रिये॒ दिव॑मि॒मा च॒ विश्वा॒ भुव॑नानि स॒म्राट् ।**

**अदि॑थ्सन्तं दापयतु प्रजा॒नन् र॒यिं - [ ] 40**

**तै॰सं॰ 1.7.10.2**

**च॑ नः॒ सर्व॑वीरां॒ नि य॑च्छतु ॥**

**अग्ने॒ अच्छा॑ वदे॒ह नः॒ प्रति॑ नः सु॒मना॑ भव ।**

**प्रणो॑ यच्छ भुवस्पते धन॒दा अ॑सि न॒स्त्वं ॥**

**प्रणो॑ यच्छत्वर्य॒मा प्रभगः॒ प्रबृह॒स्पतिः॑ ।**

**प्र दे॒वाः प्रोत सू॒नृता॒ प्रवाग्दे॒वी द॑दातु नः ॥**

**अ॒र्य॒मण॒म् बृह॒स्पति॒मिन्द्रं॒ दाना॑य चोदय ।**

**वाचं॒ ꣲविष्णु॒ꣳ सर॑स्वतीꣳसवि॒तारं॑ - [ ] 41**

**प्रथमकाण्डे - सप्तमः प्रश्न:**

**167**

**तै॰सं॰ 1.7.10.3**

**च वा॒जिनं᳚ ॥**

**सोम॒ꣳ राजा॑नं॒ ꣲवरु॑णम॒ग्नि-म॒न्वार॑भामहे ।**

**आ॒दि॒त्यान् विष्णु॒ꣳ सूर्यं॑ ब्र॒ह्माणं॑ च॒ बृह॒स्पतिं᳚ ॥**

**दे॒वस्य॑त्वा सवि॒तुः प्र॑स॒वे᳚ऽश्विनो᳚ र्बा॒हुभ्यां᳚ पू॒ष्णो हस्ता᳚भ्या॒ꣳ**

**सर॑स्वत्यै वा॒चो य॒न्तु र्य॒न्त्रेणा॒ग्नेस्त्वा॒ साम्रा᳚ज्येना॒भिषि॑ञ्चा॒मीन्द्र॑स्य॒**

**बृह॒स्पते᳚स्त्वा॒ साम्रा᳚ज्येना॒भिषि॑ञ्चामि ॥ 42**

**(र॒यिꣳ-स॑वि॒तार॒ꣳ-षट्त्रि॑ꣳशच्च)(अ10)**

**तै॰सं॰ 1.7.11.1**

**अ॒ग्निरेका᳚क्षरेण॒ वाच॒मुद॑जयद॒श्विनौ॒ द्व्य॑क्षरेण प्राणापा॒नावुद॑जयतां॒**

**ꣲविष्णु॒स्त्र्य॑क्षरेण॒ त्रीन् ꣲलो॒कानु-द॑जय॒थ् सोम॒श्चतु॑रक्षरेण॒ चतु॑ष्पदः**

**प॒शूनुद॑जयत् पू॒षा पञ्चा᳚क्षरेण प॒ङ्क्तिमुद॑जयद् धा॒ता षड॑क्षरेण॒**

**षड्-ऋ॒तूनुद॑जयन् म॒रुतः॑ स॒प्ताक्ष॑रेण स॒प्तप॑दा॒ꣳ शक्व॑री॒मुद॑जय॒न्**

**बृह॒स्पति॑र॒ष्टाक्ष॑रेण गाय॒त्री मुद॑जयन् मि॒त्रो नवा᳚क्षरेण त्रि॒वृत॒ᳪ**

**स्तोम॒मुद॑जय॒द् - [ ] 43**

**प्रथमकाण्डे - सप्तमः प्रश्न:**

**168**

**तै॰सं॰ 1.7.11.2**

**वरु॑णो॒ दशा᳚क्षरेण वि॒राज॒-मुद॑जय॒दिन्द्र॒ एका॑दशाक्षरेण**

**त्रि॒ष्टुभ॒-मुद॑जय॒द् विश्वे॑ दे॒वा द्वाद॑शाक्षरेण॒ जग॑ती॒मुद॑जय॒न्**

**वस॑व॒स्त्रयो॑ दशाक्षरेण त्रयोद॒शᳪ स्तोम॒मुद॑जयन् रु॒द्राश्चतु॑र्दशाक्षरेण**

**चतुर्द॒शᳪ स्तोम॒मुद॑जयन्नादि॒त्याः पञ्च॑दशाक्षरेण पञ्चद॒शᳪ**

**स्तोम॒मुद॑जय॒न्नदि॑तिः॒ षोड॑शाक्षरेण षोड॒शᳪ स्तोम॒मुद॑जयत्**

**प्र॒जाप॑तिः स॒प्तद॑शाक्षरेण सप्तद॒शᳪ स्तोम॒मुद॑जयत् ॥ 44**

**(त्रि॒वृत॒ᳪ स्तोम॒मुद॑जय॒थ्-षट्च॑त्वारिꣳशच्च)(अ11)**

**तै॰सं॰ 1.7.12.1**

**उ॒प॒या॒मगृ॑हीतोऽसि नृ॒षदं॑ त्वा द्रु॒षदं॑ भुवन॒सद॒मिन्द्रा॑य॒**

**जुष्टं॑ गृह्णाम्ये॒ष ते॒ योनि॒रिन्द्रा॑य त्वोपया॒मगृ॑हीतोऽस्यफ्सु॒षदं॑**

**त्वा घृत॒सदं॑ ꣲव्योम॒सद॒मिन्द्रा॑य॒ जुष्टं॑ गृह्णाम्ये॒ष ते॒**

**योनि॒रिन्द्रा॑य त्वोपया॒मगृ॑हीतोऽसि पृथिवि॒षदं॑ त्वाऽन्तरिक्ष॒सदं॑**

**नाक॒सद॒मिन्द्रा॑य॒ जुष्टं॑ गृह्णाम्ये॒ष ते॒ योनि॒रिन्द्रा॑य त्वा ॥**

**प्रथमकाण्डे - सप्तमः प्रश्न:**

**169**

**ये ग्रहाः᳚ पञ्चज॒नीना॒ येषां᳚ ति॒स्रः प॑रम॒जाः ।**

**दैव्यः॒ कोशः॒ - [ ] 45**

**तै॰सं॰ 1.7.12.2**

**समु॑ब्जितः ।**

**तेषां॒ ꣲविशि॑प्रियाणा॒-मिष॒मूर्ज॒ꣳ सम॑ग्रभीमे॒ष ते॒ योनि॒रिन्द्रा॑य त्वा ॥**

**अ॒पाꣳ रस॒मुद्व॑यस॒ꣳ सूर्य॑रश्मिꣳ स॒माभृ॑तं ।**

**अ॒पाꣳ रस॑स्य॒ यो रस॒स्तं ꣲवो॑ गृह्णाम्युत्त॒ममे॒ष ते॒ योनि॒रिन्द्रा॑य त्वा ॥**

**अ॒या वि॒ष्ठा ज॒नय॒न् कर्व॑राणि॒ स हि घृणि॑रु॒रुर्वरा॑य गा॒तुः ।**

**स प्रत्युदै᳚द्ध॒रुणो॒ मद्ध्वो॒ अग्र॒ᳪ स्वायां॒ ꣲयत् त॒नुवां᳚ ( ) त॒नूमैर॑यत ।**

**उ॒प॒या॒मगृ॑हीतोऽसि प्र॒जाप॑तये त्वा॒ जुष्टं॑ गृह्णाम्ये॒ष ते॒ योनिः॑**

**प्र॒जाप॑तये त्वा ॥ 46**

**(कोश॑-स्त॒नुवां॒-त्रयो॑दश च)(अ12)**

**तै॰सं॰ 1.7.13.1**

**अन्वह॒ मासा॒ अन्विद्वना॒न्यन्वोष॑धी॒रनु॒ पर्व॑तासः ।**

**अन्विन्द्र॒ꣳ रोद॑सी वावशा॒ने अन्वापो॑ अजिहत॒ जाय॑मानं ॥**

**प्रथमकाण्डे - सप्तमः प्रश्न:**

**170**

**अनु॑ ते दायि म॒ह इ॑न्द्रि॒याय॑ स॒त्रा ते॒ विश्व॒मनु॑ वृत्र॒ हत्ये᳚ ।**

**अनु॑ क्ष॒त्रमनु॒ सहो॑ यज॒त्रेन्द्र॑ दे॒वेभि॒रनु॑ ते नृ॒षह्ये᳚ ॥**

**इ॒न्द्रा॒णीमा॒सु नारि॑षु सु॒पत्नी॑ म॒हम॑श्रवं ।**

**न ह्य॑स्या अप॒रं च॒न ज॒रसा॒ - [ ] 47**

**तै॰सं॰ 1.7.13.2**

**मर॑ते॒ पतिः॑ ॥**

**नाहमि॑न्द्राणि रारण॒ सख्यु॑र्वृ॒षाक॑पेर् ऋ॒ते ।**

**यस्ये॒दमप्य॑ꣳ ह॒विः प्रि॒यं दे॒वेषु॒ गच्छ॑ति ॥**

**यो जा॒त ए॒व प्र॑थ॒मो मन॑स्वान् दे॒वो दे॒वान् क्रतु॑ना प॒र्यभू॑षत् ।**

**यस्य॒ शुष्मा॒द्रोद॑सी॒ अभ्य॑सेतां नृ॒म्णस्य॑ म॒ह्ना स ज॑नास॒ इन्द्रः॑ ॥**

**आ ते॑ म॒ह इ॑न्द्रो॒त्यु॑ग्र॒ सम॑न्यवो॒ यथ् स॒मर॑न्त॒ सेनाः᳚ ।**

**पता॑ति दि॒द्युन्नर्य॑स्य बाहु॒वोर्मा ते॒ - [ ] 48**

**तै॰सं॰ 1.7.13.3**

**मनो॑ विष्व॒द्रिय॒ग्वि चा॑रीत् ॥**

**मा नो॑ मर्द्धी॒रा भ॑रा द॒द्धि तन्नः॒ प्र दा॒शुषे॒ दात॑वे॒ भूरि॒ यत् ते᳚ ।**

**प्रथमकाण्डे - सप्तमः प्रश्न:**

**171**

**नव्ये॑ दे॒ष्णे श॒स्ते अ॒स्मिन् त॑ उ॒क्थे प्र ब्र॑वाम व॒यमि॑न्द्र स्तु॒वन्तः॑ ॥**

**आ तू भ॑र॒ माकि॑रे॒तत् परि॑ष्ठाद्वि॒द्मा हि त्वा॒ वसु॑पतिं॒ ꣲवसू॑नां ।**

**इन्द्र॒ यत् ते॒ माहि॑नं॒ दत्त्र॒मस्त्य॒स्मभ्यं॒ तद्ध॑र्यश्व॒ - [ ] 49**

**तै॰सं॰ 1.7.13.4**

**प्रय॑न्धि ॥**

**प्र॒दा॒तार॑ꣳ हवामह॒ इन्द्र॒मा ह॒विषा॑ व॒यं ।**

**उ॒भा हि हस्ता॒ वसु॑ना पृ॒णस्वा ऽऽप्रय॑च्छ॒ दक्षि॑णा॒दोत स॒व्यात् ॥**

**प्र॒दा॒ता व॒ज्री वृ॑ष॒भस्तु॑रा॒षाट्छु॒ष्मी राजा॑ वृत्र॒हा सो॑म॒पा वा᳚ ।**

**अ॒स्मिन् य॒ज्ञे ब॒र्.हिष्या नि॒षद्याथा॑ भव॒ यज॑मानाय॒ शं ꣲयोः ॥**

**इन्द्रः॑ सु॒त्रामा॒ स्ववा॒ꣳ अवो॑भिः सुमृडी॒को भ॑वतु वि॒श्ववे॑दाः ।**

**बाध॑तां॒ द्वेषो॒ अभ॑यं कृणोतु सु॒वीर्य॑स्य॒ - [ ] 50**

**तै॰सं॰ 1.7.13.5**

**पत॑यः स्याम ॥**

**तस्य॑ व॒यꣳ सु॑म॒तौ य॒ज्ञिय॒स्यापि॑ भ॒द्रे सौ॑मन॒से स्या॑म ।**

**स सु॒त्रामा॒ स्ववा॒ꣳ इन्द्रो॑ अ॒स्मे आ॒राच्चि॒द्द्वेषः॑ सनु॒तर्यु॑योतु ॥**

**प्रथमकाण्डे - सप्तमः प्रश्न:**

**172**

**रे॒वती᳚र्नः सध॒माद॒ इन्द्रे॑ सन्तु तु॒विवा॑जाः ।**

**क्षु॒मन्तो॒ याभि॒र्मदे॑म ॥**

**प्रोष्व॑स्मै पुरोर॒थमिन्द्रा॑य शू॒षम॑र्चत ।**

**अ॒भीके॑ चिदु लोक॒कृथ् स॒ङ्गे स॒मथ्सु॑ वृत्र॒हा ।**

**अ॒स्माकं॑ बोधि चोदि॒ता नभ॑न्ता-मन्य॒केषां᳚ ।**

**ज्या॒का अधि॒ ( ) धन्व॑सु ॥ 51**

**(ज॒रसा॒-मा ते॑-हर्यश्व-सु॒वीर्य॒स्या-ऽध्ये-कं॑ च ) (अ13)**

**ठय्ग्ल्फ्ग् ऍब्य्श्ग्त् ष्त्ळ्ण् ल्ळ्ग्य्ळ्त्फ्ञ् ठग्छ्ग्प्ल् ब्झ् 1 ळ्ब् 13 अफ्व्श्ग्ग्ध्ग्प्ल् :-**

**(पा॒क॒य॒ज्ञꣳ-सᳪश्र॑वाः-प॒रोक्षं॑-ब॒र्.हिषो॒ऽहं-ध्रु॒वा-मग॒न्मेत्या॑ह॒ -**

**देव॑ सवित-र्दे॒वस्या॒हं-क्ष॒त्रस्योल्बं॒-ꣲवाज॑स्ये॒म-म॒ग्निरेका᳚क्षरेणोपया॒मगृ॑हीतो॒ऽ-स्यन्वह॒ मासा॒-स्त्रयो॑दश)**

**ऍब्य्श्ग्त् ष्त्ळ्ण् ल्ळ्ग्य्ळ्त्फ्ञ् ठग्छ्ग्प्ल् ब्झ् 1, 11, 21 दज्य्त्ज्ल् ब्झ् ठग्फ्च्ण्ग्ग्ळ्त्ल् :- (पा॒क॒**

**य॒ज्ञं-प॒रोक्षं॑-ध्रु॒वां-ꣲवि सृ॑जते-च नः॒ सर्व॑वीरां॒ -**

**पत॑यः स्यो॒-मैक॑पञ्चा॒शत् )**

**ऊत्य्ल्ळ् ग्फ्छ् एग्ल्ळ् ठग्छ्ग्प् ब्झ् दज्श्ज्फ्ळ्ण् ठय्ग्ल्फ्ग्प् :-**

**प्रथमकाण्डे - सप्तमः प्रश्न:**

**173**

**(पा॒क॒य॒ज्ञं-धन्व॑सु ।)**

**॥ हरिः॑ ओं ॥**

**॥ कृष्ण यजुर्वेदीय तैत्तिरीय संहितायां प्रथमकाण्डे**

**सप्तमः प्रश्नः समाप्तः ॥**

**------------------------------------**

**प्रथमकाण्डे - अष्टमः प्रश्न:**

**174**

**ओं नमः परमात्मने**

**, श्री महागणपतये नमः,**

**श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ह॒रिः॒ ओं**

**1.8 प्रथमकाण्डे अष्टमः प्रश्नः राजसूयः**

**तै॰सं॰ 1.8.1.1**

**अनु॑मत्यै पुरो॒डाश॑-म॒ष्टाक॑पालं॒ निर्व॑पति धे॒नुर्दक्षि॑णा॒ये प्र॒त्यञ्चः॒**

**शंया॑या अव॒शीय॑न्ते॒ तं नैर्.ऋ॒तमेक॑-कपालं कृ॒ष्णं ꣲवासः॑ कृ॒ष्णतू॑षं॒**

**दक्षि॑णा॒ वीहि॒ स्वाहाऽऽहु॑तिं जुषा॒ण ए॒ष ते॑ निर्.ऋते भा॒गो भूते॑**

**ह॒विष्म॑त्यसि मु॒ञ्चेममꣳ ह॑सः॒ स्वाहा॒ नमो॒ य इ॒दं च॒कारा॑ऽऽदि॒त्यं**

**च॒रुं निर्व॑पति॒ वरो॒ दक्षि॑णा ऽऽग्नावैष्ण॒व-मेका॑दशकपालं**

**ꣲवाम॒नो व॒ही दक्षि॑णा ऽग्नीषो॒मीय॒ - [ ] 1**

**तै॰सं॰ 1.8.1.2**

**मेका॑दश कपाल॒ꣳ हिर॑ण्यं॒ दक्षि॑णै॒-न्द्रमेका॑दशकपाल-मृष॒भो व॒ही**

**दक्षि॑णा ऽऽग्ने॒यम॒ष्टाक॑पालमै॒न्द्रं दद्ध्यृ॑ष॒भो व॒ही दक्षि॑णैन्द्रा॒ग्नं**

**द्वाद॑शकपालं ꣲवैश्वदे॒वं च॒रुं प्र॑थम॒जो व॒थ्सो दक्षि॑णा सौ॒म्यᳪ श्या॑मा॒कं**

**प्रथमकाण्डे - अष्टमः प्रश्न:**

**175**

**च॒रुं ꣲवासो॒ दक्षि॑णा॒ सर॑स्वत्यै च॒रुꣳ सर॑स्वते च॒रुं मि॑थु॒नौ**

**गावौ॒ दक्षि॑णा ॥ 2**

**(अ॒ग्नी॒षो॒मीयं॒-चतु॑स्त्रिꣳशच्च) अ1)**

**तै॰सं॰ 1.8.2.1**

**आ॒ग्ने॒यम॒ष्टाक॑पालं॒ निर्व॑पति सौ॒म्यं च॒रुꣳ सा॑वि॒त्रं-द्वाद॑शकपालꣳ**

**सारस्व॒तं च॒रुं पौ॒ष्णं च॒रुं मा॑रु॒तꣳ स॒प्तक॑पालं ꣲवैश्वदे॒वीमा॒मिक्षां᳚**

**द्यावापृथि॒व्य॑-मेक॑कपालं ॥ 3**

**(आ॒ग्ने॒यꣳ सौ॒म्यं मा॑रु॒त-म॒ष्टाद॑श) (अ2)**

**तै॰सं॰ 1.8.3.1**

**ऐ॒न्द्रा॒ग्न-मेका॑दशकपालं मारु॒तीमा॒मिक्षां᳚ ꣲवारु॒णीमा॒मिक्षां᳚**

**का॒यमेक॑कपालं प्रघा॒स्यान्॑ हवामहे म॒रुतो॑ य॒ज्ञवा॑हसः**

**करं॒भेण॑ स॒जोष॑सः ॥**

**मो षूण॑ इन्द्र पृ॒थ्सु दे॒वास्तु॑ स्म ते शुष्मिन्नव॒या ।**

**म॒ही ह्य॑स्य मी॒ढुषो॑ य॒व्या । ह॒विष्म॑तो म॒रुतो॒ वन्द॑ते॒ गीः ॥**

**यद्ग्रामे॒ यदर॑ण्ये॒ यथ् स॒भायां॒ ꣲयदि॑न्द्रि॒ये ।**

**प्रथमकाण्डे - अष्टमः प्रश्न:**

**176**

**यच्छू॒द्रे यद॒र्य॑ एन॑श्चकृ॒माव॒यं ।**

**यदे ( ) क॒स्याधि॒ धर्म॑णि॒ तस्या॑ व॒यज॑नमसि॒ स्वाहा᳚ ॥**

**अक्र॒न् कर्म॑ कर्म॒कृतः॑ स॒ह वा॒चा म॑योभु॒वा ।**

**दे॒वेभ्यः॒ कर्म॑ कृ॒त्वाऽस्तं॒ प्रेत॑ सुदानवः ॥ 4**

**(व॒यं ꣲयद्-वि॑ꣳश॒तिश्च॑) (अ3)**

**तै॰सं॰ 1.8.4.1**

**अ॒ग्नयेऽनी॑कवते पुरो॒डाश॑-म॒ष्टाक॑पालं॒ निर्व॑पति सा॒कꣳ सूर्ये॑णोद्य॒ता**

**म॒रुद्भ्यः॑ सान्तप॒नेभ्यो॑ म॒द्ध्यंदि॑ने च॒रुं म॒रुद्भ्यो॑ गृहमे॒धिभ्यः॒**

**सर्वा॑सां दु॒ग्धे सा॒यं च॒रुं पू॒र्णा द॑र्वि॒ परा॑पत॒ सुपू᳚र्णा॒ पुन॒रा प॑त ।**

**व॒स्नेव॒ विक्री॑णावहा॒ इष॒मूर्ज॑ꣳ शतक्रतो ॥**

**दे॒हि मे॒ ददा॑मि ते॒ नि मे॑ धेहि॒ नि ते॑ दधे ।**

**नि॒हार॒मिन्नि मे॑ हरा नि॒ हारं॒- [ ] 5**

**तै॰सं॰ 1.8.4.2**

**नि ह॑रामि ते ॥**

**म॒रुद्भ्यः॑ क्री॒डिभ्यः॑ पुरो॒डाश॑ꣳ स॒प्तक॑पालं॒ निर्व॑पति सा॒कꣳ**

**प्रथमकाण्डे - अष्टमः प्रश्न:**

**177**

**सूर्ये॑णोद्य॒ता-ग्ने॒यम॒ष्टाक॑पालं॒ निर्व॑पति सौ॒म्यं च॒रुꣳ**

**सा॑वि॒त्रं द्वाद॑शकपालꣳ सारस्व॒तं च॒रुं पौ॒ष्णं च॒रुमै᳚न्द्रा॒ग्नमेका॑दशकपाल-मै॒न्द्रं च॒रुं ꣲवै᳚श्वकर्म॒ण-मेक॑कपालं ॥ 6**

**(ह॒रा॒ नि॒हारं॑-त्रि॒ꣳशच्च॑) (अ4)**

**तै॰सं॰ 1.8.5.1**

**सोमा॑य पितृ॒मते॑ पुरो॒डाश॒ꣳ षट्क॑पालं॒ निर्व॑पति पि॒तृभ्यो॑**

**बर्.हि॒षद्भ्यो॑ धा॒नाः पि॒तृभ्यो᳚ऽग्निष्वा॒त्तेभ्यो॑ ऽभिवा॒न्या॑यै दु॒ग्धे**

**म॒न्थमे॒तत् ते॑ तत॒ ये च॒ त्वामन्वे॒तत् ते॑ पितामह प्रपितामह॒ ये च॒**

**त्वामन्वत्र॑ पितरो यथाभा॒गं म॑न्दद्ध्वꣳसुसं॒दृशं॑ त्वा व॒यं मघ॑वन्**

**मन्दिषी॒महि॑ ।**

**प्रनू॒नं पू॒र्णव॑न्धुरः स्तु॒तो या॑सि॒ वशा॒ꣳ अनु॑ ।**

**योजा॒न्वि॑न्द्र ते॒ हरी᳚ ॥ 7**

**तै॰सं॰ 1.8.5.2**

**अक्ष॒न्नमी॑मदन्त॒ ह्यव॑ प्रि॒या अ॑धूषत ।**

**अस्तो॑षत॒ स्वभा॑नवो॒ विप्रा॒ नवि॑ष्ठया म॒ती ।**

**प्रथमकाण्डे - अष्टमः प्रश्न:**

**178**

**योजा॒ न्वि॑न्द्र ते॒ हरी᳚ ॥**

**अक्ष॑न् पि॒तरोऽमी॑मदन्त पि॒तरोऽती॑तृपन्त पि॒तरोऽमी॑मृजन्त पि॒तरः॑ ॥**

**परे॑त पितरः सोम्या गम्भी॒रैः प॒थिभिः॑ पू॒र्व्यैः ।**

**अथा॑ पि॒तॄन्थ् सु॑वि॒दत्रा॒ꣳ अपी॑त य॒मेन॒ ये स॑ध॒मादं॒ मद॑न्ति ॥**

**मनो॒ न्वा हु॑वामहे नाराश॒ꣳ सेन॒ स्तोमे॑न पितृ॒णां च॒ मन्म॑भिः ॥**

**आ - [ ] 8**

**तै॰सं॰ 1.8.5.3**

**न॑ एतु॒ मनः॒ पुनः॒ क्रत्वे॒ दक्षा॑य जी॒वसे᳚ ।**

**ज्योक्च॒ सूर्यं॑ दृ॒शे ॥**

**पुन॑र्नः पि॒तरो॒ मनो॒ ददा॑तु॒ दैव्यो॒ जनः॑ ।**

**जी॒वं ꣲव्रात॑ꣳ सचेमहि ॥**

**यद॒न्तरि॑क्षं पृथि॒वीमु॒त द्यां ꣲयन्मा॒तरं॑ पि॒तरं॑ ꣲवा जिहिꣳसि॒म ।**

**अ॒ग्निर्मा॒ तस्मा॒देन॑सो॒ गार्.ह॑पत्यः॒ प्रमु॑ञ्चतु दुरि॒ता यानि॑ चकृ॒म**

**क॒रोतु॒ माम॑ने॒नसं᳚ ॥ 9**

**(हरी॒-मन्म॑भि॒रा-चतु॑श्चत्वारिꣳशच्च) (अ5)**

**प्रथमकाण्डे - अष्टमः प्रश्न:**

**179**

**तै॰सं॰ 1.8.6.1**

**प्र॒ति॒पू॒रु॒षमेक॑कपाला॒न्निर्व॑प॒त्येक॒-मति॑रिक्तं॒ ꣲयाव॑न्तो गृ॒ह्याः᳚**

**स्मस्तेभ्यः॒ कम॑करं पशू॒नाꣳ शर्मा॑सि॒ शर्म॒ यज॑मानस्य॒ शर्म॑ मे**

**य॒च्छैक॑ ए॒व रु॒द्रो न द्वि॒तीया॑य तस्थ आ॒खुस्ते॑ रुद्र प॒शुस्तं जु॑षस्वै॒ष**

**ते॑ रुद्र भा॒गः स॒ह स्वस्रां-बि॑कया॒ तंजु॑षस्व भेष॒जं गवेऽश्वा॑य॒**

**पुरु॑षाय भेष॒जमथो॑ अ॒स्मभ्यं॑ भेष॒जꣳ सुभे॑षजं॒ - [ ] 10**

**तै॰सं॰ 1.8.6.2**

**ꣲयथाऽस॑ति ।**

**सु॒गं मे॒षाय॑ मे॒ष्या॑ अवां᳚ब रु॒द्रम॑दि-म॒ह्यव॑ दे॒वं त्र्यं॑बकं ।**

**यथा॑ नः॒ श्रेय॑सः॒ कर॒द्यथा॑ नो॒ वस्य॑सः॒ कर॒द्यथा॑ नः पशु॒मतः॒**

**कर॒द्यथा॑ नो व्यवसा॒यया᳚त् ॥**

**त्र्यं॑बकं ꣲयजामहे सुग॒न्धिं पु॑ष्टि॒वर्द्ध॑नं ।**

**उ॒र्वा॒रु॒कमि॑व॒ बन्ध॑नान् मृ॒त्यो र्मु॑क्षीय॒ माऽमृता᳚त् ॥**

**ए॒ष ते॑ रुद्र भा॒गस्तं जु॑षस्व॒ तेना॑व॒सेन॑ प॒रो मूज॑व॒तोऽती॒ह्य ( )**

**प्रथमकाण्डे - अष्टमः प्रश्न:**

**180**

**व॑तत धन्वा॒ पिना॑कहस्तः॒ कृत्ति॑वासाः ॥ 11**

**(सुभे॑षज-मिहि॒ त्रीणि॑ च) (अ6)**

**तै॰सं॰ 1.8.7.1**

**ऐ॒न्द्रा॒ग्नं द्वाद॑शकपालं ꣲवैश्वदे॒वं च॒रुमिन्द्रा॑य॒ शुना॒सीरा॑य पुरो॒डाशं॒**

**द्वाद॑शकपालं ꣲवाय॒व्यं॑ पयः॑ सौ॒र्यमेक॑कपालं द्वादशग॒वꣳ सीरं॒ दक्षि॑णा**

**ऽऽग्ने॒यम॒ष्टाक॑पालं॒ निर्व॑पति रौ॒द्रं गा॑वीधु॒कं च॒रुमै॒न्द्रं दधि॑ वारु॒णं**

**ꣲय॑व॒मयं॑ च॒रुं ꣲव॒हिनी॑ धे॒नुर्दक्षि॑णा॒ ये दे॒वाः पु॑रः॒ सदो॒ऽग्निने᳚त्रा**

**दक्षिण॒सदो॑ य॒मने᳚त्राः पश्चा॒थ्सदः॑ सवि॒तृ ने᳚त्रा उत्तर॒सदो॒ वरु॑ण**

**नेत्रा उपरि॒षदो॒ बृह॒स्पति॑ नेत्रा रक्षो॒हण॒स्ते नः॑ पान्तु॒ ते नो॑ऽवन्तु॒**

**तेभ्यो॒ - [ ] 12**

**तै॰सं॰ 1.8.7.2**

**नम॒स्तेभ्यः॒ स्वाहा॒ समू॑ढ॒ꣳ रक्षः॒ संद॑ग्ध॒ꣳरक्ष॑ इ॒दम॒हꣳ रक्षो॒ऽभि**

**संद॑हाम्य॒ग्नये॑ रक्षो॒घ्ने स्वाहा॑ य॒माय॑ सवि॒त्रे वरु॑णाय॒ बृह॒स्पत॑ये॒**

**दुव॑स्वते रक्षो॒घ्ने स्वाहा᳚ प्रष्टिवा॒ही रथो॒ दक्षि॑णा दे॒वस्य॑ त्वा सवि॒तुः**

**प्रथमकाण्डे - अष्टमः प्रश्न:**

**181**

**प्र॑स॒वे᳚ऽश्विनो᳚र्बा॒हुभ्यां᳚ पू॒ष्णो हस्ता᳚भ्या॒ꣳ रक्ष॑सो व॒धं जु॑होमि ह॒तꣳ**

**रक्षोऽव॑धिष्म॒ रक्षो॒ यद्वस्ते॒ तद्दक्षि॑णा ॥ 13**

**(तेभ्यः॒-पञ्च॑चत्वारिꣳशच्च) (अ7)**

**तै॰सं॰ 1.8.8.1**

**धा॒त्रे पु॑रो॒डाशं॒ द्वाद॑शकपालं॒ निर्व॑प॒त्यनु॑मत्यै च॒रुꣳ रा॒कायै॑ च॒रुꣳ**

**सि॑नीवा॒ल्यै च॒रुं कु॒ह्वै॑ च॒रुं मि॑थु॒नौ गावौ॒ दक्षि॑णा**

**ऽऽग्नावैष्ण॒वमेका॑दशकपालं॒ निर्व॑पत्यैन्द्रा-वैष्ण॒वमेका॑दशकपालं**

**ꣲवैष्ण॒वं त्रि॑कपा॒लं ꣲवा॑म॒नो व॒ही दक्षि॑णा ऽग्नीषो॒मीय॒-मेका॑दशकपालं॒**

**निर्व॑पतीन्द्रासो॒मीय॒-मेका॑दशकपालꣳ सौ॒म्यं च॒रुं ब॒भ्रुर्दक्षि॑णा**

**सोमापौ॒ष्णं च॒रुं निर्व॑पत्यैन्द्रापौ॒ष्णं च॒रुं पौ॒ष्णं च॒रुᳪ श्या॒मो दक्षि॑णा**

**वैश्वान॒रं द्वाद॑शकपालं॒ नि ( ) र्व॑पति॒ हिर॑ण्यं॒ दक्षि॑णा वारु॒णं ꣲय॑व॒मयं॑**

**च॒रुमश्वो॒दक्षि॑णा । 14 (वै॒श्वा॒न॒रं द्वाद॑शकपालं॒ नि॒-रष्टौ च॑) (अ8)**

**तै॰सं॰ 1.8.9.1**

**बा॒र्.ह॒स्प॒त्यं च॒रुं निर्व॑पति ब्र॒ह्मणो॑ गृ॒हे शि॑तिपृ॒ष्ठो दक्षि॑णै॒न्द्रमेका॑दशकपालꣳ राज॒न्य॑स्य गृ॒ह ऋ॑ष॒भो दक्षि॑णाऽऽदि॒त्यं च॒रुं महि॑ष्यै**

**प्रथमकाण्डे - अष्टमः प्रश्न:**

**182**

**गृ॒हे धे॒नुर्दक्षि॑णानैर्.ऋ॒तं च॒रुं प॑रिवृ॒क्त्यै॑ गृ॒हे कृ॒ष्णानां᳚ ꣲव्रीही॒णां**

**न॒खनि॑र्भिन्नं कृ॒ष्णा कू॒टा दक्षि॑णा ऽऽग्ने॒यम॒ष्टाक॑पालꣳ सेना॒न्यो॑ गृ॒हे**

**हिर॑ण्यं॒ दक्षि॑णा वारु॒णं दश॑कपालꣳ सू॒तस्य॑ गृ॒हे म॒हानि॑रष्टो॒ दक्षि॑णा**

**मारु॒तꣳ स॒प्तक॑पालं ग्राम॒ण्यो॑ गृ॒हे पृश्नि॒र्दक्षि॑णा**

**सावि॒त्रं द्वाद॑शकपालं - [ ] 15**

**तै॰सं॰ 1.8.9.2**

**क्ष॒त्तुर्गृ॒ह उ॑पद्ध्व॒स्तो दक्षि॑णाऽऽश्वि॒नं द्वि॑कपा॒लꣳसं॑ग्रही॒तुर्गृ॒हे स॑वा॒त्यौ॑**

**दक्षि॑णा पौ॒ष्णं च॒रुं भा॑गदु॒घस्य॑ गृ॒हे श्या॒मो दक्षि॑णा रौ॒द्रं गा॑वीधु॒कं**

**च॒रुम॑क्षावा॒पस्य॑ गृ॒हे श॒बल॒ उद्वा॑रो॒ दक्षि॒णेन्द्रा॑य सु॒त्राम्णे॑ पुरो॒डाश॒-**

**मेका॑दशकपालं॒ प्रति॒ निर्व॑प॒तीन्द्रा॑याꣳहो॒मुचे॒ ऽयं नो॒ राजा॑ वृत्र॒हा**

**राजा॑ भू॒त्वा वृ॒त्रं ꣲव॑द्ध्यान् मैत्राबार्.हस्प॒त्यं भ॑वति श्वे॒तायै᳚**

**श्वे॒तव॑थ्सायै दु॒ग्धे स्व॑यं मू॒र्ते स्व॑यंमथि॒त आज्य॒ आश्व॑त्थे॒ - [ ] 16**

**तै॰सं॰ 1.8.9.3**

**पात्रे॒ चतुः॑ स्रक्तौ स्वयमवप॒न्नायै॒ शाखा॑यै क॒र्णाᳪश्चाक॑र्णाᳪश्च**

**तण्डु॒लान् विचि॑नुया॒द्ये क॒र्णाः स प॑यसि बार्.हस्प॒त्यो येऽक॑र्णाः॒**

**प्रथमकाण्डे - अष्टमः प्रश्न:**

**183**

**स आज्ये॑ मै॒त्रः स्व॑यं कृ॒ता वेदि॑र्भवति स्वयंदि॒नं ब॒र्.हिः स्व॑यं**

**कृ॒त इ॒द्ध्मः सैव श्वे॒ता श्वे॒तव॑थ्सा॒ दक्षि॑णा ॥ 17**

**(सावि॒त्रं द्वाद॑शकपाल॒-माश्व॑त्थे॒ त्रय॑स्त्रिꣳशच्च) (अ9)**

**तै॰सं॰ 1.8.10.1**

**अ॒ग्नये॑ गृ॒हप॑तये पुरो॒डाश॑म॒ष्टाक॑पालं॒ निर्व॑पति कृ॒ष्णानां᳚ व्रीही॒णाꣳ**

**सोमा॑य॒ वन॒स्पत॑ये श्यामा॒कं च॒रुꣳ स॑वि॒त्रे स॒त्यप्र॑सवाय पुरो॒डाशं॒**

**द्वाद॑शकपालमाशू॒नां ꣲव्री॑ही॒णाꣳ रु॒द्राय॑ पशु॒पत॑ये गावीधु॒कं च॒रुं**

**बृह॒स्पत॑ये वा॒चस्पत॑ये नैवा॒रं च॒रुमिन्द्रा॑य ज्ये॒ष्टाय॑ पुरो॒डाश॒-**

**मेका॑दशकपालं म॒हाव्री॑हीणां मि॒त्राय॑ स॒त्याया॒ ऽऽम्बानां᳚ च॒रुं**

**ꣲवरु॑णाय॒ धर्म॑पतये यव॒मयं॑ च॒रुꣳ स॑वि॒ता त्वा᳚ प्रस॒वाना॑ꣳ**

**सुवताम॒ग्नि र्गृ॒हप॑तीना॒ꣳ सोमो॒ वन॒स्पती॑नाꣳ रु॒द्रः प॑शू॒नां- [ ] 18**

**तै॰सं॰ 1.8.10.2**

**बृह॒स्पति॑ र्वा॒चामिन्द्रो᳚ ज्ये॒ष्ठानां᳚ मि॒त्रः स॒त्यानां॒ ꣲवरु॑णो॒**

**धर्म॑पतीनां॒ ꣲये दे॑वा देव॒सुवः॒ स्थ त इ॒ममा॑मुष्याय॒णम॑नमि॒त्राय॑**

**सुवद्ध्वं मह॒ते क्ष॒त्राय॑ मह॒त आधि॑पत्याय मह॒ते जान॑राज्यायै॒ष वो॑**

**प्रथमकाण्डे - अष्टमः प्रश्न:**

**184**

**भरता॒ राजा॒ सोमो॒ऽस्माकं॑ ब्राह्म॒णाना॒ꣳ राजा॒प्रति॒त्यन्नाम॑**

**रा॒ज्यम॑धायि॒ स्वां त॒नुवं॒ ꣲवरु॑णो अशिश्रे॒च्छुचे᳚र्मि॒त्रस्य॒**

**व्रत्या॑ अभू॒माम॑न्महि मह॒त ऋ॒तस्य॒ नाम॒ सर्वे॒ व्राता॒ ( )**

**वरु॑णस्याभूव॒न्वि मि॒त्र एवै॒ररा॑तिमतारी॒दसू॑षुदन्त य॒ज्ञिया॑ ऋ॒तेन॒**

**व्यु॑ त्रि॒तो ज॑रि॒माणं॑ न आन॒ड् विष्णोः॒ क्रमो॑ऽसि॒ विष्णाे᳚ः**

**क्रा॒न्तम॑सि॒ विष्णो॒र्विक्रा᳚न्तमसि ॥ 19**

**(प॒शू॒नां-ꣲव्राताः॒-पञ्च॑विꣳशतिश्च) (अ10)**

**तै॰सं॰ 1.8.11.1**

**अ॒र्थेतः॑ स्था॒ऽपां पति॑रसि॒ वृषा᳚स्यू॒र्मि र्वृ॑षसे॒नो॑ऽसि व्रज॒क्षितः॑ स्थ**

**म॒रुता॒मोजः॑ स्थ॒ सूर्य॑वर्चसः स्थ॒ सूर्य॑त्वचसः स्थ॒ मान्दाः᳚ स्थ॒**

**वाशाः᳚ स्थ॒ शक्व॑रीः स्थ विश्व॒भृतः॑ स्थ जन॒भृतः॑ स्था॒**

**ऽग्नेस्ते॑ज॒स्याः᳚ स्था॒ ऽपामोष॑धीना॒ꣳ रसः॑ स्था॒ऽपो**

**दे॒वीर्मधु॑मतीरगृह्ण॒न्नूर्ज॑स्वती राज॒सूया॑य॒ चिता॑नाः ।**

**याभि॑ र्मि॒त्रावरु॑णाव॒-भ्यषि॑ञ्च॒न् याभि॒रिन्द्र॒मन॑य॒न्नत्य ( ) रा॑तीः ॥**

**प्रथमकाण्डे - अष्टमः प्रश्न:**

**185**

**रा॒ष्ट्र॒दाः स्थ॑ रा॒ष्ट्रं द॑त्त॒ स्वाहा॑ राष्ट्र॒दाः स्थ॑ रा॒ष्ट्रम॒मुष्मै॑ दत्त ॥ 20**

**(अत्ये-का॑दश च) (अ11)**

**तै॰सं॰ 1.8.12.1**

**देवी॑रापः॒ सं मधु॑मती॒र्मधु॑मतीभिः सृज्यद्ध्वं॒ महि॒ वर्चः॑ क्ष॒त्रिया॑य**

**वन्वा॒ना अना॑धृष्टाः सीद॒तोर्ज॑स्वती॒र्महि॒ वर्चः॑ क्ष॒त्रिया॑य॒**

**दध॑ती॒रनि॑भृष्टमसि वा॒चो बन्धु॑स्तपो॒जाः सोम॑स्य दा॒त्रम॑सिशु॒क्रा वः॑**

**शु॒क्रेणोत् पु॑नामि च॒न्द्राश्च॒न्द्रेणा॒मृता॑ अ॒मृते॑न॒ स्वाहा॑ राज॒सूया॑य॒**

**चिता॑नाः ॥**

**स॒ध॒मादो᳚ द्यु॒म्निनी॒रूर्ज॑ ए॒ता अनि॑भृष्टा अप॒स्युवो॒ वसा॑नः ।**

**प॒स्त्या॑सु चक्रे॒ वरु॑णः स॒धस्थ॑म॒पाꣳ शिशु॑ - [ ] 21**

**तै॰सं॰ 1.8.12.2**

**र्मा॒तृत॑-मास्व॒न्तः ॥**

**क्ष॒त्रस्योल्ब॑मसि क्ष॒त्रस्य॒ योनि॑र॒स्यावि॑न्नो अ॒ग्नि र्गृ॒हप॑ति॒रावि॑न्न॒ इन्द्रो॑**

**वृ॒द्धश्र॑वा॒ आवि॑न्नः पू॒षा वि॒श्ववे॑दा॒ आवि॑न्नौ मि॒त्रावरु॑णा**

**वृता॒वृधा॒वावि॑न्ने॒ द्यावा॑पृथि॒वी धृ॒तव्र॑ते॒ आवि॑न्ना**

**प्रथमकाण्डे - अष्टमः प्रश्न:**

**186**

**दे॒व्य-दि॑ति र्विश्वरू॒प्यावि॑न्नो॒ ऽयम॒सावा॑मुष्याय॒णो᳚ऽस्यां ꣲवि॒श्य॑स्मिन्**

**रा॒ष्ट्रे म॑ह॒ते क्ष॒त्राय॑ मह॒त आधि॑पत्याय मह॒ते जान॑राज्यायै॒ष वो॑ भरता॒**

**राजा॒ सोमो॒ऽस्माकं॑ ब्राह्म॒णाना॒ꣳ राजेन्द्र॑स्य॒ - [ ] 22**

**तै॰सं॰ 1.8.12.3**

**वज्रो॑ऽसि॒ वार्त्र॑घ्न॒स्त्वया॒ यं ꣲवृ॒त्रं ꣲव॑द्ध्याच्छत्रु॒बाध॑नाः स्थपा॒त मा᳚**

**प्र॒त्यञ्चं॑ पा॒त मा॑ ति॒र्यञ्च॑म॒न्वञ्चं॑ मा पात दि॒ग्भ्यो मा॑ पात॒ विश्वा᳚भ्यो**

**मा ना॒ष्ट्राभ्यः॑ पात॒ हिर॑ण्यवर्णा-वु॒षसां᳚ विरो॒केऽयः॑ स्थूणा॒-वुदि॑तौ॒**

**सूर्य॒स्याऽऽ रो॑हतं ꣲवरुण मित्र॒ गर्तं॒ तत॑श्चक्षाथा॒मदि॑तिं॒ दितिं॑ च ॥ 23**

**(शिशु॒-रिन्द्र॒स्यै-क॑चत्वारिꣳशच्च) (अ12)**

**तै॰सं॰ 1.8.13.1**

**स॒मिध॒मा ति॑ष्ठ गाय॒त्री त्वा॒ छन्द॑सामवतु त्रि॒वृथ्स्तोमो॑ रथन्त॒रꣳ**

**सामा॒ग्निर्दे॒वता॒ ब्रह्म॒ द्रवि॑णमु॒ग्रामा ति॑ष्ठ त्रि॒ष्टुप् त्वा॒ छन्द॑सामवतु**

**पञ्चद॒शस्स्तोमो॑ बृ॒हथ्सामेन्द्रो॑ दे॒वता᳚ क्ष॒त्रं द्रवि॑णं ꣲवि॒राज॒मा ति॑ष्ठ॒**

**जग॑ती त्वा॒ छन्द॑सामवतु सप्तद॒शस्स्तोमो॑ वैरू॒पꣳ साम॑ म॒रुतो॑**

**दे॒वता॒ विड् द्रवि॑ण॒-मुदी॑ची॒मा-ति॑ष्ठानु॒ष्टुप् त्वा॒ - [ ] 24**

**प्रथमकाण्डे - अष्टमः प्रश्न:**

**187**

**तै॰सं॰ 1.8.13.2**

**छन्द॑सामवत्वेकवि॒ꣳशः स्तोमो॑ वैरा॒जꣳ साम॑ मि॒त्रावरु॑णौ**

**दे॒वता॒ बलं॒ द्रवि॑ण-मू॒र्द्ध्वामा ति॑ष्ठ प॒ङ्क्तिस्त्वा॒ छन्द॑सामवतु**

**त्रिणवत्रयस्त्रि॒ꣳशौ स्तोमौ॑ शाक्वररैव॒ते साम॑नी॒ बृह॒स्पति॑र्दे॒वता॒ वर्चो॒**

**द्रवि॑ण-मी॒दृङ् चा᳚न्या॒दृङ् चै॑ता॒दृङ् च॑ प्रति॒दृङ् च॑ मि॒तश्च॒ संमि॑तश्च॒**

**सभ॑राः ।**

**शु॒क्रज्यो॑तिश्च चि॒त्रज्यो॑तिश्च स॒त्यज्यो॑तिश्च॒ ज्योति॑ष्माᳪश्च**

**स॒त्यश्च॑र्त॒पाश्चा - [ ] 25**

**तै॰सं॰ 1.8.13.3**

**ऽत्य॑ꣳ हाः ।**

**अ॒ग्नये॒ स्वाहा॒ सोमा॑य॒ स्वाहा॑ सवि॒त्रे स्वाहा॒ सर॑स्वत्यै॒ स्वाहा॑ पू॒ष्णे**

**स्वाहा॒ बृह॒स्पत॑ये॒ स्वाहेन्द्रा॑य॒ स्वाहा॒ घोषा॑य॒ स्वाहा॒ श्लोका॑य॒ स्वाहा**

**ऽꣳशा॑य॒ स्वाहा॒ भगा॑य॒ स्वाहा॒ क्षेत्र॑स्य॒ पत॑ये॒ स्वाहा॑**

**पृथि॒व्यै स्वाहा॒ ऽन्तरि॑क्षाय॒ स्वाहा॑ दि॒वे स्वाहा॒ सूर्या॑य॒ स्वाहा॑**

**च॒न्द्रम॑से॒ स्वाहा॒ नक्ष॑त्रेभ्यः॒ स्वाहा॒ ऽद्भ्यः स्वाहौष॑धीभ्यः॒ स्वाहा॒**

**प्रथमकाण्डे - अष्टमः प्रश्न:**

**188**

**वन॒स्पति॑भ्यः॒ स्वाहा॑ चराच॒रेभ्यः॒ स्वाहा॑ परिप्ल॒वेभ्यः॒ स्वाहा॑**

**सरीसृ॒पेभ्यः॒ स्वाहा᳚ ॥ 26**

**(अ॒नु॒ष्टुप्त्व॑-र्त॒पाश्च॑ - सरीसृ॒पेभ्यः॒ स्वाहा᳚) (अ13)**

**तै॰सं॰ 1.8.14.1**

**सोम॑स्य॒ त्विषि॑रसि॒ तवे॑व मे॒ त्विषि॑र्भूया-द॒मृत॑मसि मृ॒त्योर्मा॑ पाहि**

**दि॒द्योन्मा॑ पा॒ह्यवे᳚ष्टा दन्द॒शूका॒ निर॑स्तं॒ नमु॑चेः॒ शिरः॑ ॥**

**सोमो॒ राजा॒ वरु॑णो दे॒वा ध॑र्म॒सुव॑श्च॒ ये ।**

**ते ते॒ वाच॑ꣳ सुवन्तां॒ ते ते᳚ प्रा॒णꣳ सु॑वन्तां॒ ते ते॒ चक्षुः॑ सुवन्तां॒ ते ते॒**

**श्रोत्र॑ꣳ सुवन्ता॒ꣳ सोम॑स्य त्वा द्यु॒म्नेना॒भि षि॑ञ्चाम्य॒ग्ने - [ ] 27**

**तै॰सं॰ 1.8.14.2**

**स्तेज॑सा॒ सूर्य॑स्य॒ वर्च॒सेन्द्र॑स्येन्द्रि॒येण॑ मि॒त्रावरु॑णयोर्वी॒र्ये॑ण**

**म॒रुता॒मोज॑सा क्ष॒त्राणां᳚ क्ष॒त्रप॑तिर॒स्यति॑ दि॒वस्पा॑हि**

**स॒माव॑-वृत्रन्न-ध॒रागुदी॑-ची॒रहिं॑ बु॒द्ध्निय॒मनु॑ सं॒चर॑न्ती॒स्ताः**

**पर्व॑तस्य वृष॒भस्य॑ पृ॒ष्ठे नाव॑श्चरन्ति स्व॒सिच॑ इया॒नाः ॥**

**रुद्र॒ यत्ते॒ क्रयी॒ परं॒ नाम॒ तस्मै॑ हु॒तम॑सि य॒मेष्ट॑मसि ।**

**प्रथमकाण्डे - अष्टमः प्रश्न:**

**189**

**प्रजा॑पते॒ न त्वदे॒तान्य॒न्यो विश्वा॑ जा॒तानि॒ परि॒ ता ( ) ब॑भूव ।**

**यत्का॑मास्ते जुहु॒मस्तन्नो॑ अस्तु व॒यᳪ स्या॑म॒ पत॑यो रयी॒णाम् ॥ 28**

**(अ॒ग्ने-स्तै-का॑दश च) (अ14)**

**तै॰सं॰ 1.8.15.1**

**इन्द्र॑स्य॒ वज्रो॑ऽसि॒ वार्त्र॑घ्न॒स्त्वया॒ऽयं ꣲवृ॒त्रं ꣲव॑द्ध्यान्**

**मि॒त्रावरु॑णयोस्त्वा प्रशा॒स्त्रोः प्र॒शिषा॑ युनज्मि य॒ज्ञस्य॒ योगे॑न॒**

**विष्णोः॒ क्रमो॑ऽसि॒ विष्णोः᳚ क्रा॒न्तम॑सि॒ विष्णो॒र्विक्रा᳚न्तमसि म॒रुतां᳚**

**प्रस॒वे जे॑षमा॒प्तं मनः॒ सम॒हमि॑न्द्रि॒येण॑ वी॒र्ये॑ण पशू॒नां म॒न्युर॑सि॒ तवे॑व**

**मे म॒न्युर्भू॑या॒न्नमो॑ मा॒त्रे पृ॑थि॒व्यै माहं मा॒तरं॑ पृथि॒वीꣳ**

**हि॑ꣳसिषं॒ मा - [ ] 29**

**तै॰सं॰ 1.8.15.2**

**मां मा॒ता पृ॑थि॒वी हि॑ꣳसी॒-दिय॑द॒स्या-यु॑र॒स्यायु॑र्मे धे॒ह्यूर्ग॒स्यूर्जं॑ मे**

**धेहि॒ युङ्ङ॑सि॒ वर्चो॑ऽसि॒ वर्चो॒ मयि॑ धेह्य॒ग्नये॑ गृ॒हप॑तये॒ स्वाहा॒ सोमा॑य॒**

**वन॒स्पत॑ये॒ स्वाहेन्द्र॑स्य॒ बला॑य॒ स्वाहा॑ म॒रुता॒मोज॑से॒ स्वाहा॑ ह॒ꣳसः**

**शु॑चि॒षद् वसु॑रन्तरिक्ष॒-सद्धोता॑ वेदि॒षदति॑थि र्दुरोण॒सत् ।**

**प्रथमकाण्डे - अष्टमः प्रश्न:**

**190**

**नृ॒षद् व॑र॒सदृ॑त॒सद् व्यो॑म॒सद॒ब्जा गो॒जा ऋ॑त॒जा ( )**

**अ॑द्रि॒जा ऋ॒तं-बृ॒हत् ॥ 30**

**(हि॒ꣳसि॒षं॒ म-र्त॒जा-स्त्रीणि॑ च) (अ15)**

**तै॰सं॰ 1.8.16.1**

**मि॒त्रो॑ऽसि॒ वरु॑णोऽसि॒ सम॒हं ꣲवि॒श्वै᳚र्दे॒वैः क्ष॒त्रस्य॒ नाभि॑रसि क्ष॒त्रस्य॒**

**योनि॑रसि स्यो॒नामा सी॑द सु॒षदा॒मा सी॑द॒ मा त्वा॑ हिꣳ सी॒न्मा मा॑**

**हिꣳसी॒न्नि ष॑साद धृ॒तव्र॑तो॒ वरु॑णः प॒स्त्या᳚स्वा साम्रा᳚ज्याय सु॒क्रतु॒**

**र्ब्रह्मा(3) न्त्वꣳ रा॑जन् ब्र॒ह्माऽसि॑ सवि॒ताऽसि॑ स॒त्यस॑वो॒ ब्रह्मा(3)न्**

**त्वꣳ रा॑जन् ब्र॒ह्माऽसीन्द्रो॑ऽसि स॒त्यौजा॒ - [ ] 31**

**तै॰सं॰ 1.8.16.2**

**ब्रह्मा(3)न् त्वꣳ रा॑जन् ब्र॒ह्माऽसि॑ मि॒त्रो॑ऽसि सु॒शेवो॒ ब्रह्मा(3)न् त्वꣳ**

**रा॑जन् ब्र॒ह्माऽसि॒ वरु॑णोऽसि स॒त्यध॒र्मेन्द्र॑स्य॒ वज्रो॑ऽसि॒ वार्त्र॑घ्न॒स्तेन॑**

**मे रद्ध्य॒ दिशो॒ऽभ्य॑यꣳ राजा॑ऽभू॒थ् सुश्लो॒काँ(4) सुम॑ङ्ग॒लाँ(4)**

**सत्य॑रा॒जा(3)न् ।**

**प्रथमकाण्डे - अष्टमः प्रश्न:**

**191**

**अ॒पां नप्त्रे॒ स्वाहो॒ र्जो नप्त्रे॒ स्वाहा॒ऽग्नये॑ गृ॒हप॑तये॒ स्वाहा᳚ ॥ 32**

**(स॒त्यौजा᳚-श्चत्वारि॒ꣳशच्च॑)(अ16)**

**तै॰सं॰ 1.8.17.1**

**आ॒ग्ने॒यम॒ष्टाक॑पालं॒ निर्व॑पति॒ हिर॑ण्यं॒ दक्षि॑णा सारस्व॒तं च॒रुं**

**ꣲव॑थ्सत॒री दक्षि॑णा सावि॒त्रं द्वाद॑शकपाल-मुपद्ध्व॒स्तो दक्षि॑णा पौ॒ष्णं**

**च॒रुᳪ श्या॒मो दक्षि॑णा बार्.हस्प॒त्यं च॒रुꣳ शि॑तिपृ॒ष्ठो**

**दक्षि॑णै॒न्द्र-मेका॑दशकपालमृष॒भो दक्षि॑णा वारु॒णं दश॑कपालं**

**म॒हानि॑रष्टो॒ दक्षि॑णा सौ॒म्यं च॒रुं ब॒भ्रुर्दक्षि॑णा त्वा॒ष्ट्रम॒ष्टाक॑पालꣳ**

**शु॒ण्ठो दक्षि॑णा वैष्ण॒वं त्रि॑कपा॒लं वा॑म॒नो दक्षि॑णा ॥ 33**

**(आ॒ग्ने॒यꣳ हिर॑ण्यꣳ सारस्व॒तं-द्विच॑त्वारिꣳशत्) (अ17)**

**तै॰सं॰ 1.8.18.1**

**स॒द्यो दी᳚क्षयन्ति स॒द्यः सोमं॑ क्रीणन्ति पुण्डरिस्र॒जां प्रय॑च्छति**

**द॒शभि॑र्वथ्सत॒रैः सोमं॑ क्रीणाति दश॒पेयो॑ भवति श॒तं ब्रा᳚ह्म॒णाः**

**पि॑बन्ति सप्तद॒शᳪ स्तो॒त्रं भ॑वति प्राका॒शाव॑द्ध्व॒र्यवे॑ ददाति॒**

**स्रज॑मुद्गा॒त्रे रु॒क्मꣳ होत्रेऽश्वं॑ प्रस्तोतृप्रतिह॒र्तृभ्यां॒द्वाद॑श पष्ठौ॒ही र्ब्र॒ह्मणे॑**

**प्रथमकाण्डे - अष्टमः प्रश्न:**

**192**

**व॒शां मै᳚त्रावरु॒णाय॑र्.ष॒भं ब्रा᳚ह्मणाच्छ॒ꣳसिने॒ वास॑सी नेष्टापो॒तृभ्या॒ᳪ**

**स्थूरि॑ यवाचि॒तम॑च्छावा॒काया॑ न॒ड्वाह॑म॒ग्नीधे॑ भार्ग॒वो होता॑ भवति**

**श्राय॒न्तीयं॑ ब्रह्मसा॒मं भ॑वति वारव॒न्तीय॑ ( ) मग्निष्टोमसा॒मꣳ**

**सा॑रस्व॒तीर॒पो गृ॑ह्णाति ॥ 34**

**(बा॒र॒व॒न्तीयं॑ च॒त्वारि॑ च) (अ18)**

**तै॰सं॰ 1.8.19.1**

**आ॒ग्ने॒यम॒ष्टाक॑पालं॒ निर्व॑पति॒ हिर॑ण्यं॒ दक्षि॑णै॒न्द्र-मेका॑दशकपालमृष॒भो**

**दक्षि॑णा वैश्वदे॒वं च॒रुं पि॒शङ्गी॑ पष्ठौ॒ही दक्षि॑णामैत्रावरु॒णीमा॒मिक्षां᳚ ꣲव॒शा**

**दक्षि॑णा बार्.हस्प॒त्यं च॒रुꣳ शि॑तिपृ॒ष्ठो दक्षि॑णाऽऽदि॒त्यां म॒ल्.हां**

**ग॒र्भिणी॒मा ल॑भते मारु॒तीं पृश्निं॑ पष्ठौ॒हीम॒श्विभ्यां᳚ पू॒ष्णे पु॑रो॒डाशं॒**

**द्वाद॑शकपालं॒ निर्व॑पति॒ सर॑स्वते सत्य॒वाचे॑ च॒रुꣳ स॑वि॒त्रे स॒त्य**

**प्र॑सवाय पुरो॒डाशं॒ द्वाद॑शकपालं तिसृध॒न्वꣳ शु॑ष्कदृ॒ति र्दक्षि॑णा ॥ 35**

**(अ॒ग्ने॒यꣳ हिर॑ण्यमै॒द्रमृ॑ष॒भो वै᳚श्वदे॒वं पि॒शङ्गी॑**

**बार्.हस्प॒त्यꣳ-स॒प्तच॑त्वारिꣳशत्) (अ19)**

**प्रथमकाण्डे - अष्टमः प्रश्न:**

**193**

**तै॰सं॰ 1.8.20.1**

**आ॒ग्ने॒यम॒ष्टाक॑पालं॒ निर्व॑पति सौ॒म्यं च॒रुꣳ सा॑वि॒त्रं द्वाद॑शकपालं**

**बार्.हस्प॒त्यं च॒रुं त्वा॒ष्ट्रम॒ष्टाक॑पालं ꣲवैश्वान॒रं द्वाद॑शकपालं॒ दक्षि॑णो रथ**

**वाहनवा॒हो दक्षि॑णा सारस्व॒तं च॒रुं निर्व॑पति पौ॒ष्णं च॒रुं मै॒त्रं च॒रुं**

**ꣲवा॑रु॒णं च॒रुं क्षै᳚त्रप॒त्यं च॒रुमा॑दि॒त्यं च॒रुमुत्त॑रो रथवाहनवा॒हो**

**दक्षि॑णा ॥ 36**

**(आ॒ग्ने॒यꣳ सौ॒म्यं बा॑र्.हस्प॒त्यं-चतु॑स्त्रिꣳशत्) (अ20)**

**तै॰सं॰ 1.8.21.1**

**स्वा॒द्वीं त्वा᳚ स्वा॒दुना॑ ती॒व्रां ती॒व्रेणा॒मृता॑म॒मृते॑न सृ॒जामि॒ सꣳसोमे॑न॒**

**सोमो᳚ऽस्य॒श्विभ्यां᳚ पच्यस्व॒ सर॑स्वत्यै पच्य॒स्वेन्द्रा॑य सु॒त्राम्णे॑ पच्यस्व**

**पु॒नातु॑ ते परि॒स्रुत॒ꣳ सोम॒ꣳ सूर्य॑स्य दुहि॒ता ।**

**वारे॑ण॒ शश्व॑ता॒ तना᳚ ॥**

**वा॒युः पू॒तः प॒वित्रे॑ण प्र॒त्यङ् ख्सोमो॒ अति॑द्रुतः ।**

**इन्द्र॑स्य॒ युज्यः॒ सखा᳚ ॥**

**कु॒विद॒ङ्ग यव॑मन्तो॒ यवं॑ चि॒द्यथा॒ दान्त्य॑नुपू॒र्वं ꣲवि॒यूय॑ ।**

**प्रथमकाण्डे - अष्टमः प्रश्न:**

**194**

**इ॒हेहै॑षां कृणुत॒ भोज॑नानि॒ ( ) ये ब॒र्.हिषो॒ नमो॑वृक्तिं॒ न ज॒ग्मुः ॥**

**आ॒श्वि॒नं धू॒म्रमा ल॑भते सारस्व॒तं मे॒षमै॒न्द्रमृ॑ष॒भ-मै॒न्द्रमेका॑दशकपालं॒ निर्व॑पति सावि॒त्रं द्वाद॑शकपालं ꣲवारु॒णं दश॑ कपाल॒ꣳ**

**सोम॑प्रतीकाः पितरस्तृप्णुत॒ वड॑बा॒ दक्षि॑णा ॥ 37**

**(भोज॑नानि॒-षड्वि॑ꣳशतिश्च) (अ21)**

**तै॰सं॰ 1.8.22.1**

**अग्ना॑विष्णू॒ महि॒ तद्वां᳚ महि॒त्वं ꣲवी॒तं घृ॒तस्य॒ गुह्या॑नि॒ नाम॑ ।**

**दमे॑दमे स॒प्त रत्ना॒ दधा॑ना॒ प्रति॑ वां जि॒ह्वा घृ॒तमा च॑रण्येत् ॥**

**अग्ना॑विष्णू॒ महि॒ धाम॑ प्रि॒यं ꣲवां᳚ ꣲवी॒थो घृ॒तस्य॒ गुह्या॑ जुषा॒णा ।**

**दमे॑दमे सुष्टु॒तीर्वा॑वृधा॒ना प्रति॑ वां जि॒ह्वा घृ॒तमुच्च॑रण्येत् ॥**

**प्रणो॑ दे॒वी सर॑स्वती॒ वाजे॑भिर्वा॒जिनी॑वती ।**

**धी॒नाम॑वि॒त्र्य॑वतु ।**

**आ नो॑ दि॒वो बृ॑ह॒तः - [ ] 38**

**प्रथमकाण्डे - अष्टमः प्रश्न:**

**195**

**तै॰सं॰ 1.8.22.2**

**पर्व॑ता॒दा सर॑स्वती यज॒ता ग॑न्तु य॒ज्ञं ।**

**हवं॑ दे॒वी जु॑जुषा॒णा घृ॒ताची॑ श॒ग्मां नो॒ वाच॑मुश॒ती शृ॑णोतु ॥**

**बृह॑स्पते जु॒षस्व॑ नो ह॒व्यानि॑ विश्वदेव्य ।**

**रास्व॒ रत्ना॑नि दा॒शुषे᳚ ॥**

**ए॒वा पि॒त्रे वि॒श्वदे॑वाय॒ वृष्णे॑ य॒ज्ञैर्वि॑धेम॒ नम॑सा ह॒विर्भिः॑ ।**

**बृह॑स्पते सुप्र॒जा वी॒रव॑न्तो व॒यᳪ स्या॑म॒ पत॑यो रयी॒णां ॥**

**बृह॑स्पते॒ अति॒ यद॒र्यो अर्.हा᳚द् द्यु॒मद्वि॒भाति॒ (अर्.हा᳚द्यु॒मद्वि॒भाति॒)**

**क्रतु॑म॒ज्जने॑षु ।**

**यद्दी॒द-य॒च्छव॑स- [ ] 39**

**तै॰सं॰ 1.8.22.3**

**र्तप्रजात॒ तद॒स्मासु॒ द्रवि॑णं धेहि चि॒त्रं ।**

**आ नो॑ मित्रावरुणा घृ॒तैर्गव्यू॑तिमुक्षतं ।**

**मद्ध्वा॒ रजा॑ꣳसि सुक्रतू ॥**

**प्रबा॒हवा॑ सिसृतं जी॒वसे॑ न॒ आ नो॒ गव्यू॑ति मुक्षतं घृ॒तेन॑ ।**

**प्रथमकाण्डे - अष्टमः प्रश्न:**

**196**

**आ नो॒ जने᳚ श्रवयतं ꣲयुवाना श्रु॒तं मे॑ मित्रावरुणा॒ हवे॒मा ॥**

**अ॒ग्निं ꣲवः॑ पू॒र्व्यं गि॒रा दे॒वमी॑डे॒ वसू॑नां ।**

**स॒प॒र्यन्तः॑ पुरुप्रि॒यं मि॒त्रं न क्षे᳚त्र॒साध॑सं ॥**

**म॒क्षू दे॒वव॑तो॒ रथः॒ - [ ] 40**

**तै॰सं॰ 1.8.22.4**

**शूरो॑ वा पृ॒थ्सु कासु॑ चित् ।**

**दे॒वानां॒ ꣲय इन्मनो॒ यज॑मान॒ इय॑क्षत्य॒भीदय॑ज्वनो भुवत् ॥**

**न य॑जमान रिष्यसि॒ न सु॑न्वान॒ न दे॑वयो ॥**

**अस॒दत्र॑ सु॒वीर्य॑मु॒त त्यदा॒श्वश्वि॑यं ॥**

**नकि॒ष्टं कर्म॑णा नश॒न्न प्रयो॑ष॒न्न यो॑षति ॥**

**उप॑ क्षरन्ति॒ सिन्ध॑वो मयो॒भुव॑ ईजा॒नं च॑ य॒क्ष्यमा॑णं च धे॒नवः॑ ।**

**पृ॒णन्तं॑ च॒ पपु॑रिं च - [ ] 41**

**तै॰सं॰ 1.8.22.5**

**श्रव॒स्यवो॑ घृ॒तस्य॒ धारा॒ उप॑यन्ति वि॒श्वतः॑ ॥**

**सोमा॑रुद्रा॒ विवृ॑हतं॒ ꣲविषू॑ची॒ममी॑वा॒ या नो॒ गय॑मावि॒वेश॑ ।**

**प्रथमकाण्डे - अष्टमः प्रश्न:**

**197**

**आ॒रे बा॑धेथां॒ निर्.ऋ॑तिं परा॒चैः कृ॒तं चि॒देनः॒ प्रमु॑मुक्तम॒स्मत् ॥**

**सोमा॑रुद्रा यु॒वमे॒तान्य॒स्मे विश्वा॑ त॒नूषु॑ भेष॒जानि॑ धत्तं ।**

**अव॑स्यतं मु॒ञ्चतं॒ ꣲयन्नो॒ अस्ति॑ त॒नूषु॑ ब॒द्धं कृ॒तमेनो॑ अ॒स्मत् ॥**

**सोमा॑पूषणा॒ जन॑ना रयी॒णां जन॑ना दि॒वो जन॑ना ( ) पृथि॒व्याः ।**

**जा॒तौ विश्व॑स्य॒ भुव॑नस्य गो॒पौ दे॒वा अ॑कृण्वन्न॒मृत॑स्य॒ नाभिं᳚ ॥**

**इ॒मौ दे॒वौ जाय॑मानौ जुषन्ते॒मौ तमा॑ꣳसि गूहता॒मजु॑ष्टा ।**

**आ॒भ्यामिन्द्रः॑ प॒क्वमा॒मास्व॒न्तः सो॑मापू॒षभ्यां᳚ जनदु॒स्रिया॑सु ॥ 42**

**(बृ॒ह॒तः-शव॑सा॒-रथः॒-पपु॑रिं च-दि॒वो जन॑ना॒-पञ्च॑विꣳशतिश्च)**

**(अ22)**

**Prasna Korvai with starting Padams of 1 to 22 Anuvaakams :-**

**अनु॑मत्या-आग्ने॒य-मै᳚न्द्रा॒ग्नम॒ग्नये॒-सोमा॑य-प्रतिपू॒रुष-मै᳚न्द्राग्नंधा॒त्रेबा॑र्.हस्प॒त्य-म॒ग्नये॒-ऽर्थतो॒-देवीः᳚-स॒मिध॒ꣳ-सोम॒स्ये-न्द्र॑स्य**

**-मि॒त्र-आ᳚ग्ने॒यꣳ-स॒द्य-आ᳚ग्ने॒यꣳ-मा᳚ग्ने॒यᳪ-स्वा॒द्वीं त्वाऽग्ना॑विष्णू॒-द्वावि॑ꣳशतिः । )**

**प्रथमकाण्डे - अष्टमः प्रश्न:**

**198**

**Korvai with starting Padams of 1, 11, 21 Series of Panchaatis:-**

**(अनु॑मत्यै॒-यथाऽस॑ति॒-देवी॑रापो-मि॒त्रो॑ऽसि॒-शूरो॑ वा॒-**

**द्विच॑त्वारिꣳशत् ।)**

**First and Last Padam of Eighth Prasnam :-**

**(अनु॑मत्या-उ॒स्रिया॑सु ।)**

**Kanda Korvai with starting Padams of Eight Prasnas of Kandam 1 :-**

**(इ॒ष-आपो॑-दे॒वस्या-ऽऽ द॑दे-देवासु॒राः-सं त्वा॑-पाकय॒ज्ञमनु॑मत्यै ।)**

**॥ हरिः॑ ओं ॥**

**॥ कृष्ण यजुर्वेदीय तैत्तिरीय संहितायां प्रथमकाण्डे**

**अष्टमः प्रश्नः समाप्तः ॥**

**॥ इति प्रथमं काण्डं ॥**